रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 6 अंक 12, दिसम्बर 2022

http://www.kilol.co.in

मूल्य
खुदरा – 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्रिय बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

हर बच्चे में एक विशेष क्षमताएं व संभावनाएं होती है.वें हमारी कल्पनाओं से ऊपर सोच कर कुछ अलग कर सकते हैं.इसका अनुभव मैंने विगत दिनों राज्य स्तर पर आयोजित एक बाल दिवस के कार्यक्रम में किया है। बच्चों आपके कुछ मित्र ऐसे भी हैं जिनके पास कोई विशेष साधन या सुविधा नही है फिर भी वे अपनी लगन व प्रयास से विशेष सफलता प्राप्त किया है। ऐसे बच्चों को सिर्फ अवसर की आवश्यकता होती है आप अपने आसपास के उन बच्चों की क्षमताओं को पहचाने उनसे सीखें.एक दूसरे की मदद कर सीखने सिखाने में ही भलाई है।

अब ठंडी व आपकी परीक्षा का मौसम आ गया है.आप खूब खायें, खेलें व खूब पढ़ें, खूब बढ़ें.

अरे! और हाँ, किलोल को पढ़ना व अपनी रचना भेजना न भूलें.इसके लिए आप अपने शिक्षकों एवं परिवार के सदस्यों की सहायता जरूर लेवें.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला
मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

मेरा वतन 8

इस बार की दीवाली 10

ममता और दुलार है बेटी 12

मुझे सूरज की तरह चमकना है 14

पंचतंत्र की कहानी 16

मानवता के हित मानव बनना अच्छा है 18

अमरुद 20

केले का छिलका 21

अधूरी कहानी पूरी करो 22

बुद्धिमान तोता 22

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी 22

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 23

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 24

बीमार मुर्गी और बिल्ली 24

समय की कीमत 25

खट्टी इमली 26

अगर इरादे बुलंद हो 27

बेटी 28

दिल की बजाय दिमाग को शिक्षित करना 30

शमशान 33

मैं पटाखा 35

कुंडलिया अमित के 37

आओ इस दिवाली दिल में स्नेह के दीप जलाएं 38

प्रकाश पर्व दीपावली की बधाईयां 40

आओ मिलकर जीवन बचाएं 42

बकरी 44

एक धनुष एक बाण 45
पढ़ें विज्ञान 47
सीखें गणित 49
डेंगू बुखार का महाकोप 51
हमारे ऊपर बुजुर्गों का साया है 53
लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल 55
चिड़िया 58
आता है क्रिसमस 59
डंढ हवा बहने लगा 61
आ गया देखो जाड़ा 63
त्यौहार का उपहार 65
शाकाहारी मनुष्यः दीर्घायुः भवति 66
रजाई 68
चूहे की सामत आई 69
बकरी 71
मुस्कान में मिठास की परछाई है 73
गुल्लक - सीख 75
दुखी न हों 77
मुखड़ा 80
आम की चोरी 82
शीत ऋतु 87
बिट्टू की सूझ बूझ 89
पुराना स्वेटर 90
पौधा हमर संगवारी 92
आर.टी.ई. 94
बिल्ली-मौसी 95
प्यारा तोता 96
बालदिवस 97

बाल पहेलियाँ 98
टेडी बियर 100
जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी 101
अम्मा अब तो सर्दी आई 103
हम जनता सबके मालिक हैं 105
पंछी बन जाएँ 107
देश में छूटी माँ का दर्द 108
वृक्ष लगाए 110
मैं खोजने बैठी हूँ 112
रुकना मना हैं 115
सप्ताह 117
जैविक घड़ी 118
जल ही अमृत है, जल ही औषधि है 120
पश्चात्ताप 122
राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस 123
बाल दिवस 126
मैना और मोर 128
हैप्पी क्रिसमस डे 129
प्यासी हिरणी 131
ठंड-ठंड ठंडी लगी 132
सूरज 134
झिलमिल-झिलमिल तारें 135
नल 136
जादुई पतंग 137
सीख 138
धन्य हो गुरुनानक देव जी 139
हाथी और भालू 141
टूनी और गुनगुन चिड़िया 142

बाल-दिवस 143
जलपरी और जादूगरनी 147
मै पढ़ूंगा लिखूंगा 148
चूँ-चूँ करती चिड़ियाँ आईं 149
दोस्त केकड़ा 150
हम तो छोटे-छोटे बच्चे हैं 151
सपनों की उड़ान 152
प्रतिज्ञा की प्रेरणा 153
मूर्ख बातूनी कछुआ 154
मेरी बिटिया रानी 156
नन्हे मुन्ने मेरे बच्चे 158
राजदुलारी हिंदी घनाक्षरी 160
अगर जलेबी होती सीधी 161
नाम कमाओ 162
मक्खी 163
तितली रानी 164
बंदर 165
दो मित्र 166
मयूर और मुर्गी 167
प्रभा के बालदिवस 168
शरद ऋतु 170
चंदा मामा 172
विपरीत परिस्थितियाँ अक्सर हमें नई दिशा की ओर धकेलती हैं 173
मेरी माँ 176
लालच के फल 177
साक्षरता दर बढ़ाएं हम 179
बया का घोंसला 181
बाल-कहानी 183

देने की खुशी 187

बालदिवस 188

विश्व दयालुता दिवस 190

मुन्ना एक कहानी लिख 193

बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है? 195

सीला बिनबो 198

पुस्तकें 199

बन कर चटनी जी 201

खरगोश और बंदर 202

चित्र देख कर कहानी लिखो 203

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 203

अनोखी दौड़ 203

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 205

भाखा जनऊला 206

मेरा वतन

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

सर्वधर्म से सराबोर मेरा प्यारा चमन है,
नमन है भारत माता को जो मेरा वतन है.

वसुधैव कुटुंबकम की भाव जग को सिखलाया,
विवेकानंद जैसा धर्मस्व लाल जब माता ने पाया.
ऋषि,मुनि,ज्ञानी,विज्ञानी से महकता मेरा चमन है,
नमन है भारत माता को जो मेरा वतन है.

साहस,शौर्य की गौरव गाते जिनका इतिहास,
राष्ट्रप्रेम पल-पल बढ़ता, होता कभी न ह्रास.
देश द्रोहियों का जहाँ होता सदा दमन है,
नमन है भारत माता को जो मेरा वतन है.

सर्वधर्म समभाव का भाव जग में जगाया जिसने,
गौतम,गाँधी,नानक को गोद में बिठाया जिसने.
भारत माता के ये सब अनमोल रतन है,
नमन है भारत माता को जो मेरा वतन है.

इनकी रक्षा के खातिर, सरहद पे खड़े जवान,
देश की सेना की साहस,शौर्य के हैं पहचान.
इनकी निगरानी मे फलता-फूलता मेरा चमन है,
नमन है भारत माता को जो मेरा वतन है.

*****

इस बार की दीवाली

रचनाकार - प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

नरेश कक्षा आठवीं का छात्र था. उसकी दो बहनें थीं- जयंती और नंदनी. वह सबसे छोटा था. माँ-बाप खेती-किसानी करते थे. अल्प वर्षा के कारण इस साल फसल अच्छी नहीं हुई थी. वैसे भी घर की आर्थिक स्थिति पहले से खराब थी. जैसे-तैसे बस गुजर-बसर हो रहा था.

दीपावली का त्यौहार आया. दीपावली की पूरी तैयारी हो गयी थी. नरेश के बाबूजी रघु बच्चों के लिए नये कपड़े नहीं ले पाये थे. नरेश सबसे छोटा था. इसलिए सब के आँखों का तारा था. इस बात का नरेश घर में पूरा-पूरा फायदा उठाता था. दीपावली की तैयारी में ही बहुत से पैसे खर्च हो चुके थे. नये कपड़े के लिए सोचना पड़ रहा था. रघु और उसकी पत्नी गीता मन ही मन सोच रहे थे कि थोड़ा-सा घर में धान रखा है; मंडी ले जाते हैं, वो बिक जाये तो बच्चों के लिये कपड़े भी आ जायेंगे. रघु मंडी की तरफ गया और नरेश खेलने के लिए अपने दोस्त विनय के घर चला गया. विनय ने नरेश को अपना नया कपड़ा, फुलझड़ी, और बहुत सारे पटाखे दिखाते हुए पूछा - "तुमने कौन-कौन से पटाखे खरीदे हैं ? नरेश,चलो न तुम्हारे घर.मुझे तुम्हारे भी नये कपड़े और पटाखे देखने है." नरेश झट से बोला - "आज शाम को मेरे बाबू जी नये कपड़े और पटाखे लायेंगे फिर तुम्हें दिखाऊँगा." विनय बोला- "ठीक है भाई, इस बार दोनों साथ में मिलकर दीपावली मनायेंगे."

नरेश को पता था कि घर की हालत अच्छी नहीं है. फिर भी रघु के पास गया और बोला- "बाबू, मुझे नये कपड़े चाहिये, विनय के पापा उसके लिए कपड़े और पटाखे भी ले आये हैं." रघु नरेश की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगा. उसकी बहनें भी देखने लगीं क्योंकि नरेश अलबेला भी था. वह मुँह बनाते हुए कह रहा था. जयंती और नंदनी दोनों बहनें घर की हालत समझती थीं. नंदनी को दीपावली के पहले ही खेल प्रतियोगिता में दो हजार रुपये मिले थे. नंदनी अपनी कॉपी में यह सोचकर दबा कर रखी थी कि दीपावली में नये कपड़े खरीदने के काम आएँगे. आज जब कॉपी ढूँढने लगी, तो वह कॉपी ही नहीं मिल रही थी. वह थोड़ी परेशान हो गयी थी. नरेश पूरे गाँव में घूम-घूम कर खेलता था. खेलते-खेलते अचानक देखा कि एक बुढ़िया बाजार में दीये बेचते-बेचते बेहोश हो गयी. नरेश, विनय और कुछ साथी उस बुढ़िया के पास गये और आवाज लगाई - "दाई , ओ दाई. फिर विनय ने बुढ़िया के मुँह पर पानी छिड़का.

तब जाकर उनको होश आया. बच्चे खुश हो गये. नरेश दूसरों की मदद के लिए हमेशा आगे आ जाता था. सभी बच्चे बोले कि अब दाई को होश आ गया. चलो घर चलते हैं. नरेश कुछ समय चुप रहा, फिर बोला- "तुम लोग जाओ, मैं आता हूँ."

विनय बोला- "क्यों...अब क्या हुआ ?"

नरेश ने कहा - मुझे उस दाई की मदद करनी है. चलो हम सब बैठकर दीये बेचते हैं." सभी दोस्त हँसने लगे. उसकी खिल्ली उड़ाने लगे- "अरे नरेश, तू पागल हो गया है क्या ऐसे बाजार में बैठ कर हम दीये बेचेंगे. ना बाबा ना. मेरे घर वाले मुझे देखेंगे तो मेरा धनिया बो देंगे. मैं जा रहा हूँ." कहते हुए विनय वहाँ से चला गया.

नरेश बुढ़िया के पास बैठ गया, और उसकी मदद करने लगा. सारे दीये बहुत ही जल्दी बिक गये. नरेश जा ही रहा था कि बूढ़िया ने नरेश का हाथ पकड़ा. बोली- "बेटा अपनी मेहनत की कमाई ले जा."

नरेश- "नहीं.....नहीं....माँ जी. मैं नहीं ले जा सकता."

बुढ़िया बोली- "घर में सिर्फ मैं बस रहती हूँ. मुझे इतने पैसे की जरूरत नहीं है बेटा. दीपावली का त्यौहार है. अपनी डोकरी दाई का ही आशीर्वाद समझ कर ले लो." नरेश के मन में लड्डू फूटा. फिर उसे पाँच सौ रुपये मिल गये. नरेश फूला नहीं समा रहा था. नरेश और रघु दोनों एक साथ ही घर पहुँचे. दोनों के चेहरे में अनोखी मुस्कान थी. नरेश की माँ पूछ बैठी कि क्या बात है भाई, बाप-बेटे के चेहरे में इतनी खुशी है. बाजार में खजाना मिल गया क्या..?" नरेश ने सभी को आपबीती सुनाई. रघु ने भी धान की बिक्री वाली बात बताई. सब बड़े खुश हुए, लेकिन नंदनी अभी भी परेशान थी. नरेश ने पूछा- "क्या हुआ दीदी, क्यों परेशान हो ?" नंदनी बोली- "मेरी नीले रंग की कॉपी नहीं मिल रही है." नरेश बोला- "ओ....! इतनी सी बात में परेशान हो रही हो. वो तो आलमारी में है." नंदनी झट से बोली- दिखा, दिखा कहाँ है?" नरेश बोला- "इतना क्यों कूद रहे हो? मैं देख रहा हूँ, इसमें क्या है ?" फिर बोला- "दीदी, ये कॉपी में तो कुछ नहीं है. बिल्कुल खाली है." नरेश की बातें सुनकर नंदनी के पैरों तले जमीन खिसक गयी. लेकिन नरेश मुँड़ी गड़िया कर दाँत दिखा रहा था, तो सब समझ गए कि नरेश मजाक कर रहा है. रघु ,नरेश और नंदनी तीनों ने अपने-अपने पैसे इकट्ठे किये. रघु के घर बूँद-बूँद में घड़ा भर ही गया. नए कपड़े, पटाखे, मिठाई व अन्य जरूरत के सामान खरीदे गये. खुशी-खुशी दीपावली मनाई गयी.

*****

ममता और दुलार है बेटी

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

माता की हमराज है बेटी
पिता का सरताज है बेटी

मर्यादा का आधार है बेटी
सृष्टि की कर्णधार है बेटी

सीता,राधा का रूप है बेटी
माँ का दूजा स्वरूप है बेटी

सुकोमल व नादान है बेटी
नारी की स्वाभिमान है बेटी

ममता और दुलार है बेटी
लक्ष्मी का अवतार है बेटी

संस्कृति व संस्कार है बेटी
अस्मिता का नाम है बेटी

दो-दो कुल की मान है बेटी
वात्सल्य की गान है बेटी

बागों की कलियाँ है बेटी
कोयल की कुहूक है बेटी

मत मारो कोख मे बेटी
कोख से पुकारती बेटी

*****

मुझे सूरज की तरह चमकना है

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

अभी तो नन्हा सा दीपक हूँ
मुझे चिरकाल तक जलना है;
सफर का शुरुआत किया हूँ
मुझे सूरज की तरह चमकना है.

अंधेरा हो दूर उजाला ऐसा करूँ
छोटी-छोटी खुशियों के लिए न मरूँ,
चिंगारी हूँ पावक सा दहकना है
मुझे सूरज की तरह चमकना है.

बहुत कुछ करना है जीवन में
नव जोश भरना है अब मन में,
बुझी आश,फिर भी दमकना है
मुझे सूरज की तरह चमकना है.

फूलों-सा मधुबन को महकाना
भंवरो सा पल-पल गुनगुनाना,
चमन में फूलो सा महकना है
मुझे सूरज की तरह चमकना है.

खुशियाँ मिले हजार हमें तब भी
जीवन मे हरपल त्यौहार तब भी,
किसी उन्माद में नहीं बहकना है
मुझे सूरज की तरह चमकना है.

*****

पंचतंत्र की कहानी

गाय और शेर

एक पहाड़ी के नीचे रामगढ़ नाम का एक गांव था. गांव के सारे जानवर हरी घास खाने के लिए सुबह उसी पहाड़ी के ऊपर बसे जंगल में जाते और शाम होते-होते घर वापस आ जाते थे.

हर दिन की तरह लक्ष्मी नाम की एक गाय अन्य गायों के साथ उसी पहाड़ी के जंगल में घास खाने के लिए गई थी. वह हरी घास खाने में इतनी ज़्यादा प्रसन्न थी कि वह कब एक शेर की गुफ़ा के पास पहुंच गई, उसे पता भी नहीं चला.

शेर अपनी गुफ़ा में सो रहा था और वह पिछले दो दिनों से भूखा भी था. जैसे ही लक्ष्मी शेर की गुफ़ा के पास पहुँची, गाय की खुशबू से शेर की नींद खुल गयी.

वह शेर धीरे-धीरे गुफ़ा से बाहर आया और गुफ़ा के बाहर गाय देखकर खुश हो गया. शेर ने मन ही मन सोचा कि आज उसकी दो दिनों की भूख मिट जाएगी. वह इस तंदुरुस्त गाय का ताज़ा मांस खाएगा और यह सोचकर उसने एक तेज़ दहाड़ लगायी.

लक्ष्मी शेर की दहाड़ सुनकर डर जाती है. जब वह अपने आस-पास देखती है, तो वहां दूर-दूर तक उसको कोई भी दूसरी गायें नहीं दिखीं.

जब वह हिम्मत करके पीछे मुड़ी, तो उसे सामने शेर खड़ा हुआ दिखाई दिया. उस शेर ने लक्ष्मी को देखकर फिर से दहाड़ लगायी है और लक्ष्मी से कहा, “मुझे दो दिनों से कोई शिकार नहीं मिल रहा था, मैं भूखा था. शायद इसलिए भगवान ने मेरा पेट भरने के लिए तुझे मेरे यहां पर भेजा है. आज मैं तुझे खाकर अपनी भूख मिटा लूंगा.”

शेर की बात सुनकर लक्ष्मी डर जाती है. वह रोते हुए शेर से कहती है “मुझे जाने दो, मुझे मत खाओ. मेरा एक छोटा बच्चा है, जो अभी सिर्फ मेरा ही दूध पीता है और उसे घास खाना अभी तक नहीं आया है.”

लक्ष्मी की बात सुनकर शेर हंसते हुए कहता है, “तो क्या मैं अपने हाथ में आए शिकार को ऐसे ही जाने दूं? मैं तो आज तुझे खाकर अपनी दो दिनों की भूख मिटाऊंगा.”

शेर के ऐसा कहने पर लक्ष्मी उसके सामने रोने लगी और विनती करते हुए कहती है कि “आज मुझे जाने दो. मैं आज अपने बछड़े को आखिरी बार दूध पिला दूंगी और उसे बहुत सारा प्यारा करके, कल सुबह होते ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी. फिर तुम मुझे खा लेना और अपना भूखा पेट भर लेना.”

शेर लक्ष्मी की यह बात मान जाता है और धमकी देते हुए कहता है कि, “अगर कल तू नहीं आई, तो मैं तेरे गांव आऊंगा, फिर तुझे और तेरे बेटे दोनों को खा जाऊंगा.”

लक्ष्मी शेर की यह बात सुनकर खुश हो जाती है और शेर को अपना वचन देकर गांव वापस चली जाती है. वहां से वह सीधे अपने बछड़े के पास जाती है. उसे दूध पिलाती है और बहुत सारा प्यार करती है. फिर बछड़े को शेर के साथ हुई सारी घटना बताती है और कहती है कि उसे अब अपना ख़्याल ख़ुद ही रखना होगा. वह कल सुबह होते ही अपना वचन पूरा करने के लिए शेर के पास चली जाएगी.

अपनी मां की बातें सुनकर बछड़ा रोने लगता है. दूसरे दिन सुबह होते ही लक्ष्मी जंगल की तरफ निकल जाती है और शेर की गुफ़ा के सामने पहुंचकर शेर से कहती है, “अपने वचन के अनुसार मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ. अब तुम मुझे खा सकते हो.”

गाय की आवाज़ सुनकर शेर अपनी गुफ़ा से बाहर निकलकर आता है और भगवान के अवतार में प्रकट होते हैं. वह लक्ष्मी से कहते हैं, “मैं तो बस तुम्हारी परीक्षा ले रहा था. तुम अपने वचन की पक्की हो. मैं इससे बहुत प्रसन्न हुआ. तुम अब अपने घर और बछड़े के पास वापस जा सकती हो.”

इसके बाद वे उस गाय को गौ माता होने का वरदान भी देते हैं और उसी दिन के बाद से सभी गायों को गौ माता कहना शुरू कर देते हैं.

*****

मानवता के हित मानव बनना अच्छा है

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

दानवता प्रतीक है हमारे कुविचारों का
प्रतीक है हमारे कर्म व कुसंस्कारों का
बनावटी संस्कारो को बदलना अच्छा है
मानवता के हित मानव बनना अच्छा है.

देश हित रक्षा हेतु जो चट्टान सा खड़ा हो
आन-बान के खातिर जो सबसे लड़ा हो
मर्यादा और स्वाभिमान में जो सच्चा है
मानवता के हित मानव बनना अच्छा है

स्त्री मर्यादा का जिसने मान-सम्मान रखा
सतित्व का जिसने जिंदा स्वाभिमान रखा
आत्म सम्मान के लिए मर मिटना अच्छा है
मानवता के हित मानव बनना अच्छा है

मानव हो तो मानवता का स्वभाव रखो

जीवन हित समाजिकता का भाव रखो

जनहित मे जीना और मरना अच्छा है

मानवता के हित मानव बनना अच्छा है

*****

अमरुद

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

अमरुद मीठा वाला,
खाता बन्दर लाला.

मिट्ठू जी भी खाते,
कच्चे-पक्के वाला.

विटामिन से भरपूर,
सेहत का रखवाला.

बच्चे घुस ना पाते,
बाग़ में लगा ताला.

हरा दिखे बाहर से,
भीतर लाल निराला.

*****

केले का छिलका

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

बन्दर ने पाया इक केला,
मीठा-मीठा था अलबेला.

उसने छिलका छीला दादू,
भीतर मिला स्वाद का जादू.

केला खाकर छिलका फेंका,
कहीं पास एक गधा रेंका.

फिर बन्दर चुपके से खिसका,
पैर पड़ा छिलके पे उसका.

फिसला बन्दर चोटें खाई,
उसको आई खूब रुलाई.

सबने उसको बात बताई
रखो सदा ही साफ सफाई.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

बुद्धिमान तोता

एक शिकारी ने राजा को दो तोते उपहार में दिए.

राजमहल में लाये जाने के बाद तोते सबके आकर्षण का केंद्र बन गए. उन्हें सोने के पिंजरे में रखवाया गया. हर समय सेवक उनके आगे-पीछे दौड़ते रहते. ना-ना प्रकार के ताज़े फ़ल उन्हें खिलाये जाते. राजा उनसे बहुत प्रेम करता था. राजकुमार भी सुबह-शाम उनके पास आकर खेला करता था. ऐसा जीवन पाकर दोनों तोते बहुत ख़ुश थे.

तोते को राजमहल का आनंदपूर्ण जीवन बहुत रास आ रहा था. लेकिन एक दिन सब बदल गया. वह शिकारी जिसने राजा को उपहार में तोते दिए थे, राजदरबार में फिर से आया. इस बार उसने एक काला बंदर राजा को उपहार में दिया.

अब काला बंदर राजमहल में सबके आकर्षण का केंद्र था. सारे सेवक उसकी देख-रेख में लग गए. उसके खाने-पीने का विशेष ख्याल रखा जाने लगा. तोतों के प्रति सबने ध्यान देना बंद कर दिया. यहाँ तक कि राजकुमार भी अब तोतों के स्थान पर बंदर के साथ खेलने लगा.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

यह सब घटना को देखकर छोटा तोता बहुत दु:खी था. वह बड़े तोता से कहा-"भाई इस काले बंदर ने ही हमारी खुशियाँ छीन ली है जिसके कारण अब हमें कोई प्यार भी नहीं करते. चलो पिंजरे से निकलकर कहीं दूर उड़ चले." बड़े तोता ज्यादा समझदार था वह प्यार से कहा-"सब्र रखो भाई, कुछ भी स्थाई नहीं रहता. परिवर्तन संसार का नियम है.जो कल हमारा था,वह आज किसी और का हो गया,परसों किसी और का हो जाएगा. आकर्षण-अनाकर्षण, निंदा-आलोचना, आदर व अनादर तो अस्थाई है. लोग जल्द ही बंदर की हरकतों से ऊब जाएंगे.तब

उन्हें हमारी सच्ची कीमत का एहसास होगा. वक्त बदलते देर नहीं लगता.ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इस दु:ख भरी समय को निकाल कर पुनः सुखी जीवन में परिवर्तन करें."

कुछ ही दिन बीते बंदर सबका प्रेम पाकर बन गया शरारती,उनका स्वभाव ही था उछल-कूद करना.उसने राजा के महल में बहुत उत्पात मचाया, सेवकों एवं आम नागरिकों को बहुत परेशान किया.उन्होंने राजकुमार को भी नहीं छोड़ा. उसे हमला कर घायल कर दिया. राजकुमार उसकी हरकत से पूरी तरह डर गया.पूरे राजमहल में राजकुमार के घायल होने की चर्चा होने लगी. तभी सैनिकों द्वारा राजा को बंदर की हरकतों का पता चला. उसने सैनिकों को उसे जंगल में छोड़ने का आदेश दिया गया .राजा के आदेशों का पालन कर बंदर को जंगल में छोड़ दिया गया.बंदर को अपने किए कर्म का फल भुगतना पड़ा.

ईधर तोते का दुःख की घड़ी समाप्त हो गई,पुनः सुख का आगमन हुआ. उस दिन के बाद से तोते फिर से महल में सबका आकर्षण का केंद्र बन गए.राजा के पुत्र राजकुमार भी उसे प्यार करने लग गए.अब छोटा तोता बहुत खुश था वह बड़े तोते से बोला- हमारे दिन फिर से वापस आ गए भाई.

तभी बड़ा तोता बोला- याद रखो मेरे भाई,समय कभी एक जैसा नहीं रहता इसलिए जब समय साथ न दे तो दु:खी नहीं होना चाहिए.बुरा समय है तो अच्छा समय भी आएगा.छोटे तोते ने बड़े तोते की बात समझ में आ गई और उसने तय किया कि बुरे वक्त में धैर्य से जीवन यापन करेगा.

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमने सिखा कि कोई भी चीज स्थाई नहीं रहता, समय के साथ हर चीज बदलती रहती है. इसलिए मुश्किल समय में धैर्य बनाकर रखें.इंसान की सच्ची कीमत कभी छिपी नहीं रहती वह हमेशा आदर पाते हैं.

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

यह देखकर छोटा तोता बहुत दु;खी था. वह बड़े तोते से बोला, “भाई, इस काले बंदर ने हमारी सारी ख़ुशियाँ छीन ली है. इसके कारण अब हमारी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता.”

बड़ा तोता बोला, “कुछ भी स्थायी नहीं रहता मेरे भाई.वक़्त बदलते देर नहीं लगती.”

कुछ दिन बीते.बंदर था तो शरारती. एक दिन उसने महल में बहुत उत्पात मचाया.सेवकों को बहुत तंग किया. राजकुमार भी उसकी हरक़त से डर गया. राजा को जब बंदर की करतूतों के विषय में पता चला, तो उसने उसे जंगल में छोड़ आने का आदेश दे दिया. आदेश का पालन कर बंदर को जंगल में छोड़ दिया गया.

उस दिन के बाद से तोते फिर से महल में सबके आकर्षण का केंद्र बन गए. अब छोटा तोता बहुत ख़ुश था. वह बड़े तोते से बोला, “हमारे दिन फिर से वापस आ गए भाई.”

बड़ा तोता बोला, “याद रखो मेरे भाई. समय कभी एक जैसा नहीं रहता. इसलिये जब समय साथ न दे, तो दु:खी नहीं होना चाहिए.बुरा समय है, तो अच्छा समय भी आयेगा.”

छोटे तोते को बड़े तोते की बात समझ में आ गई और उसने तय किया कि बुरे वक़्त में वह धैर्य बनाकर रखेगा.

शिक्षा -

कोई भी चीज़ स्थायी नहीं रहती. समय के साथ हर चीज़ बदलती है. इसलिए मुश्किल समय में धैर्य बनाकर रखें.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

बीमार मुर्गी और बिल्ली

एक दिन जब मुर्गी सोकर उठी तो उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं थी. वह बोली, "आज मैं स्वस्थ नहीं हूँ. इसलिए पूरे दिन आराम करेंगे." मुर्गी की बात पास से गुजर रही बिल्ली ने सुन ली.

हमेशा शिकार की खोज में रहने वाली बिल्ली ने मन ही मन कहा, यह बड़ा अच्छा मौका है. मैं हाल-चाल पूछने के बहाने मुर्गी से दोस्ती कर लेती हूँ. फिर उसे एक दिन विश्वास में लेकर मौका मिलते ही चट कर जाऊंगी.'

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

समय की कीमत

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

समय की कीमत है अनमोल,
कभी ना करना टालमटोल.

समय पे करना सारे काम,
तभी तो होगा जग में नाम.

देर करोगे पछताओगे,
वापस समय नहीं पाओगे.

सदा जो होते लेट लतीफ़,
देती समय उन्हें तकलीफ.

समय संग जो चलते भाई,
जीवन है उनका सुखदाई.

*****

खट्टी इमली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

खट्टी इमली धूम मचाती,
बच्चों का मन खूब लुभाती.

इमली की चटनी तुम खाओ,
चाट जायका खूब बढ़ाओ.

पानीपुरी मजे से खाओ,
इमली जल से स्वाद बढ़ाओ.

कच्ची इमली मन को भाती,
नमक संग वो खूब सुहाती.

सबक मुख में पानी लाती,
गरमी में जब इमली आती.

*****

अगर इरादे बुलंद हो

रचनाकार- अशोक पटेल "आशू", शिवरिनारायण

अगर इरादे बुलंद हो तो
नामुमकिन मुमकिन हो जाते हैं.
अगर हसरतें जवान हो तो
सारे फासले मिट जाते हैं.

कहते हैं समंदर बहुत गहरा है
पर गहराइयाँ नापने से किसने रोका है.
एक बार कोशिश करके तो देख
मोतियाँ पाने से किसने रोका है.

आसमान बहुत ऊंचा लगता है
पर एक पत्थर तबियत से उछाल के देख.
कौन कहता है मंज़िल बहुत दूर है
एक बार हौसले की उड़ान भरके तो देख.

*****

बेटी

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

सुनो समाज वालों
बेटी को न गर्भ में मारो
उसे इस जग में आने दो
अपनी खुशियां पाने दो

हर रिश्ते को सजाती हैं बेटियाँ
प्यार से उसे निभाती है बेटियाँ

ग़र लड़की न रहे जग में तो
वंश कहां से बढ़ाओगे
बेटे पाने की आस में हो पर
बहु कहाँ से लाओगे

इतनी इर्ष्या क्यों बेटी से
जन्म से पहले ही मार दिया

उनसे पूछो दर्द जिनको
प्रभु ने कोई संतान न दिया

जिनकी कोई संतान नहीं है
वह कितना दुख सहते हैं
ईश्वर हमें बेटी ही दे दो
झोली फैला कर कहते हैं

बेटियों को न अब तड़पाओ
उनको भी ख़ुशी से अपनाओ

बेटों के बराबर बेटी भी
मां बाप की सेवा करती है
कितना भी उसे धिक्कारो
फिर भी तुम ही पर मिटती है

बेटी की यू ना हत्या करो
तुम हत्यारे कहलाओगे
कैसे सामना करोगे ईश्वर का
जब पापी तुम बन जाओगे

सुनो समाज वालों
बेटी को न गर्भ में मारो
उसे इस जग में आने दो
अपनी खुशियां पाने दो.

*****

दिल की बजाय दिमाग को शिक्षित करना

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

मूल्य आधारित शिक्षाशास्त्र, अध्ययन सामग्री और कहानी सुनाने से बच्चों और समाज के दिमाग और दिल का समग्र विकास सुनिश्चित होगा. नैतिकता के बिना शिक्षा बिना कम्पास के जहाज की तरह है, जो कहीं भी भटक रहा है. एकाग्रता होना ही काफी नहीं है, लेकिन ध्यान केंद्रित करने के योग्य उद्देश्य अवश्य होने चाहिए. सत्य को जानना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें सत्य से प्रेम भी करना चाहिए और उसके लिए बलिदान देना चाहिए. दिल को शिक्षित करना सहानुभूति, करुणा, विविधता और मानवीय गरिमा के लिए सम्मान, प्रेम, भूमि के कानून के प्रति सम्मान आदि का प्रतीक है. इसके लिए दर्शन, नैतिकता, सामाजिक मूल्यों, सौंदर्य के ज्ञान के बारे में सीखना और उसकी सराहना करना आवश्यक होगा. कला, साहित्य, कविता और संगीत के क्षेत्र में. केवल ज्ञान विकसित करने से ही मानव रोबोट बनाने में मदद मिलेगी, न कि मनुष्य बनाने में.

शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास और समग्र रूप से समाज की उन्नति सुनिश्चित करने के लिए ज्ञान, कौशल, ज्ञान प्रदान करने की एक प्रक्रिया है. व्यक्तियों के दिमाग को शिक्षित करके, वे वैज्ञानिक स्वभाव, तर्कसंगतता और तीव्र बुद्धि विकसित करते हैं जो उन्हें कोई कार्य, दक्षता के साथ करने में सक्षम बनाता है. "किसी व्यक्ति को नैतिकता में नहीं बल्कि दिमाग में शिक्षित करना समाज के लिए एक खतरे को शिक्षित करना है" महात्मा गांधी द्वारा उपरोक्त कथन के पीछे के विचार को उपयुक्त रूप से दर्शाता है. शिक्षा बच्चे को एक पूर्ण वयस्क बनने के लिए बढ़ावा देती है. मूल्यों के संवर्धन और विकास के बिना केवल सीखना शिक्षा की परिभाषा को भी खारिज कर देता है. मूल्यों और सिद्धांतों की शिक्षा एक आत्मा को आकार देती है और ढालती है.

शिक्षा का गहरा अर्थ है, यह एक ऐसे सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है जो बाहरी दुनिया की जटिलताओं, मानवीय संबंधों और भावनाओं, बड़े पैमाने पर मानवता को समझने और उससे निपटने के लिए ईमानदार और आधुनिक बेहतर ढंग से सुसज्जित हो और समाज को बेहतर, सामंजस्यपूर्ण बनाने की प्रक्रिया में भाग लेने में सक्षम हो. केवल मन को शिक्षित करने का अर्थ है कि हम केवल अनुभूति का विकास कर सकते हैं. लेकिन, दिल को शिक्षित करना सहानुभूति, करुणा, विविधता और मानवीय गरिमा के लिए सम्मान, प्रेम, भूमि के कानून के

प्रति सम्मान आदि का प्रतीक है. इसके लिए दर्शन, नैतिकता, नैतिकता, सामाजिक मूल्यों, सौंदर्य के ज्ञान के बारे में सीखना और उसकी सराहना करना आवश्यक होगा. कला, साहित्य, कविता और संगीत के क्षेत्र में. केवल ज्ञान विकसित करने से ही मानव रोबोट बनाने में मदद मिलेगी, न कि मनुष्य.

हालांकि, केवल दिल को शिक्षित किए बिना मन को शिक्षित करना कई बार बेकार और प्रतिकूल हो सकता है. नैतिक मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों के समावेश से रहित शिक्षा मजबूत नैतिक चरित्र और व्यवहार के बिना बुद्धिजीवियों और विशेषज्ञों का निर्माण करती है. उदाहरण के लिए, घरेलू हिंसा की अमानवीय प्रथा भारतीय उपमहाद्वीप में अधिकांश शिक्षित लोगों के घरों में भी आम है. सभी छात्रों के लिए अकादमिक उत्कृष्टता हासिल करना किसी भी स्कूल के उद्देश्य के मूल में है, और वे जो करते हैं उसके बारे में बहुत कुछ सूचित करेंगे. चरित्र शिक्षा कोई नई बात नहीं है, इसका विस्तार अरस्तू के काम की तरह है. फिर भी यह तर्क दिया जा सकता है कि हाल के वर्षों में स्कूलों में सफलता की खोज ने गाड़ी को घोड़े के आगे रखने की मांग की है. छात्रों को केवल परीक्षा ग्रेड और विश्वविद्यालय स्थानों के संदर्भ में सफलता के बारे में सोचने के लिए, दबाव बनाया जाता है जो अक्सर छात्र की भलाई और शैक्षणिक प्रगति के प्रति सहज हो सकता है.

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई कितना शिक्षित या धनी है, अगर उसके अंतर्निहित चरित्र या व्यक्तित्व में नैतिकता का अभाव है. वास्तव में, ऐसे व्यक्तित्व शांतिपूर्ण समाज के लिए खतरा हो सकते हैं. जैसे: मुसोलिनी, हिटलर नैतिकता से रहित शिक्षा के सभी उदाहरण हैं जो मानव जाति को विनाश की ओर ले जा रहे हैं. समकालीन समय में भी यह उतना ही प्रासंगिक है. उदाहरण के लिए, दहेज लेने वाला एक शिक्षित व्यक्ति लैंगिक समानता और लैंगिक न्याय के लिए मौत का मंत्र होगा. गांधी जी के सात पाप तब साकार होंगे जब हम नैतिकता के बिना शिक्षित होंगे जैसे विज्ञान बिना मानवता के जैसा कि आज परमाणु हथियारों के मामले में है. इस प्रकार, मूल्यों के बिना शिक्षा जितनी उपयोगी लगती है, वह मनुष्य को एक चतुर शैतान बनाती है.

आतंकवाद, नक्सलवाद और कट्टरवाद की ताकतों की व्यापकता मजबूत दिमाग लेकिन कमजोर दिलों से संचालित होती है. अपेक्षाकृत कमजोर नैतिक चरित्र के साथ काम करने की क्षमता और कौशल वाले व्यक्ति आसानी से बुरी ताकतों से गुमराह हो जाते हैं. सीमा पार मानव तस्करी, नशीली दवाओं और जानवरों की तस्करी की अवैध प्रथाओं को बुद्धिमान लोग सुरक्षा बलों का भेष बदलकर अंजाम देते हैं. यह इन लोगों के दिलों में प्रेम, करुणा और सहानुभूति के मूल्यों की कमी को उजागर करता है. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साइबर अपराध और साइबर धोखाधड़ी करने के लिए डिजिटल स्पेस और प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग दर्शाता है कि बुनियादी नैतिक समझ की कमी वाले शिक्षित दिमाग मौजूद हैं. मानवता द्वारा जैव विविधता, पर्यावरण और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र का अंधाधुंध और हृदयहीन शोषण बिना अच्छे दिल के शिक्षा और कौशल का एक दुखद उदाहरण है. भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, सांप्रदायिकता आदि की प्रथाएं प्रशासकों और राजनीतिक वर्ग के बीच ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के सिद्धांतों की कमी को दर्शाती हैं.

दूसरों के बीच इन बुराइयों से लड़ने के लिए, हमें मन के साथ-साथ व्यक्तियों के दिल को भी शिक्षित करने की आवश्यकता है. व्यक्तियों के चरित्र का निर्माण करना अनिवार्य है क्योंकि 'चरित्र के बिना ज्ञान' सात गांधीवादी पापों में से एक है. कम उम्र में नैतिक मूल्यों को प्रदान करने के लिए जागरूक समाजीकरण के साथ-साथ मूल्य आधारित

शिक्षा, छात्रों और पेशेवरों का नैतिक प्रशिक्षण हमारे समाज में नैतिक आचरण सुनिश्चित करेगा. इसके लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को अक्षरश: लागू करने के साथ-साथ मूल्य आधारित शिक्षाशास्त्र, अध्ययन सामग्री और कहानी सुनाने के विकास से बच्चों और समाज के दिमाग और दिल का समग्र विकास सुनिश्चित होगा. नैतिकता के बिना शिक्षा बिना कम्पास के जहाज की तरह है, बस कहीं नहीं भटक रहा है. एकाग्रता की शक्ति का होना ही काफी नहीं है, लेकिन ध्यान केंद्रित करने के योग्य उद्देश्य अवश्य होने चाहिए. सत्य को जानना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें सत्य से प्रेम करना चाहिए और उसके लिए बलिदान देना चाहिए.

*****

शमशान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

श्मशान घाट का नाम सुनते ही एक खण्डहरनुमा वीरान स्थान, जलती चिता और राख की तस्वीर ही उभरती है. परंतु हमें किसी के कहे इन सुंदर वाक्य को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में याद रखने की जरूरत है कि शमशान तेरा हिसाब बड़ा ही नेक है, तेरे यहाँ अमीर हो या गरीब सब का बिस्तर एक है. मेरा मानना है कि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ सबको एक समान स्थिति का बोध होता है समाज के हर वर्ग के हर प्राणी को उसी चिता पर लिटाया जाता है. हालांकि प्रक्रिया रीति रिवाज मान्यताएँ हर वर्ग की अलग अलग हो सकती है क्योंकि रीति रिवाज की विभिन्नता से भारत अनेकता में एकता का भाव रखता है परंतु भेदभाव के भाव में महसूस होता है अभाव!! हम सब जीवन के करीब क़रीब हर स्तर पर, हर स्थिति में भेदभाव का भाव महसूस करते हैं. हर कोई अपनों को प्राथमिकता देता है बड़े नामचीन लोगों का साथ प्रतिष्ठा का एक प्रतीक माना जाता है, परंतु अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति से कोई मतलब पड़ने पर ही बात करना पसंद करता है. असल में श्मशान का बिस्तर ही एक ऐसा स्थान है जहाँ हर कोई रिक्शा वाले, रेहड़ी पटरी वाले और मजदूर से लेकर बड़े से बड़े उद्योगपति, ऑफिसर, नेता की देह को भी उसी बिस्तर पर ही प्रक्रिया कर अग्नि के सुपुर्द या सुपुर्द ए खाक किया जाता है जो सबसे बड़ी समानता का प्रतीक है.

बात अगर हम अंतिम संस्कार की करें तो, हिंदू धर्म में 16 संस्कारों में 16 वां संस्कार अंतिम संस्कार होता है. हिंदुओं में व्यक्ति की मृत्यु के बाद दाह संस्कार की रस्में निभाई जाती हैं. मृत व्यक्ति की शव यात्रा निकालने के बाद श्मशान घाट में देह को पंचतत्व में विलीन किया जाता है. अक्सर हमने देखा है कि अंतिम संस्कार में केवल पुरुष ही शामिल होते हैं, जबकि महिलाओं का श्मशान घाट में जाना वर्जित होता हैं. ऐसा क्यों होता है? इसके पीछे कुछ पौराणिक मान्यताएँ हैं.

बात अगर हम इंसान के बराबरी भाव की करें तो कहावत है कि ईश्वर की नजर में सब बराबर हैं, क्योंकि उसने सबको बराबर जो बनाया है. उसके लिए न कोई अमीर है, न गरीब. न कोई ऊँच, न नीच. न कोई छोटा, न बड़ा. लेकिन विडंबना यह है कि दिन-रात उससे याचना कर उसकी राह पर चलने का दावा करने वाले उसके बंदे, उसके भक्त ही सबको बराबरी की नजर से नहीं देखते, क्योंकि उनकी नजर, उनके मन, आचरण में भेदभाव होता है.इसी कारण वे सामने वाले को अपने से छोटा या बड़ा, ऊँचा या नीचा मानते हैं. और जो ऐसा करते हैं, वे अपने पास सब कुछ होने के बाद भी एक कमी सी, एक अभाव-सा महसूस करते हैं. वे यह समझ ही नहीं पाते कि यह अभाव अपने मन में बसी भेदभाव की भावना की वजह से है. जिस दिन वे इससे ऊपर उठ जाएँगे, उस दिन यह कमी खुद-ब-खुद दूर हो जाएगी. लेकिन समस्या यह है यह जानते हुए भी लोग इससे मुक्त नहीं हो पाते.

बात अगर हम मानवीय भाव में हर क्षेत्र में विभाजन की करें तो वर्तमान समय में श्मशान में भी सामाजिक विभाजन के एक भाव को आधुनिकता एवं अलग वैचारिक सामाजिक सोच के प्रभाव में आकर बदले जाने की कोशिश तेज हो गई है क्योंकि,भारत के सामाजिक ढांचे में इंसानियत का यह विभाजन जन्म के साथ शुरू होता है और मौत के बाद भी श्मशान घाट तक इंसान का पीछा करता है. भारतीय समाज अनेक जाति, धर्मों में तो बँटा रहा है, लेकिन यह बँटवारा श्मशान घाट में भी दिखाई देता है. एक राज्य में विभिन्न जातियों के लिए अलग अलग श्मशान की परंपरा रियासत काल' की विरासत है. उस राज्य में रियासत के दौर में अलग-अलग जातियों के शमशान घाट का चलन शुरू हुआ. यह आज भी जारी है. एक छोटे से शहर में लगभग 47 श्मशान घाट है जबकि जयपुर में इनकी तादाद 57 है. हर जाति का अपना अंतिम दाह-संस्कार स्थल हैं और उपजातियों ने भी अपने मोक्ष धाम बना लिए है.

बात अगर हम महिलाओं के श्मशान घाट पर वर्जित होने संबंधी मान्यताओं की करे तो, महिलाओं का मन कमजोर और कोमल होता है. श्मशान में जो दृश्य होते हैं उसको देखकर वह अपने आपको विलाप करने से नहीं रोक पाती हैं. जिससे मृत आत्मा को भी दुख होने लगता है. इस कारण से भी महिलाएँ श्मशान में नहीं जाती. ऐसा माना जाता है, श्मशान घाट पर हमेशा नकारात्मक ऊर्जा फैली होती है. महिलाओं के श्मशान घाट जाने पर नकारात्मक ऊर्जा आसानी से उनके शरीर प्रवेश कर सकती है क्योंकि स्त्रियाँ कोमल ह्रदय की मानी जाती है. साथ ही नकारात्मक ऊर्जा से उनके अंदर बीमारी फैलने की संभावना ज्यादा होती है. हिंदू मान्यताओं के अनुसार, अंतिम संस्कार में परिवार के पुरुषों को मुंडन करवाना पड़ता है, जबकि महिलाओं का मुंडन करना शुभ नहीं माना जाता है, इस वजह से महिलाओं को अंतिम संस्कार में शामिल नहीं किया जाता है. मान्यता है कि अंतिम संस्कार के दौरान घर में नकारात्मक शक्तियां हावी रहती हैं, इसलिए घर को सूना नहीं छोड़ना चाहिए, श्मशान घाट से लौटने के बाद पुरुष स्नान करने के बाद घर में प्रवेश करते हैं, तब तक महिलाओं को घर पर ही रहना पड़ता है.

बात अगर हम शवदाह संस्कार के बाद घर लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देनी देखने की मान्यता की करें तो, शवदाह संस्कार के बाद घर लौटते समय वापस पीछे मुड़कर देखने पर आत्मा का अपने परिवार के प्रति मोह टूट नहीं पाता है. दूसरी ओर पीछे मुड़कर देखने का मतलब यह भी होता है कि मृत व्यक्ति के प्रति हम में भी मोह बना हुआ है. इसलिए मोह से मुक्ति के लिए शवदाह संस्कार के बाद लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए. पुराणों में बताया गया है कि मृत्यु के बाद भी कुछ लोगों की आत्मा का अपने परिवार के सदस्यों के साथ मोह बना रहता है. आत्मा के मोहग्रस्त होने पर व्यक्ति की आत्मा अपने परिजनों के आस-पास भटकती रहती है. इस स्थिति में व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिल पाती है और उसे कष्ट भोगना पड़ता है. शव दाह संस्कार करके मृत व्यक्ति की आत्मा को यह संदेश दिया जाता है कि अब तुम्हारा जीवित लोगों से और तुम्हारे परिजनों से संबंध तोड़ने का समय आ गया है. मोह के बंधन से मुक्त होकर मुक्ति के लिए आगे बढ़ो.अंतिम संस्कार में वेद मंत्रों के साथ शव को अग्नि के हवाले कर दिया जाता है. शास्त्रों में बताया गया है कि अग्नि में भष्म होने के बाद शरीर जिन पंच तत्वों से बना है उन पंच तत्वों में जाकर वापस मिल जाता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करउसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे के शमशान-शव दाह संस्कार, शमशान तेरा हिसाब बड़ा ही नेक है-तेरे यहां अमीर हो या गरीब सब का बिस्तर एक है.सामाजिक ढांचे में इंसानियत का विभाजन जन्म के साथ शुरू होकर मौत के बाद शमशान में, समानता का भाव, सबका बिस्तर एक से महसूस होता है.

*****

मैं पटाखा

रचनाकार- व्यग्र पाण्डे, राजस्थान

यद्यपि मैं खुशियों का दाता
बच्चों को मैं ख़ूब भाता

दीपोत्सव जब भी आता
मैं बाजारों में सज जाता

मैं एक पर रूप अनेक
मुझे जलाकर देना फेंक

सावधानी से मेरा नाता
सदा शोरगुल मुझको भाता

मैं घूमूं चकरी बन प्यारा
अनार चले लगे फब्बारा

फुलझड़ी में खिलखिलाता
सूतली बम से धमकाता

मैं पटाखा ख़ुशियाँ बिखेरता हूँ
पर कभी-कभी जला भी देता हूँ

मुझसे मजाक पड़ जाती भारी
मीठी दिवाली हो जाती खारी

आओ बच्चो त्योहार मनायें
सावधानी से मुझे चलायें.

*****

कुंडलिया अमित के

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

भौंरा, बाँटी खेल हे, खो-खो, खुडवा सार.
फुगड़ी, फल्ली, फोदका, पित्तुल, नदी पहार.
पित्तुल, नदी, पहार, चकरबिल्लस, घरघुँदिया.
गिल्ली-डंडा डाँड़, परी पत्थर चढ़ चौंरा.
अटकन-बटकन खास, कबड्ड़ी, पचवा भौंरा.

खेलव जी घानीमुँदी, भटकउला, नुनपाट.
झन बिरान कोनो रहँय, सब ला सँघरा साँट.
सब ला सँघरा साँट, रेसटिप, चुरी पुकउला.
इब्भा, डंडाकोल, पूछलव चिटिक जनउला.
कहै अमित कविराज, रेंधिया बन झन पेलव.
खाँटी देशी खेल, सगा-पहुना मिल खेलव.

*****

आओ इस दिवाली दिल में स्नेह के दीप जलाएं

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

दीपावली दीपों का त्योहार है. दीप हमारे तन मन में नई आशा का संचार करते हैं. जलते हुए दीपक हमारे मन में यह विश्वास उत्पन्न करते हैं कि उम्मीद कभी हारा नहीं करती और अंधकार के बाद प्रकाश अवश्य आता है अर्थात जीवन में हार कर नहीं बैठना चाहिए क्योंकि हार के बाद जीत निश्चित है. यह प्रकृति का नियम है. असफलता शब्द में ही सफलता छुपी हुई है इस बात को हमें भूलना नहीं चाहिए और अपने सार्थक प्रयासों द्वारा सदैव मुश्किलों पर विजय पाने का सतत प्रयास करना चाहिए. जलते हुए दीये इस बात का द्योतक हैं कि जिस प्रकार एक दिया जल कर अपने आसपास प्रकाश फैलाता है और अंधकार का नाश करता है; उसी प्रकार हमें भी अपने आसपास के वातावरण में सकारात्मक तरंगों को फैलाना चाहिए और नकारात्मकता को दूर रखना चाहिए. इस प्रकार की मानसिकता जब पूरे समाज में व्याप्त होगी तभी हमारा समाज और धीरे-धीरे सारा विश्व उन्नति की राह पर अग्रसर होगा,उसकी राह में रोड़े बिछाने वाली नकारात्मक शक्तियाँ स्वत: समाप्त होने लगेंगी.

तो क्यों न इस दिवाली हम सभी मिलकर अपने मन के अंधकार को मिटाने का प्रयास करें और मन में आशाओं के दीप जलाएँ, अपने मन की कलुषता को खत्म करें,दूसरों के प्रति हमारे मन में जो भी दुर्भाव किसी वजह से समा गया है उसे हमेशा हमेशा के लिए दूर कर आपसी सौहार्द को बढ़ावा दें और संबंधों की अहमियत को समझते हुए एक दूसरे के साथ प्यार प्रेम से रिश्तों को बनाकर रखें. स्मरण रहे,व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है और व्यक्ति जब अपने सभी संबंधों और रिश्तों को मजबूत बनाने लगता है तभी एक मजबूत, समर्थ और सशक्त समाज का निर्माण भी होने लगता है .स्वस्थ,समर्थ,सशक्त नागरिक ही एक मजबूत राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाते हैं.

वैसे तो किसी भी अच्छे काम की शुरुआत किसी भी दिन से की जा सकती है,किंतु, दीवाली से सुंदर अवसर दूसरा कोई नहीं हो सकता जब हम अपने आप को बदलने का अपने आप से वादा करें और अपने भीतर की गंदगी को,अज्ञान रूपी अंधेरे को दूर करने के प्रयास करें. आपसी मतभेद और मनमुटाव अक्सर लोगों के बीच हो जाते हैं क्योंकि हम एक सभ्य समाज में रहते हैं और एक सभ्य समाज में बुद्धिजीवी वर्ग के बीच विचारों का मतभेद हो सकता है किंतु जब यह मतभेद तर्क वितर्क की श्रेणी से आगे बढ़कर कुतर्क और मनभेद में परिवर्तित होने लगता है

तो समाज का ह्रास होने लगता है, समाज का विकास अवरुद्ध होने लगता है और प्रगति के सारे दरवाजे खुद-ब-खुद बंद होने लगते हैं.

इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न न होने पाए, इसलिए इस दीवाली हम सभी को मिलकर प्रण लेना होगा, शपथ लेनी होगी कि हम अपने मन से वे सभी नकारात्मक भाव और प्रवृतियां निकाल कर सदा सदा के लिए बाहर फेंक देंगे जो किसी भी प्रकार से हमारे और हमारे समाज के लिए घातक हैं, हमारे विकास को अवरुद्ध करने वाली हैं और हमें एक दूसरे से जोड़ने की बजाय तोड़ने का कार्य करती हैं.

तो आइए, आज हम सभी मिलकर दीपावली के इस पावन पर्व को और भी अधिक सुंदर तरीके से मनाते हैं और सर्वप्रथम अपने आपसे प्रॉमिस करते हैं कि हम अपने संबंधों में सदैव ईमानदारी बरतते हुए समाज के सभी लोगों के उत्थान के लिए दिल से यत्न करेंगे, मुफलिसो और मजलूमों पर दया भाव रखेंगे तथा ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे दूसरों को परेशानी हो.साथ ही अपने मन से जाति, धर्म,संप्रदाय और अन्य किसी भी प्रकार की दुश्मनी का भाव,ईर्ष्या,द्वेष,घृणा सदा सदा के लिए बाहर कर देंगे और अपने मन में सभी के लिए प्रेम की ज्योत जलाएंगे जिसकी रोशनी से न केवल हमारा जीवन प्रकाशमान होगा अपितु,उस प्रकाश में पूरा विश्व आगे बढ़ने के मार्ग ढूंढेगा और मानवीयता एक बार पुन: जीवंत हो उठेगी. उस सूरत में समाज में कोई भी व्यक्ति स्वयं को समाज से कटा हुआ महसूस नहीं करेगा और सभी नागरिक आपसी प्रेमभाव और मेल मिलाप से रहते हुए जीवन यात्रा का आनंद लेंगे. सही मायने में इस प्रकार की दिवाली ही हमारे जीवन के सभी प्रकार के अंधकार को दूर कर पाएगी.

*****

प्रकाश पर्व दीपावली की बधाईयां

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

प्रकाश पर्व दीपावली की बधाई
पारंपरिक हर्षोल्लास लेकर आई
राष्ट्रपति प्रधानमंत्री ने दी सबको बधाई
समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी घर-घर आई

दीवाली के दिन चौदह वर्ष वनवास बाद
मां सीता प्रभु राम और लक्ष्मण संग अयोध्या आई
इसी कारण अयोध्या में सबने दीपमाला सजाई

बुराई पर अच्छाई का प्रतीक यह त्यौहार
श्रीराम के जीवन के महान आदर्शों को लाई

श्री राम हमारी संस्कृति में सत्य धर्म साहस
करुणा आज्ञाकारी सत्य का सार लाए
मर्यादा पुरुषोत्तम में आदर्श राजा
आज्ञाकारी पुत्र अपराजेय योद्धा समाए

दुआ है हमारी आप ख़ुश रहें
लक्ष्मी मां सब पर अपनी कृपया बरसाए
सबके जीवन को अधिक संपन्न बनाने
नया उत्साह खुशियों की बारिश लेकर आए

*****

आओ मिलकर जीवन बचाएं

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

धीरे-धीरे पर्यावरण हो रहा है प्रदूषित,
वायु, जल, भूमि सब हो रहा है दूषित.
बढ़ती जा रही है हर जगह बीमारी,
इससे त्रस्त हो रही है दुनिया सारी.

पहले बिकता था सिर्फ पानी,
बिक रही है अब हवा सुहानी.
शुद्ध वायु का ना होना,
शांत वातावरण को खोना.

शुद्ध जल नहीं मिलना,
शुद्ध खाद्य के बिना जीना.
पर्यावरण में जहर घोलता हुआ प्लास्टिक,
इन हालातों के साथ कैसे रहेंगे जीवित.

शारीरिक ऊर्जा कम हो रही है,
स्वयं के साथ नहीं कर रहे सही है.
बहिष्कार करें प्लास्टिक,
जिम्मेदार बने हर एक नागरिक.

पेड़ लगाए, स्वच्छ वातावरण बनाएँ,
स्वयं के जीवन और पर्यावरण को मिलकर बचाएँ.

*****

बकरी

रचनाकार- कमलेन्द्र कुमार

काला भूरा रंग है मेरा,
और कभी है लाल.
और श्वेत भी मेरा रंग है,
हूँ मैं एक कमाल.

तीन अक्षर का नाम है मेरा,
खाती घास हरी.
मध्य हटे तो बरी बनूँ मैं,
प्रथम हटे तो करी..

*****

एक धनुष एक बाण

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

जीवन युद्ध में लड़ अकेला,
लेकर हथेली में अपने प्राण.
एक मौका मिलेगा जीत का,
पास है एक धनुष एक बाण.

देर ना कर अब जाग जा वीर,
निरंतर करता चल तू अभ्यास.
मन को एकाग्र कर ध्यान लगा,
रखना सीख खुद पर विश्वास.

तम गुफा में बंदी बनकर बैठा,
घिर गया आतताइयों के बीच.
मुझे दे रहे थे बिजली के झटके,
रुकने का नाम नहीं लेते नीच.

कहा,क्यों नहीं पढ़ता ज्ञान ग्रंथ?
समय को बर्बाद करता है व्यर्थ.
झूठी शान और शौकत है तेरी,
तेरे जीवन का नहीं है अर्थ.

छोड़ दिए मुझे बोध बाण देकर,
धनुष पोथी से करो लक्ष्य भेदन.
मैं कर्म करूँगा अब तन्मयता से,
जीत होगी आनंद का आस्वादन.

*****

पढ़ें विज्ञान

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

रोचक सरस विषय विज्ञान.
हम सब पढ़ें लगाकर ध्यान.

प्यारी - प्यारी दादी - नानी,
छोड़ें बातें बहुत पुरानी.
नहीं रहे अब राजा - रानी,
सुनेंगे हम विज्ञान कहानी.

प्रकृति - निरीक्षण के द्वारा ही,
दूर करेंगे भ्रम - अज्ञान.

सूर्य, चंद्र, ग्रह, उपग्रह, तारे,
जिज्ञासा के केंद्र हैं सारे.
रोबो-ड्रोन को मित्र बनाकर,
फैलाएँ मन में उजियारे.

नव वैज्ञानिक दृष्टिकोण से,
मुखड़े पर लाएँ मुस्कान.

तन-मन की रख साफ-सफाई,
विषाणुओं की करें विदाई.
लोगों में चेतना जगाकर,
पाएँ आशीर्वाद - बड़ाई.

प्राप्त करें अनुभव, प्रयोग से,
चले सुशिक्षा का अभियान.

क्यों होती घटना, जानेंगे,
जाँच-परखकर ही मानेंगे.
तथ्यों में सुधार - संशोधन,
करने का शुभ व्रत ठानेंगे.

प्रेक्षण-विश्लेषण प्रभाव से,
तोड़ें त्रुटियों के व्यवधान.

*****

सीखें गणित

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

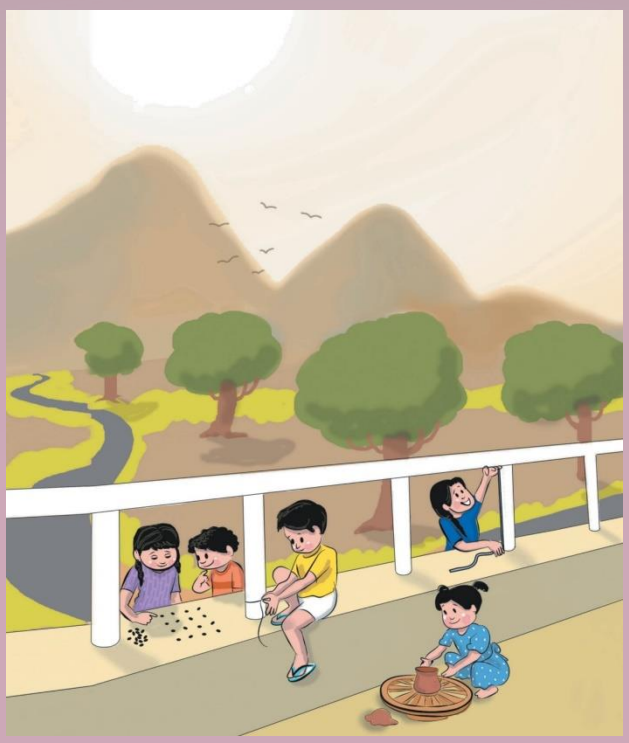

गणित विषय से क्या घबराना,
सीखें गणित को मित्र बनाना.

गणित विषय, क्या नहीं पसंद,
खोलें मन की आँखें बंद.
पढ़ें ध्यान से, सरस विषय है,
सुंदर बनती जीवन - लय है.

प्रमुख चार प्रक्रियाएँ होतीं,
गुणा,भाग और जोड़-घटाना .

क्रीड़ा, गीत, मनोरंजन में,
गणित छिपा पकते व्यंजन में.

गायन, कला, नृत्य, संगीत,
कंप्यूटर में अंक पुनीत.

जीवन का आधार गणित है,
वैज्ञानिकों ने भी माना.

पढ़ें समझकर, रटें न इसको,
अभिरुचि ले, डर लगता जिसको.
एक-एक पग आगे बढ़कर,
विशेषज्ञ बन जाएँ पढ़कर.

जानकारियाँ विकसित होतीं,
तर्कशक्ति का मिले खजाना.

प्रश्नावलियाँ करें स्वयं हल,
सूत्र-नियम का लेकर संबल.
दूर करें अपनी जिज्ञासा,
उदाहरण से बँधती आशा.

कोई भी अध्याय न छोड़ें,
प्रतियोगिता में पदक है लाना.
सीखें गणित को मित्र बनाना.

*****

डेंगू बुखार का महाकोप

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

कोरोना वायरस हुआ कम,अब डेंगू की बारी है.
डेंगू बुखार का महाकोप,अतिशय घातक बीमारी है.

चाहे हो कोई छोटा बच्चा,
अथवा कोई व्यक्ति बड़ा.
डेंगू वायरस संक्रमित मच्छर,
भीषण संकट करे खड़ा.

एडीज एजिप्टी' काटे दिन में, फौज बहुत ही भारी है.

खूब पनपता है दिन दूना,
साफ और स्थिर पानी में.
बर्तन, टंकी, डिब्बे, टायर,
वृद्धि करें मनमानी में.

ठहरे पानी में रहते मच्छर, दंशमार की तैयारी है.

मितली,उल्टी और चकत्ते,
हो सिरदर्द या तेज बुखार.

मांसपेशियों में पीड़ा हो,
कई दिनों तक हो न सुधार.

रक्तस्राव, प्लाज्मा रिसाव से, दुखदायी महामारी है.

अवधि बुखार की रहे सात दिन,
लगती नहीं जोर की भूख.
रक्तप्लेटलेट कम हो जातीं,
थका-थका तन, जाता सूख.

मानव से मच्छर से मानव, डेंगू का क्रम जारी है.

डेंगू होने के लक्षण में,
जाँच करानी बहुत जरूरी.
एक लाख से कम प्लेटलेट को,
चार लाख करनी है पूरी.

पैरासिटामोल की गोली, डेंगू ज्वर में हितकारी है.

पूरी बाँह के कपड़े पहनें,
कूलर में पानी न भरना.
सोएँ मच्छरदानी में ही,
मच्छरवाली क्रीम लगाना.

डेंगू से बचाव ही उत्तम, राय चिकित्सक की न्यारी है.
डेंगू बुखार का महाकोप, अतिशय घातक बीमारी है.

*****

हमारे ऊपर बुजुर्गों का साया है

रचनाकार- किशन सनमुख दास भावनानी, महाराष्ट्र

हमने अपने जीवन में
सुख चैन बहुत
कुछ कमाया है,
क्योंकि हमारे ऊपर
बुजुर्गों का साया है.

घर में बुजुर्ग जरूरी हैं,
क्योंकि ये भगवान हैं.
कुछ बुजुर्गों की,
अजीब कहानी है.

खाने को रोटी नहीं,
आँखों में बस पानी है.
शरीर के हाथों हारे,
यह मन के जवान हैं.

हम सब को समस्याओं
से बचाया है,
जीवन में पूरा परिवार
सुख-चैन पाया है.

जीवन में कभी ठोकर
नहीं खाया है,
क्योंकि हमारे सिर पर
बुजुर्गों का साया है.

समाज में सम्मान दिलाया है,
जीने का तरीका सिखाया है.
जिम्मेदार नागरिक का पाठ पढ़ाया है,
क्योंकि हमारे ऊपर बुजुर्गों का साया है.

*****

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

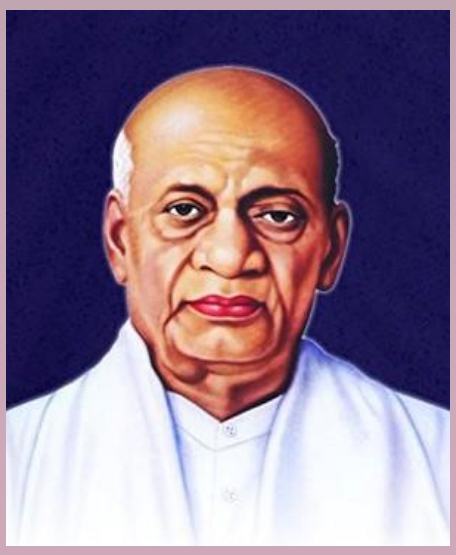

अपने राष्ट्र, मानव कल्याण, मानवता की मिसाल बनने वाले अनेक व्यक्तित्व का जन्म हुआ है. जनता के हृदय में विशेष स्थान बनाना कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि उसके लिए पूरा जीवन समर्पित करना होता है और बिना फल की चाहत के सेवा करनी होती है. भले ही उनका शरीर नहीं रहता परंतु उनकी याद पीढ़ी दर पीढ़ी जगमगाती रहती है. भारत में ऐसे अनेक महान व्यक्तित्व हैं. 31 अक्टूबर 2022 को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 147 वीं जयंती है, जिसे एकता दिवस के रूप में भी मनाते हैं. भारत को आजाद कराने और उसके बाद पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने में लौह पुरुष ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

भारत सरकार ने सरदार पटेल जयंती को एकता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है जिसमें अनेक राज्यों द्वारा कार्यक्रमों के अलावा 31 अक्टूबर 2022 को सुबह 7 से 8 तक रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम आयोजित किया गया है जिसमें विद्यालय प्रधानाचार्य प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ अध्यापक, विद्यार्थी जो लौह पुरुष के राष्ट्रीय एकता में उनकी भूमिका भी बताई जाएगी. एकता दौड़ में विद्यार्थियों के माता-पिता व स्थानीय समुदाय को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया गया है. दूसरी ओर अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सभी उच्च शिक्षण संस्थानों और उनके संबद्ध कॉलेजों और संस्थानों से 25 से 31 अक्टूबर 2022 तक लौह पुरुष के जीवन पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित करने का आग्रह किया है. साथ ही ये भी आग्रह किया गया है कि संभव हो तो ये प्रदर्शनी क्षेत्रीय भाषाओं में अयोजित की जाए.

लौह पुरुष के जीवन और योगदान का जश्न मनाने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद ने संयुक्त रूप से सरदार पटेल–द आर्किटेक्ट ऑफ यूनिफिकेशन का आयोजन किया. यह प्रदर्शनी महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थानों जैसे बैंकों, डाकघरों, सरकारी भवनों, शैक्षणिक संस्थानों और कई अन्य स्थानों पर प्रदर्शित की जाएगी.पत्र में यह भी कहा गया है कि 25 से 31 अक्टूबर तक चलने वाले कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना और नेहरू युवाकेंद्र केस्वयंसेवकों की सक्रिय हिस्सेदारी से साइकिल और मोटरसाइकिल रैलियाँ भी

आयोजित की जा सकती हैं. इसके साथ ही उच्च शिक्षण संस्थानों एवं कालेजों में लौह पुरुष पर विशेष सत्र, वाद-विवाद, क्विज और अन्य प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन भी किया जा सकता है. रन फॉर यूनिटी के लिए एक माइक्रोसाइट तैयार की गई है और एकता दौड़ में हिस्सा लेने वाले सेल्फी लेकर इस पर अपलोड कर सकते हैं.केंद्रीय गृह मंत्रालय 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री के विशेष अभियान पदक-2022' की घोषणा करेगा. इसे लेकर इस सप्ताह की शुरुआत में गृह मंत्रालय के पुलिस डिवीजन- I ने एक आंतरिक आदेश भी जारी किया था. ये पदक पुलिस सेवा में बेहतर कार्य और उत्कृष्टता को बढावा देने और तनावपूर्ण स्थितियों तथा कठिन इलाकों में अच्छा काम करने वालों को दिया जाता है. 31 अक्तूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के मौके पर बड़े पैमाने पर देश भर में 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम मनाया जाएगा.

हम लौह पुरुष के हितकारी कार्यों और उनकी जीवनी देखें तो सरदार बल्लभ भाई पटेल ने देश हित में कई लोक हितकारी कार्य किए थे जिनका शब्दों में बयान करना सरल नहीं है, लेकिन फिर भी हम लौह पुरुष के द्वारा देश हित में किए कार्य की चर्चा करेंगे उनका सबसे महत्वपूर्ण काम देश का एकीकरण करना था जैसा कि हम लोग जानते हैं कि जब देश 1947 में आजाद हुआ तो देश में सभी रियासतें अलग अलग थी और कई रियासतें भारत में मिलने के लिए राजी भी नहीं हो रही थी इसकी सबसे प्रमुख वजह थी कि उनमें से अधिकांश मुस्लिम रियायत पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहती थी क्योंकि अंग्रेजों ने जब भारत का बंटवारा किया तो उन्होंने कहा कि जो रियासत भारत के साथ रहना चाहती हैं वह भारत के साथ जा सकती हैं और जिन्हें पाकिस्तान जाना है वह पाकिस्तान जा सकती हैं. ऐसे में भारत के हैदराबाद के निजाम ने पाकिस्तान जाने का फैसला किया और साथ में जूनागढ़ के नवाब ने भी. लेकिन लौह पुरुष ने अपनी राजनीतिक सूझबूझ और कूटनीति का इस्तेमाल करते हुए दोनों रियासतों को भारत में विलय करने के लिए मजबूर किया और हैदराबाद और जूनागढ़ को पाकिस्तान में सम्मिलित होने से रोका I इसके अलावा कश्मीर में जिस प्रकार पाकिस्तान कब्जा करना चाहता था I उसे रोकने का काम भी सरदार बल्लभ भाई पटेल ने किया था नहीं तो आज कश्मीर पाकिस्तान के अंदर सम्मिलित होता I सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में हुआ. लंदन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे. महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया. स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार पटेल का पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेड़ा संघर्ष में था. उन्होंने 1928 में हुए बारदोली सत्याग्रह में किसान आंदोलन का सफल नेतृत्त्व भी किया. बारदोली सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहाँ की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि प्रदान की थी. किसी भी देश का आधार उसकी एकता और अखंडता में निहित होता है और सरदार पटेल देश की एकता के सूत्रधार थे. इसी वजह से उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के तौर पर मनाया जाता है. लौह पुरुष का निधन 15 दिसंबर, 1950 को मुंबई में हुआ था. सन 1991 में सरदार पटेल को मरणोपरान्त 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देशी रियासतों का एकीकरण कर अखंड भारत के निर्माण में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता.

उन्होंने 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण किया. महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को लौह पुरुष की उपाधि दी थी. गुजरात में नर्मदा के सरदार सरोवर बांध के सामने सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मीटर (597 फीट) ऊंची लौह प्रतिमा (स्टैचू ऑफ यूनिटी) का निर्माण किया गया है. यह

विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है. इसे 31 अक्टूबर 2018 को देश को समर्पित किया गया. स्टेचू ऑफ लिबर्टी की ऊंचाई केवल 93 मीटर है.

उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करने पर हम पाएँगे कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 147 वीं जयंती एकता दिवस पर विशेष है. भारत को आजादी मिलने के बाद लौह पुरुष ने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की. भारत की खुशहाली में अपना जीवन समर्पित करने वालों की देशभक्ति शिक्षा और मूल्यों को सम्मान प्रदान करने सभी नागरिकों की सक्रिय हिस्सेदारी ज़रूरी है.

*****

चिड़िया

रचनाकार- उमेश कुमार गुनी, खैरागढ़ -छुईखदान -गंडई

चूँ-चूँ करती आती चिड़िया, सबके मन को भाती चिड़िया.
सुबह सवेरे गीत सुनाकर, हमको रोज जगाती चिड़िया.
चूँ-चूँ करती आती चिड़िया, सबके मन को भाती चिड़िया.

कभी बैठे पेड़ की डाली, कभी गगन को जाती चिड़िया.
बड़ा नहीं तू मेरे हौसलों से, आसमान को सिखाती चिड़िया.
चूँ-चूँ करती आती चिड़िया, सबके मन को भाती चिड़िया.

कभी किसी की मदद न माँगे, ख़ुद का घर ख़ुद बनाती चिड़िया.
कभी न करती अधिक की आशा, कम में संतुष्टि सिखाती चिड़िया,
चूँ-चूँ करती आती चिड़िया, सबके मन को भाती चिड़िया.

कभी किसी से न करती हिंसा, मधुर स्वभाव सिखाती चिड़िया,
इसे न छेड़ो इसे न मारो,कीट से फसल बचाती चिड़िया.
चूँ-चूँ करती आती चिड़िया, सबके मन को भाती चिड़िया.

*****

आता है क्रिसमस

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

हर साल पच्चीस दिसम्बर को,
आता है क्रिसमस.
प्रभु यीशु का जन्मदिन,
लाता है क्रिसमस.

चर्च और गिरजाघर
सारे सज जाते हैं.
सभी इसाई भाई बहन
क्रिसमस खूब मनाते हैं.

आज का दिन दुनिया में
बड़ा दिन कहलाता है.
सारी दुनिया में क्रिसमस
धूमधाम से मनाया जाता है.

सभी चर्च में आज के दिन
लोगों का मेला लग जाता है.
एक दूजे को क्रिसमस की
बधाई दी जाती है.

*****

डंढ हवा बहने लगा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

सर्दी का मौसम आ गया
ठंडी हवा बहने लगी.
सर्दी का असर देखो
धीरे धीरे दिखने लगा.

गर्म हवा और लू
जाने कहां चली गई.
सूरज की अब धूप
मीठी मीठी लगने लगी.

पहाड़ों पर बर्फ अब
रोज देखो गिरने लगी.
लोगों के बदन पर
अब गर्म कपड़ा दिखने लगा.

अब तो गर्म मूंगफली
मन को खूब भाने लगी.
सर्दी का मौसम आकर
सबको फिर सताने लगा.

*****

आ गया देखो जाड़ा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गर्म कपड़े बक्से से निकालो
आ गया देखो जाड़ा.
सर्द हवा बहने लगी
आ गया देखो जाड़ा.

सूरज की धूप मन भाने लगी
आ गया देखो जाड़ा.
ओस के बादल छाने लगे
आ गया देखो जाड़ा .

सर्दी से बदन काँपने लगा
आ गया देखो जाड़ा.
मुँह से भाप निकलने लगी
आ गया देखो जाड़ा.

पंखा एसी कूलर बंद हो गए

आ गया देखो जाड़ा.

हर तरफ कोहरा दिखने लगा

आ गया देखो जाड़ा.

*****

त्यौहार का उपहार

रचनाकार- श्वेता तिवारी, बिलासपुर

दीपावली का त्यौहार नजदीक आ गया था. महिमा बाजार से सामान लेने गई थी बाजार में रंग बिरंगी दुकानें सजी हुई थी. मिठाइयाँ ,रंगोली व पटाखे नए-नए कपड़ों की छोटी- बड़ी दुकानें खुली हुई थी. महिमा ने अपनी जरूरतों का समान लिया उसके पश्चात महिमा पास ही के रेस्टोरेंट में जाकर बैठ गई और सुस्ताने लगी. वह एक गिलास ठंडा जल पीकर बैठी थी और चाय पीकर अपनी थकान दूर करना चाह रही थी तभी वहाँ पर एक प्यारी, छोटी सी बिटिया आई और महिमा का दुपट्टा पकड़कर खींचने लगी. महिमा ने पूछा क्या बात है? उसने मिठाइयों की ओर इशारा करते हुए कुछ कहा. महिमा ने उसे मिठाई, नमकीन और कुछ खाने की वस्तुएँ दिलाई उसे लेकर वह बहुत ही खुश हुई.

महिमा उसके साथ गई कुछ ही दूरी पर एक जर्जर मकान के अंदर एक महिला बिस्तर पर लेटी हुई थी उसकी तबीयत बहुत खराब थी उस बच्ची ने मिठाई नमकीन और खाने की वस्तुएँ अपनी माँ के सामने रख दी उसकी माँ उन्हें देखकर बहुत खुश हुई और उसकी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे

यह देखकर महिमा भी बहुत खुश हो गई. उसकी आँखों में भी आँसू आ गए.

डॉक्टर को बुलाकर महिमा ने माँ का इलाज करवाया और कुछ दवाइयाँ देकर अपने घर की ओर लौटी.

तब उसे लगा कि आज त्यौहार की सच्ची खरीदारी हो गई है. मन से किसी जरूरतमंद की मदद की है यही मेरे लिए त्यौहार का असली उपहार है.

*****

शाकाहारी मनुष्यः दीर्घायुः भवति

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

हमने कई बार स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू नामक बीमारियों के नाम सुने हैं लेकिन अभी दो साल से हम सब कोरोना महामारी से पीड़ित होकर उबरे हैं. यह बीमारी भी जानवर से प्रसारित हुई थी, यानी अनेक बीमारियों का मनुष्य में संक्रमण जानवरों से होता है जिससे गुर्दे का रोग, अल्सर, कैंसर, चर्मरोग जैसी अनेक बीमारियों की संभावना होती है.

इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में अनेक बार ऐसी जानकारियाँ आती रहती हैं जो बताती हैं कि मांसाहार स्वस्थ जीवन के लिए अपेक्षाकृत सुदृढ़ आहार नहीं है दूसरी ओर मांसाहार के बढ़ते दौर से पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचने की संभावना बनी रहती है इसीलिए ही रिचर्ड आर्टन मुख्य संपादक लासेन (मेडिकल जरनल) ने कहा है धरती पर जीवन बनाए रखने में कोई भी चीज मनुष्य को उतना फायदा नहीं पहुँचाएगी जितना कि शाकाहार का मिल रहा है. हालांकि कहा जाता है कि विश्व में सबसे अधिक शाकाहारी भारत में ही रहते हैं, क्योंकि 1 नवंबर 2022 को विश्व शाकाहारी दिवस हम मना रहे हैं. 1 नवंबर को इसलिए चुना गया क्योंकि यह हेलोवीन (31 अक्टूबर) और ऑल सोल्स डे (2 नवंबर) के बीच आता है, इसलिए वालिस को इन दोनों के साथ मेल खाने वाली तारीख पसंद आई जो दावत और उत्सव के लिए एक पारंपरिक समय प्रदान करता है और शाकाहारी दिन उसके लिए पूरी तरह से फिट बैठता है.

शाकाहार एक जीवन शैली है जिसे व्यक्ति स्वस्थ जीवन के लिए चुनता है. एक अच्छी और स्वस्थ जीवन शैली के लिए शाकाहारी भोजन के अपने फायदे हैं, कई स्वास्थ्य लाभ हैं जो एक शाकाहारी आहार प्रदान करता है और इसलिए लोगों को शाकाहारी आहार के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूक करने और इसे बढ़ावा देने के लिए विश्व शाकाहारी दिवस मनाया जाता है.

भारत में ज्यादातर लोग शाकाहारी भोजन खाना पसंद करते हैं. बीमार होने पर अक्सर डॉक्टर फल और सब्जियाँ खाने की सलाह देते हैं. यानि शरीर को ठीक करने में शाकाहार फायदा करता है. शाकाहारी खाने में भरपूर पोषक तत्व पाए जाते हैं. फल, सब्जियाँ, दालें और अनाज विटामिन और मिनरल्स का भंडार हैं. हालांकि दुनिया में सिर्फ 10 फ़ीसदी आबादी ही शाकाहारी है, जिसमें से सबसे ज्यादा संख्या भारत में है.

शाकाहारी भोजन के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए फायदे देखें तो शाकाहारी भोजन न सिर्फ स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है बल्कि पर्यावरण के लिए भी अच्छा है. शाकाहारी खाने में सब्जियाँ, बीज, फलियाँ, फल, नट्स और अनाज शामिल होते हैं. इसमें पशु उत्पाद जैसे, डेयरी और शहद भी शामिल हैं. इस दिन लोगों को पर्यावरण को सुरक्षित रखने, पशु कल्याण और जानवरों को बचाने पर जोर दिया जाता है. लोगों को शाकाहारी भोजन के फायदों के बारे में बताया जाता है. ये फायदेमंद है शाकाहारी भोजन (1) - वेजिटेरियन डाइट हाई फाइबर डाइट होती है, जिससे हमारी गट हेल्थ अच्छी रहती है. इससे पेट से जुड़ी समस्याएँ जैसे कब्ज, पेट दर्द, और भारीपन दूर होता है. (2) - शाकाहारी खाना न सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि इससे आपकी उम्र भी बढ़ती है और शरीर बीमारियों से दूर रहता है. (3) - वजन घटाने, कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल रखने, डायबिटीज और हार्ट के खतरे को कम करने के लिए भी वेजिटेरियन डाइट लेने की सलाह दी जाती है. (4)-बालों को मजबूत बनाने और स्किन को हेल्दी और चमकदार बनाने के लिए भी वेजिटेरियन डाइट अच्छी मानी जाती है. (5) - शाकाहारी खाने से शरीर को जरूरी विटामिन और मिनरल्स आसानी से मिल जाते हैं.

विश्व शाकाहारी दिवस लोगों को पशु उत्पादों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए पर्यावरणीय विचारों, पशु कल्याण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य लाभों पर जोर देने के लिए मनाया जाता है यूनानी दार्शनिक और गणितज्ञ पाइथागोरस इस आहार का समर्थन करते थे जिनके नाम पर ये नाम रखा गया था. इसके बाद 1960 के दशक में अमेरिका और ब्रिटेन में भी शाकाहारी खाने को लेकर जागरुकता बढ़ने लगी. इसके बाद 1977 में उत्तर अमेरिकी वेजिटेरियन सोसाइटी ने हर साल 1 अक्टूबर को विश्व शाकाहारी दिवस मनाने की घोषणा की, मांसाहारी लोगों को डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, दिल की बीमारी, कैंसर, गुर्दे का रोग, अल्सर, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू जैसी कई बीमारियाँ होने की अधिक सम्भावना होती है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि

शाकाहारी मनुष्यः दीर्घायुः भवति

आओ क्रूरता मुक्त जीवन शैली बनाने शाकाहारी बने. आधुनिक समाज में शाकाहारी आहार स्वस्थ जीवन शैली बनाने के लिए सबसे आश्चर्यजनक और दिलचस्प आहारों में से एक है.

*****

रजाई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

रजाई ले कर बंदर आया,
चारपाई पर उसे बिछाया.
जाड़े से बचने के लिए,
कम्बल भी खरीद लाया.

स्वेटर कोट उसने बनवाया,
टोपी मफलर भी वह लाया.
सर्दी से बचने के लिए
मोजा जूता भी साथ लाया.

इस साल बंदर ने,
कीट कीट दांत नहीं बजाया.
गरम लबादों के कारण,
सर्दी पास नहीं आया.

बंदर की देखा देखी,
रजाई कम्बल सब लाए.
सर्दी से बचने के लिए,
गरम कपड़े सब लाए.

*****

चूहे की सामत आई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक था चूहा बड़ा शरारती
बिल्ली के घर में घुस आता.
जो भी पाता किचन में
उसे वह चट कर जाता.

बिल्ली को वह आए दिन
परेशान खूब करता.
बिल्ली मौसी से वह
कभी नहीं था डरता.

एक दिन बिल्ली मौसी ने
ऐसी घात लगाई.
छुप कर किचन के में
अपनी अकल लगाई.

उस दिन चूहे की
शामत ऐसी आई.
बिल्ली ने चूहे को
पकड़ लिया भाई.

चूहा बोल छोड़ दो हमको
अब न यहां मैं आऊंगा.
चोरी की आदत छोड़ कर
मेहनत कर के खाऊंगा.

*****

बकरी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बकरी ने घास चुराई
पुलिस पकड़ कर थाने लाई.
चोरी के जुर्म में
बंदर को हथकड़ी लगाई.

बाप बाप चिल्लाई बकरी
थानेदार से अकडी़ बकरी.
चोरी के जुर्म में सात साल की
सजा लम्बी पाई बकरी.

जंगल में सारे खबल फैल गई
बकरी की हालत गम्भीर हो गई.
राजा शेर तुरंत आया
थानेदार को पद से हटाया.

थाने से छूटकर आई बकरी
शेर की करी बढाई बकरी.
अब न चोरी करुंगा मैं
ऐसी कसम खिई बकरी.

*****

मुस्कान में मिठास की परछाई है

रचनाकार- किशन भावनानी, महाराष्ट्र

मुस्कान में मिठास की परछाई है
इस कला में अंधकारों में भी
भरपूर खुशहाली छाई
स्वभाव की यह सच्ची कमाई है

मीठी जुबान का ऐसा कमाल है
कड़वा बोलने वाले का
शहद भी नहीं बिकता
मीठा बोलने वाले की
मिर्ची भी बिक जाती है.

मुस्कान उस कला का नाम है
भरपूर खुशबू फैलाना उसका काम है

अपने स्वभाव में ढाल के देखो
फिर तुम्हारा नाम ही नाम है.

मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं
अटके काम पल भर में पूरे होते हैं
सुखी काया की नींव होते हैं
मानवता का प्रतीक होते हैं.

*****

गुल्लक - सीख

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

बचत की आदत, शुभ संस्कार.
गुल्लक का रोचक संसार.

प्रतिदिन जेबखर्च जो मिलता,
बच जाए, गुल्लक में डालें.
बंद करें फिजूलखर्ची को,
कम पैसों में काम निकालें.

रुपए मिलें बहुत पर्वों पर,
खुश होकर दें रिश्तेदार.

जमा हुए पैसे नित गिनना,
होती अच्छी नहीं है बात.
उसे भूल जाएँ कुछ दिन को,
तभी मिले सुंदर सौगात.

पिता के सम्मुख खोल किसी दिन,
लगा दें रुपयों का अंबार.

पैसे बचेंगे निज प्रयास से,
होगा नहीं आर्थिक संकट.
मनपसंद पुस्तकें - खिलौने,
लें खरीद, अब शेष न झंझट.

घर में किसी के जन्मदिवस पर,
बढ़िया दे सकते उपहार.

कभी किसी की मदद भी कर दें,
मिलेगी खुशी बड़ी अनमोल.
पैसों का महत्व समझेंगे,
करते रहे जो टाल-मटोल.

पैसों का जादू दिखलाती
गुल्लक - सीख करें स्वीकार.
बचत की आदत, शुभ संस्कार.

*****

दुखी न हों

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

एक दिवस कौए ने सोचा,
मेरा जीवन अंधा कूप.
काला रंग आवाज न अच्छी,
सब चिड़ियों में महाकुरूप.

मन में हीनभावना आई,
पहुँचा बगुला मित्र के पास.
उसने पूछा - मुझे बताओ,
किस कारण हो दुखी - उदास.

कौआ बोला - क्या बतलाऊँ!
बदसूरत मैं भू पर भार.
तुम हो कितने गोरे - चिट्टे,
मिला सफेदी का उपहार.

बगुले ने की प्रकट निराशा,
मैं भी जब देखूँ तोता.
हरे पंख और लाल चोंच से,
वह कितना सुंदर होता.

कौआ पास गया तोते के,
कहा - हो तुम सुंदर कितने!
'टें टें टें' हरदम गाते हो,
सचमुच हो तुम खुश इतने.

तोता बोला - कौआ भाई,
मेरे लिए है दुख की बात.
जब से मैंने मोर को देखा,
मैं भी सोच रहा दिन-रात.

रंगबिरंगे पंखों वाला,
दूजा सुंदर पक्षी कौन?
खूब नाचता है खुश होकर,
देख सभी रह जाते मौन.

कौआ, मोर को लगा ढूँढ़ने,
आया कहीं न उसे नजर.
कुछ चिड़ियों ने उसे बताया,
मोर गए सब चिड़ियाघर.

कौआ चिड़ियाघर जा पहुँचा,
की प्रशंसा पूछा हाल.
दुखी मोर ने कहा सिसककर,
सुंदरता ही बनी है काल.

रंग - रूप जो मिला है जिसको,
समझो उसे ईश - उपहार.
सुंदरता ने मुझे दिलाया,
पिंजड़ेवाला कारागार.

मोर ने समझाया कौए को,
दुखी न हों करके तुलना.
जो जैसा है, वह सुंदर है,
अच्छा है मिलना - जुलना.

*****

मुखड़ा

रचनाकार- पूनम दुबे "वीणा", अम्बिकापुर

नाचने लगी है बदरी
शाम का ये रूप अनुपम
डोलते है पौध सारे
दामिनी की चाल अनुपम.

घिर गई कैसी घटायें
आया सावन झूमता सा
मोतियों से बूँद बरसे
लहरा गया मधुमास सा
सुरसरी सी ये हवा है
पायलों सी धुन अनुपम.

खुल गये है केश काले
धरणी का लावण्य रूप
पात सारे है चमकते
खिल रही मुखड़े पे धूप

छन कर आती है किरणें
स्वर्ण आभा रंग अनुपम.

गीत गाती है हवायें
खुशनुमा उपवन हुआ है
ताकती बुलबुल बिचारी
प्रीत सा मधुबन हुआ है
योगियों का योग खण्डित
मेनका का रूप अनुपम.

*****

आम की चोरी

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

सुबह जेठानी जी का फोन आ गया.-"आभा !तुम लोग गांव आ जाओ.अम्मा बाबूजी बच्चों को बहुत याद कर रहे हैं."

आभा -"प्रणाम दीदी!मैं आपके देवर जी से पूछती हूं."

जेठानी -"सौभाग्य वती रहो. ठीक है.देवर जी से हमारी बात करा दो."

आभा -"अजी! सुनते हो गाँव से फोन आया है."

अनिरुद्ध-"पाव लगी भौजी!"

जेठानी- " हमेशा खुश रहो.अम्मा और बाबूजी आज सुबह से ही याद कर रहे हैं."

अनिरुद्ध-"भौजी!! हमारी अम्मा बाबूजी से बात करा दीजिये."

हाँ अम्मा !पाँव लागी कैसी हो??

अम्मा -"जुग जुग जियो मेरे लाल.हम ठीक हैं बेटा.बस बहू के संग आ जाओ. आँखे तरस रही हैं.बच्चों को देख लेते तो हमारा जी हल्का हो जाता."

बाबूजी-"हाँ बेटा मन में चिंता लगी रहती है.देख सुन लो तो मन प्रसन्न हो जाता है."

अनिरुद्ध- "पाव लागी बाबूजी.पंद्रह मई से कोर्ट की पंद्रह दिन के लिये छुट्टी लगेगी.तब हम आते हैं.गाँव तो हमारे दिल में बसा है बाबूजी."

बाबूजी-"सदा खुश रहो बेटा. बस ये आँखे तुम्हारे ही आने का रास्ता देख रही हैं."

दो दिन के बाद अनिरुद्ध आभा से कहता है.

अनिरुध्द - "आभा,कल की पैकिंग कर लेना.टिफिन भी बन लेना.अपनी कार से जाने पर भी राम पुर पहुंचने में पाँच घंटे तो लग ही जाते हैं."

आभा-"ठीक है जी. हम तो उठ ही जाते हैं.आप भी सुबह जल्दी उठ जाइयेगा"

प्रांशु और नीलम दोनों बच्चे खुशी से चहकने लगे.

गांव जायेगे.खेतों में घूमेंगे.तालाब में नहायेंगे.तितलियां पकड़ेंगे.पतंग भी उड़ायेंगे.ढेर सारी कल्पनाएँ करके वे दोनों खुशी से फूले नहीं समा रहे थे.

दूसरे दिन सभी तीन बजे तक गांव पहुंच गये.

अनिरुद्ध-"पांव लगी बाबूजी !"

बाबूजी-"-खुश रहो बेटा !"

राम शरण भैया भी आ गये.भाभीजी ने चाय नाश्ते का प्रबंध पहले से कर लिया था.

भाभी-"-देवरजी !!अम्माजी आपके लिये गरम-गरम भजिए बनवाई हैं और गुलाब जामुन तो हमने कल ही बना लिये थे."

प्रांशु और बहू को देखकर मां बाबूजी गदगद हो गए.अम्मा नीलम को गोद में उठा ली.दादाजी प्रांशु को गोद में भरकर उसके गाल चूम लिये. प्रांशु आठ साल का है वह कक्षा तीसरी में है.नीलम पांच साल की है वह के जी टू में पढ़ती है.

दादाजी-नीलम बिटिया !!हमें वो कविता सुना दो. "ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार,,,,,"

नीलम-"-ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार. हाउ आई वंडर व्हाट यू आर,,,,,पूरी पोयम सुनकर दादाजी बेहद प्रसन्न होगये.

दादा जी- बहुत बढ़िया बिटिया और हिंदी वाली भी सुनादो.

"अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ, सौ कदम पर बंदर था, बंदर के थे बड़े तमाशे, बांटे सबको खील बताशे, अगर कोई इसे चिढ़ाये दांत दिखा कर करता खों खों."

नीलम पूरे हाव भाव से कविता सुना रही थी.

सब हँसते हुये तालियां बजाने लगते हैं.

दादा जी -" बहुत बढ़िया बिटिया रानी."वे खुश होकर नीलम की पीठ थप-थपा देते हैं.

प्रतिमा दी और आभा दोनों रसोई में खाने की तैयारी करने लगती हैं.आज ऐसा लग रहा है मानो घर में कोई त्योहार है.बहुत दिनों के बाद घर में सभी सदस्य इकट्ठा हुए हैं.

अम्मा- "कितने दिनों की छुट्टी है बेटा? "

अनिरुध्द-"15 दिनों के लिए आए हैं अम्मा."

फिर यहाँ से जाकर कुछ ऑफिस का काम भी देखना पड़ेगा अम्मा-"अच्छा बेटा. बड़े दिनों के बाद आये हो."

दूसरे दिन दोपहर का समय था. घर के सभी सदस्य सोए हुए थे. जेठ जी के दो बच्चे यश और शुभ,अनिरुध्द के दो बच्चे मिलकर आम के बगीचे की ओर चल दिए. गाँव के चार पाँच बच्चों की वानर सेना भी उनकी मंडली में शामिल हो गई.बच्चों की शैतान चौकड़ी आम के बगीचे में पहुंची तो बंशी काका का कुत्ता उनकी ओर दौड़ा. बच्चे भी कम नहीं थे.

शुभ ने उसके सामने बिस्किट डाल दिया.वह दुम हिलते हुये खाने लगा.काका का वह कुत्ता भी बच्चों की टीम में शामिल होकर दुम हिलाने लगा. बच्चे आम के पेड़ पर चढ़ कर बहुत मस्ती कर रहे थे. गांव के बच्चे नीचे टपके हुये आमों को बिनने लगे.

पत्तों की खड़खड़ाहट होने लगी.उसी समय बंशी काका की नींद खुल गई.वे बगीचे की ओर डंडा लेकर दौड़े. "अरे नाशपीटों !! नहीं छोड़ूंगा आज तुम लोगों को.अरे शैतानों!बेड़ गर्क हो तुम्हारा. सबके घर जाऊंगा. "

आज सबकी खबर लूंगा. बंशी काका हाँफते हुये पीछा कर रहे थे.

पेड़ के नीचे खड़े जासूस बच्चे पहले भाग गये और जमींदार बाबू के यहां की शैतान चौकड़ी भी उनके पीछे भागी.

चारों बच्चे हाँफते हुए आए अ◌ौर घर के अंदर पलंग के नीचे छिप गए.बंशी काका भी उनके पीछे-पीछे भागते हुए आए और घर के अंदर दाखिल हुए.

बंशी काका -"जमींदार बाबू ! बहुरिया !!कहां हो,,,जरा बाहर तो आओ,,,,,, कहां हो?"

जेठानी- "काका क्या बात है ? काहे इतना शोर मचा रहे हो."

जेठानी जी ने कहा.

बंशी काका-"-वह तुम्हारे दो, वकील बाबू के दो हो गये चार अ◌ौर गांव भर के पांच छह बच्चे सब की शैतान चौकड़ी हमार बगीचा में घुसी थी."

जेठानी-"फिर क्या हुआ ? काका!! "

बंशी काका -"फिर क्या बतायें ? बहुरिया !!सारे आम झोर डालें इन सबने मिल के."

अब जब तक हमें हर्जाना नहीं दोगी, हम तो यहां से टस से मस नहीं होने वाले.-बंशी काका ने तो फरमान जारी कर दिया.

जेठानी जी-" देखो काका यह चार बच्चे अकेले तो नहीं थे, गांव भर के भी बच्चे साथ थे ना इनके.फिर आप उनके घर क्यों नहीं गये ?"

जेठानी जी ने दलील देते हुये कहा.

बंशी काका -" अब यहां से जाएंगे सीधे एक एक करके सब बच्चों के घर.सबकी खबर लेंगे."

जेठानी जी -"-कितना नुकसान हो गया है काका??"शांत स्वर में कहा.

बंशी काका -"का बतायें बहुरिया !!! करीब दस किलो आम टूट गये.(दुखी होते हुये)"

जेठानी -"दस किलो !!बाप रे !! ये लोग तो आम लेकर नहीं आये हैं."

बंशी काका -"-पेड़ पर चढ़कर ये बच्चे डंडे मार मारकर आम नीचे गिरा रहे थे."

जेठानी -"ओ हो काका !!!"

बंशी काका -"अच्छा बहुरिया या तो हर्जाना दे दो नहीं तो शाम तक यहां से नहीं मिलेंगे हम भी बैठ जाएंगे. "बंशी काका अपनी मूँछे ऐंठते हुये वहीं धरती पर बैठ गये.

जेठानी -"ठीक है काका ! कुल मिलाकर कितने रुपए हुए ??"

बंशी काका -"बहुरिया!! करीब चार सौ रुपये."

जेठानी अंदर जाती है.चार सौ रुपये काका के हाथ में देती हैं.

जेठानी -"पर वकील बाबू और जमींदार बाबू को इस घटना की भनक नहीं पड़ने देना.उनसे आप कोई चर्चा मत करना. नहीं तो बच्चों की पिटाई होगी अ◌ौर वकील बाबू बच्चों की शैतानी से गुस्सा होकर शहर वापस चले जायेंगे. काका अब आप समझ गये होंगे."

बंशी काका -"-हाँ बहुरिया!! अब काहे चर्चा करेंगे जमींदार बाबू से. हमारे रुपये तो वापस मिल ही गये हैं. अब हम जा रहे हैं."

काका का प्रस्थान होता है.

जेठानी -"बच्चों !बाहर आओ !!"

चारों बच्चे-(एक स्वर में)"जी मम्मी ! जी बड़ी मम्मी !! " चारों बच्चे अपराधी बन कर सहमे हुये खड़े हो गए.

जेठानी -"क्यों गए थे बगीचे में तुम लोग ? जवाब दो !!"

जेठानी ने कड़े शब्दों में पूछा.

चारों बच्चे-"नहीं मम्मी, अब हम लोग नहीं जाएंगे."

जेठानी-"और जाओगे तो शिकायत पापा से करूंगी फिर वह तुम लोगों की बहुत मरम्मत करेंगे."

शुभ-"जी मम्मी जी !!"

प्रांशु-"जी बड़ी मम्मी !!"

जेठानी जी -"अभी बीस बार उठक बैठक लगाओ.

1- - -2- - -3 - - - -20 तक चारों बच्चे उठक बैठक लगाने लगे."

जेठानी-"अब केवल घर में शतरंज, लूडो, कैरम,सांप सीढ़ी यह सब खेल खेलो. बाहर खेलना ही चाहो तो अपने कोठार में अ◌ौर अपनी बाड़ी में खेल सकते हो.समझ गये हमारी बात."

जेठानी जी ने सारा मामला बड़ी चतुराई से डांट डपट कर रफा दफा कर दिया. बच्चे फिर से कैरम की गोटियों पर निशाना साधते हुए हंसते मुस्कुराते किलकारियाँ भरते हुये खेल में मग्न हो गए.

*****

शीत ऋतु

रचनाकार- नंदिनी राजपूत, कोरबा

शीत ऋतु आई है,साथ में ठंड भी लाई है.
जीव - जंतु की देख दशा, प्रकृति भी सकुचाई हैं.

दिसंबर में यह आती है, मार्च तक कड़कड़ाती हैं.
सूरज की तपिश गर्मी भी, इसके सामने फीकी पड़ जाती है.

चारों तरफ वातावरण में जब घोर कोहरा छाता है.
सूरज की गर्मी भी जब मध्यम पड़ जाता है.
रात में जब अनगिनत तारों की रोशनी से,अंधकार मिट जाता है.
तब शीत ऋतु अपना प्रचंड रूप दिखाता है.

बच्चे,बूढ़े और जवान सभी ठंड से कांप रहे हैं.
सर्दी जुकाम से बचने गर्म पानी का भाप ले रहे है.

जीव जंतु तो बेघर इधर-उधर घूम रहे हैं.
इस ठंड से बचने के लिए तिनके का सहारा ढूंढ रहे हैं.

हे प्रकृति देवता इतना ना कहर ढाओ.
बेजुबान जीव जंतु पर अब तो रहम खाओ.
शीत ऋतु के इस मौसम में,सूर्य की तपिश बढ़ाओ.
बच्चे, बूढ़े- जवानों को,चैन की राहत दिलवाओ.

*****

बिट्टू की सूझ बूझ

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

जुलाई का महिना था. बहुत तेज हवाएं चल रही थी. लोग बारिश होने की आशंका से अपने-अपने घर लौट रहे थे.तभी एक पुराना बरगद का वृक्ष बहुत तेज आवाज के साथ

सड़क पर गिर गया जिसके कारण आवागमन रुक गया.पेड़ के नीचे एक चाय की गुमटी वाला आदमी दब गया.

कुछ लोग नगर निगम आफिस में फोन करने लगे.कुछ लोग एंबुलेस को फोन करने लगे.मीडिया के लोग आकर उस स्थान का वीडियो बनाने लगे.उस आदमी को होश आया तो वह चिल्लाया मुझे बचाओ किंतु वीडियो बनाने वालों को इतनी फुर्सत कहाँ !

पूरा रास्ता बंद हो गया था.सभी पेड़ हटने का इंतजार कर रहे थे.बच्चों से भरा हुआ एक आटो भी वहाँ खड़ा था.बच्चे रास्ता खुलने का बेसब्री से इंतजार करने लगे.उन बच्चों में से एक सात वर्षीय बच्चा आटो से नीचे उतरा.वह पेड़ हटाने का प्रयास करने लगा.

उसे भारी भरकम पेड़ हटाते देख सभी बच्चे नीचे उतरे और वे भी पेड़ हटाने लगे.

छोटे बच्चों को पेड़ हटाते देख भीड़ में फँसे लोगों को शर्म आयी.वे सभी आकर पेड़ हटाने की कोशिश करने लगे.

सबकी मेहनत रंग लायी और धराशायी पेड़ हट गया.

उसी समय सायरन बजाती हुई एंबुलेंस आ गयी और पेड़ के नीचे दबे आदमी को अस्पताल ले गयी.बिट्टू की सूझबूझ से विशालकाय पेड़ रास्ते से हट गया.रास्ता खुल गया.घायल व्यक्ति को तत्काल उपचार के लिये अस्पताल भेज दिया गया.बच्चों से भरा आटो अपने गंतव्य की ओर लौटने लगा.आवागमन फिर से शुरु हो गया.

ना जाने कितने उदाहरण हमारे आसपास घटित होते हुये दिखाई देते हैं.सोचने वाली बात यह है कि जरा सी सूझ बूझ से बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान पाया जा सकता है.जब एक गिलहरी राम सेतु बनाने में योगदान दे सकती है तो हर जगह व्यवस्था को कोसने वाले लोग अच्छे नागरिक की भूमिका क्यों नहीं निभा सकते हैं.

*****

पुराना स्वेटर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बंटी एक अच्छे कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता था. मगर बंटी एक गरीब घर का लड़का था,पर वह पढ़ने में सब बच्चों से सबसे तेज था. इसी से स्कूल के प्रिंसिपल ने बंटी का स्कूल की फीस माफ कर दिया थी.

बंटी की मां लोगों के घरों में बर्तन मांजने का काम करती थी और उसके पिता ई रिक्शा चलाते थे.

बंटी जिस स्कूल मेंपढ़ता था उसमे अमीर घर के ज्यादा बच्चे पढ़ते थे. जो हमेशा अपनी अमीरी में चूर रहते थे.

एक रोज बंटी दोपहर का खाना खा रहा था तभी उसका दोस्त सोनू उसके पास आ कर बोला, बंटी जरा मैं भी देखूं तुम्हारी मां खाने में क्या बना कर देती है. "

बंटी ने पराठा और आलू गोभी की सब्जी सोनू के तरफ कर बोला देख लो!

बंटी का खाना देख कर सोनू बोल पड़ा ऐसा खाना तो मेरा कुत्ता भी नहीं खाता है. ऐसा खाना आज जिन्दगी में पहली बार देख रहा हूं.

सोनू तुम कुछ भी कह लो कोई फर्क नहीं पढ़ने वाला है. मैं अमीर बाप का बेटा नहीं हूं जो पिज्जा,बर्गर ,पनीर की सब्जी और पुलाव,कचौरी खाने को ले कर आऊं. मैं गरीब मां बाप का बेटा हूं.

बंटी की स्कूल से छुट्टी होने पर सोनू ने अपने सभी दोस्तों से बंटी के खाने के बारे में बता कर खूब हंसी उड़ा रहा था. मगर बंटी ने कुछ भी नहीं बोला.

सर्दी का मौसम शुरु हो गया था स्कूल के सभी बच्चे गर्म कपड़े पहन कर स्कूल आ रहे थे वो भी नये-नये.

मगर बंटी जब पुराना स्वेटर पहन कर पहले दिन स्कूल आया तो सभी बच्चे बंटी को पुराना स्वेटर पहने देख कर खूब कारण चिढ़ाने लगे.

यह बात जब स्कूल के टीचर ओम वर्मा के कानों में गई तो वे गुस्से से आग बबूला हो गए और स्कूल में आए सभी बच्चों को खडा़ कर के पूछ पड़े बताओ कौन कौन बंटी को पुराना स्वेटर देख कर चिढ़ा रहा था ?"

मास्टर साहब की बात सुन कर सभी बच्चे डर कर थर-थर कांपने लगे. काफी देर के बाद जब दोबारा वर्मा टीचर ने बच्चों से पूछा तो सभी बच्चे कुछ नहीं बता रहे थे.

तभी बंटी बोल पड़ा सर मेरी तरफ से आज इनको माफ कर दीजिए फिर दूसरी बार अगर ऐसा करेंगे तो इन्हें जो चाहे वह सजा दीजिएगा.

बंटी की बात सुन कर वर्मा सर सबको माफ कर के बच्चों को पढा़ने लगे.

शाम को जब स्कूल से छुट्टी हुई तो स्कूल के सभी बच्चे बंटी को खूब धन्यवाद देने लगे और कहने लगे अगर बंटी ने हमें माफ नहीं किया होता तो वर्मा सर की खूब मार खानी पड़ती आज से हम सब वादा करते हैं,की अब बंटी को कभी नहीं चिढ़ायेंगे.

अगले दिन बंटी जब स्कूल आया तो वर्मा सर ने अपने पास बुला कर उसका पुराना स्वेटर उतरवा कर अपने साथ लाए नया स्वेटर पहना कर बोले बंटी को अब कोई नहीं चिढ़ाएगा.

नया स्वेटर पहन कर बंटी बहुत खुश हो गया. और वर्मा सर को खूब धन्यवाद देने लगा.

*****

पौधा हमर संगवारी

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

झन काटौ रे, पौधा ल झन काटौ रे.
लगावव रे, जुर-मिल पौधा लगावव रे.
पौधा हमर संगवारी, एला जानव नर-नारी.
झन काटौ रे, पौधा ल झन काटौ रे.

कतका जतन के संगी, पौधा ल जगाए हन.
छेरी पठरु गाय गोरु ले, खाये ल बचाए हन.
दू अऊ दू चार होही, पौधा हजार होही रे.
झन काटौ रे, पौधा ल झन काटौ रे.

पौधा हम ला देथे फर-फूल, दवा आक्सीजन.
मोटर गाड़ी कारखाना, फैलाथे प्रदुषण.
हवा म प्रदुषण फैलही, जिनगी ह दूभर होही रे.
झन काटौ रे, पौधा ल झन काटौ रे.

तपते धूप म, मनखे सकलाएं हे.
लगाए हे पौधा जेहर, पुन ल ओहर पाएं हे.
मुक्ति पाए बर भईया, लगा ल तुमन पौधा रे.
झन काटौ रे, पौधा ल झन काटौ रे.

*****

आर.टी.ई.

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

आरटीई इम्तिहान लेती है, आरटीई इम्तिहान लेती है.
पालकों की जांच,छात्रों की जांच,शिक्षकों की जांच करती है.

आरटीई में अड़तीस धारायें, आरटीई में सात अध्याय.
आरटीई में एक अनुसूची, आरटीई में एक अनुसूची.
धारायें इम्तिहान लेती है, धारायें इम्तिहान लेती.
पालकों की जांच,छात्रों की जांच,शिक्षकों की जांच करती है.

एक अप्रैल दो हजार दस से, एक अप्रैल दो हजार दस से.
लागू है यह पूरे देश में, लागू है यह पूरे देश में.
हम सब की इम्तिहान लेती है,हम सब की इम्तिहान लेती है.
पालकों की जांच,छात्रों की जांच,शिक्षकों की जांच करती है.

आरटीई इम्तिहान लेती है, आरटीई इम्तिहान लेती है.
पालकों की जांच,छात्रों की जांच,शिक्षकों की जांच करती है.

*****

बिल्ली-मौसी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

बिल्ली मौसी कहाँ चली,
सज-सँवरकर बड़ी भली.
खूब फब रही है साड़ी में.
निकली है आज गाड़ी में.
कंधे में बैग लटकाई है.
काला चश्मा लगाई है.
जो लग रही है, अनारकली.
बिल्ली मौसी कहाँ चली,

*****

प्यारा तोता

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

हरे रंग का प्यारा तोता.
चोंच लाल-लाल है होती.

लाल मिर्च खूब खाता है.
टर्र-टर्र का गीत सुनाता है.

नाम है इसका गंगाराम.
सबको कहता जय श्रीराम.

*****

बालदिवस

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, पहंडोर

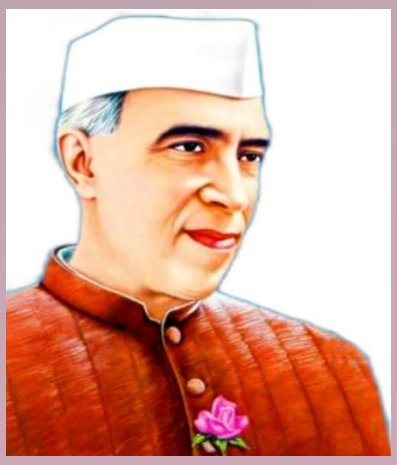

बाल-दिवस बच्चों का दिन,
खुशियाँ थिरके उनके पास.
जन्म-दिवस चाचा नेहरू का,
माह नवम्बर सबसे खास.

चल रही तैयारी आनंद मेले की,
सज जाएगा स्कूल.
खिलखिलाएँगे बच्चे सारे,
ज्यों बगिया के फूल.

जीवन उनका हो खुशहाल,
रहे ना कोई बच्चा उदास.
बाल-दिवस बच्चों का दिन,
खुशियाँ थिरके उनके पास.

जन्म-दिवस चाचा नेहरू का,
माह नवंबर सबसे खास.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

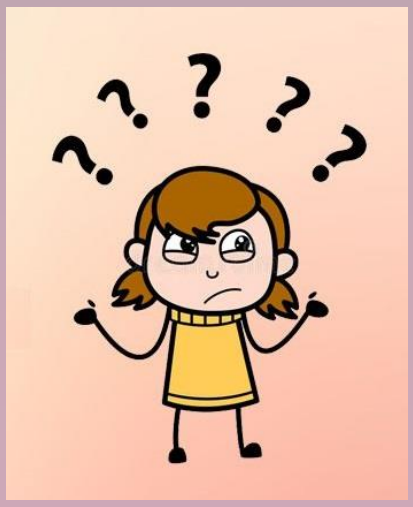

1. गुच्छों में ही हैं बिकते
गोल अथवा लंबे दिखते
मीठा - मीठा उसका स्वाद
खट्टा रहे देर तक याद

2. कानों में भिन-भिन करता
नहीं काटने से डरता
पीता खून, न दम लेता
झट बीमार बना देता

3. दीवालों से चिपकी रहती
कीटों को चट कर जाती
कभी न पानी यह पीती
दौड़ न कभी लगा पाती

4. हाइड्रोजन - ऑक्सीजन से बना हूँ
मेरा कोई नहीं है रंग

स्वाद न कोई, पर पीते सब
प्यासे लोग बहुत हों तंग

5. पंख हरे हैं, चोंच है लाल
'टें टें' करे पेड़ की डाल
लाल मिर्च अच्छी लगती
नकल उतारे, करे कमाल

*****

उत्तर – 1. अंगूर 2. मच्छर 3. छिपकली 4. पानी 5. तोता

टेडी बियर

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया, रायपुर

टैडी बियर ओ टैडी बियर
लगते हो तुम कितने सुंदर.

बाल तुम्हारे कितने झबरीले,
माथे पर हैं सुंदर फैले फैले.

रंग तुम्हारा कितना क्लियर,
करते हो तुम हमेशा चीयर.

जिनके पास हों ज्यादा खिलौने,
नाटे, मोटे, पतले और सलोने.

जिनके पास नहीं है खिलौनें.
उन को भी दे दें थोड़े खिलौनें.

आओ सब मिलकर खेलें खिलौनें,
सब के साथ बाटें खुशियां के मेले.

*****

जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम", धमतरी

तोर कोरा म इंद्राबती महानदी के लहरा,
महर महर महमाथे बासमती गुरमतिया,
अन धन के भंडार भरे तोर कोरा म दाई,
तोला कहिथे सुग्घर घलो धान के कटोरा,
जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

अंतस ल भाथे मैना कस तोर मीठ-मीठ बोली,
अब्बड़ सुग्घर जस ह बगरे छत्तीसगढ़ महतारी,
कौशल्या कस बेटी हावे राम सही जी भांचा,
दस बच्छर बन म काटिन तोर कोरा म दाई,
जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

गिल्ली डंडा भौरा बांटी अउ हावे ठेठरी खुरमी,
सरई साल अब्बड़ सुग्घर तोरेच घलो चिन्हारी,
गोंदा फूल कस मुस-मुस हाँसथ नाचत गावत,
सिधवा मनखे तोर कोरा म हावे घलो मितानी,
जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

हे महामाया रतनपुर अउ डोंगरगढ़ बम्बलाई,
सिरपुर तोरे गाथा कहिथे बस्तरहिन महामाई,
पुरवाहि कस घेरी बेरी संग संग डोलत रहिबे,
तोर अँचरा के छहिंयां सुग्घर सदा रहे मोर दाई,
जय जय होवय ओ मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

*****

अम्मा अब तो सर्दी आई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

अम्मा अब तो सर्दी आई.
लगती मुझको यह दुखदाई.

हाथ पैर में आती ठिठुरन,
माँस पेशियों में है जकड़न,
ऐसे कैसे करूँ पढ़ाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

सर्द हवाएँ चलती दिनभर,
भाता है मन को ही बिस्तर,
दुबका हूं भीतर रजाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

तन कहता अब नहीं नहाऊँ,
मन करता स्कूल न जाऊँ,
कितने करो अब जतन भलाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

अम्मा अब तो सर्दी आई.
लगती मुझको यह दुखदाई.

*****

हम जनता सबके मालिक हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

सरकार कानून सब साथ देंगे
बस हमें कदम बढ़ाना है
हम जनता सबके मालिक हैं
यह करके दिखाना है.

एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है
यह जरूर होगा पर
इसकी पहली सीढ़ी
अपराध को ह्रदय से निकालना है.

कलयुग से अब सतयुग हो
ऐसी चाहना है
हम सब एक हो ऐसा ठाने
तो ऐसा युग जरूर आना है.

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाहना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है.

सबसे पहले खुद को
इस सोच में ढलाना हैं
फिर दूसरों को प्रेरित कर
जिम्मेदारी उठाना है.

ठान ले अगर मन में
फिर सब कुछ वैसा ही होना है
हर नागरिक को परिवार समझ
दुख दर्द में हाथ बटाना है.

इस सोच में सफल हों
यह जवाबदारी उठाना है
मन में संकल्प कर
इस दिशा में कदम बढ़ाना है.

इंसानियत को जाहिर कर
स्वार्थ को मिटाना है
बस यह बातें दिल में धर
एक नया भारत बनाना है.

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने
ऐसी चाहना है
भारत फिर सोने की चिड़िया हो
ऐसी भावना है.

*****

पंछी बन जाएँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

चलो कुछ कर जाएँ,
हम पंछी बन जाएँ.

नील गगन उड़ते हुए.
चींव-चाँव करते हुए.
नदी पर्वत देख आएँ.
हम पंछी बन जाएँ.

पड़े हुए दानों को.
पके हुए फलों को.
मिल-बाँट कर खाएँ.
हम पंछी बन जाएँ.

बना कर स्वयं घोंसला.
मन में रख हौसला.
अच्छे से रह पाएँ.
हम पंछी बन जाएँ.

*****

देश में छूटी माँ का दर्द

रचनाकार- पूजा गुप्ता, उत्तर प्रदेश

आजकल पैसे की चकाचौंध और सुनहरे भविष्य की चाह ने भारतीय बच्चों को विदेश में खींच लिया है,और उसके पीछे छूट गई है उनकी माँ. माँ का अकेलापन क्या होता है, उनका यादों में लिपटा हुआ जीवन बहुत तकलीफदेह होता है.

"मेरी आँखे रो पड़ी भीगा माँ का आंचल. मन से मन की बात पढ़ जानी दिल की बात!"

आजकल यह लिखी हुई पंक्तियां भी कहीं धूमिल हो गई है. कितने साल गुजर जाते हैं,एक बच्चे को पालने में माँ के, उसके बाद पीढ़ी दर पीढ़ी सभी जवान हो जाते हैं और बदल जाता है उनका जीवन और उनकी जीवन शैली. आजकल बात करने के माध्यम, एक दूसरे की जानकारी के लिए भले ही इंटरनेट सेवाएं उपलब्ध हो गई है.फोन पर बात करना सरल हो गया हो और कई रिश्तें की भावना ने, संवेदना ने भले ही कई बार सांप की तरह केंचुली उतार ली हो, लेकिन मां-बेटे बेटियों का रिश्ता आज भी इस देश में गर्माहट के साथ मौजूद है. जमाना भले ही कई तकनीकी प्रतिस्पर्धा, व्यवसायिक कंप्यूटर, अधिक से अधिक धन कमाने और सुखी संपन्न ने बनने का हो गया हो, लेकिन एक ही झटके में इंटरनेट जैसे उपकरण आने पर लोगों ने चिट्ठी और तार की दुनिया बदल दी. आजकल लोग चिट्ठी कहांँ लिखते हैं. खत के जमाने भी ना जाने कहां खो गए, लेकिन आज भी मां-बेटे-बेटियों का रिश्ता कायम है.

सभी की आकांक्षाएं और कामनाओं की लिस्ट बहुत लंबी है समय बहुत कम है और संघर्ष बहुत बड़ा. जीवन की परिभाषाओं में बहुत फेरबदल हुआ हो पर विदेश में बसा हुआ बेटा माँ को बहुत याद करता है और कुछ बेटे अपनी माँ को विदेश में बसने के बाद अकेला छोड़ दिए हैं. उनके पास अपनी मां के लिए वक्त ही नहीं. इतनी एडवांस तकनीक आने की वजह से कुछ नई संगत से बच्चों के व्यवहार भी बदल रहे है.बेटा और बेटियां कमाने के लिए बाहर चले जाते हैं,अपने सपनों को पूरा करने के लिए, पैसे कमाने में उस मां को छोड़ जाते हैं. कुछ बच्चे वादा करते हैं कि वह लौटकर आएंगे और कुछ बच्चे विदेश में ही रहकर अपना घर बसा लेते हैं फिर वह भारत में रह रही मां के पास आना उचित भी नहीं समझते हैं. मां जिंदा है या मर गई है उन्हें परवाह भी नहीं होती है और बस डाक द्वारा पैसा भेज देते हैं यही बहुत होता है. कुछ बेटा-बेटियां रोजाना अपने मां के संपर्क में रहते हैं और यह विश्वास दिलाते हैं कि,अब हम आएंगे जरूर से आएंगे और मां तुम्हारा सपना हम पूरा करेंगे.

एक मां बचपन से अपने बच्चों की हर तकलीफ को समझती है. बेटा क्या खाता है? क्या पीता है? उसे बचपन में क्या पसंद था जब रूठ जाया करता था तो वह उसे कैसे मनाती थी,और मां दूसरे कामों को निपटा कर अपने बच्चे की परवरिश में लग जाती थी. बच्चे कब बड़े हो गए पता ही नहीं लगा और चले गए अपनी मंजिल पाने. आज भी भारत वर्ष में ऐसी कई माऐं हैं जिनके आंसू थम नहीं रहे. वह अपने बेटे की आने की प्रतीक्षा में रोती रहती है उनकी व्यथा को समझने वाला कोई नहीं होता है. मां परिवार में कितना भी सबके साथ हंस बोल ले, लेकिन एक तन्हाई

अपने बच्चों के लिए जरूर से उसके मन में होती है. मां बीमार हो जाती है तब चिट्ठियां भेजी जाती है, तब बच्चों के फोन आते हैं! उसके बाद भी कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो यह कहते हैं कि किसी कारणवश नहीं आ पाएंगे मां! अपना ख्याल रखना. सोचो उस समय उस मां पर क्या बीतती होगी. अकेले रहने वाली मां कितने भी डॉक्टर के चक्कर लगा ले, लेकिन अपने बेटा-बेटियों का विछोह बर्दाश्त नहीं कर पाती है.

कुछ बेटा-बेटी विदेश में अपनी मां को बहुत मिस करते हैं, उनके बनाए हुए खाने की याद उन्हें सताती है जब उन्हें विदेश में मां के जैसे बना हुआ भोजन नहीं मिलता है, तो वह अपनी मां को याद करते हैं और उन्हें हमेशा फोन करते रहते है. दिनभर की आपबीती वह अपनी मां से शेयर करते हैं और वीडियो कॉल करके अपनी मां को रूबरू देखते हैं, उनके लिए समय देते हैं जिससे मां को भी यह तसल्ली रहती है कि हमारे बच्चे जहां भी हैं सुरक्षित है और बेटा-बेटियों को भी तसल्ली हो जाती है कि हमारी मां किस हाल में है. कई बार ऐसा हुआ है कि त्यौहारों में बच्चे अपनी मां के पास नहीं आ पाते हैं, लेकिन जब भी आते हैं तो अपनी मां को गले से लगा लेते हैं, उनके सामने वही छोटे बच्चे बन जाते हैं और मां भी अपने बेटा-बेटियों को उनके मनपसंद का खाना खिलाती है जब तक वह घर में रहते हैं.

एक मां को चिंता रहती है कि जब मेरे बच्चे बाहर रहते हैं तो वह क्या खाते पीते हैं? कैसे रहते होंगें? इसलिए बेटा-बेटियों के आते ही उनकी आवभगत में मां लग जाती है. बस मैं इतना कहना चाहती हूं जो बच्चे बाहर जाकर अपनी मां से अलग रह रहे हैं, वह अपनी मां के संपर्क में सदा रहे. अपने परिवार से कांटेक्ट बनाए रखें ताकि घर में रह रही मां अकेली ना पड़े. मां से अच्छा दोस्त कोई नहीं होता है, यह बात बच्चे समझ ले तो विदेश में भी मां-बेटा बेटियों को एक दूसरे से अलग ना होना पड़े. प्रेम की भाषा सभी समझते है अपनें प्रेम पर आस्था बनाए रखें. भावुकता की नदी में बहती हुई मां हमेशा बच्चों का भला चाहती है और अपना दिल कठोर करके बच्चों को बाहर भेजती है पढ़ने के लिए. बच्चे इसका दुरुपयोग ना करें, अच्छी संगति करें, अच्छे लोगों के बीच में रहे. जितना हो सके मां के लिए विदेश से नई-नई चीजें भेजते रहें ताकि आपके भेजे हुए उपहार में मां आपका प्रेम महसूस कर सके. सभी त्यौहारों में फोन लगाकर मां से हंस बोल कर बात कर लेने से मां को इतनी खुशी मिलेगी इसकी कल्पना जैसे स्वर्ग मिल गया हो एक मां को. बच्चे अपनी भारतीय संस्कृति ना भूले बीच-बीच में आकर अपनी मां की तकलीफ समझ कर उन्हें सुख प्रदान करें. छोटी-छोटी खुशियों में अपनी मां के साथ समय बिता लेना पर अपनी मां को कभी अकेला मत छोड़ना, क्योंकि मां की पीड़ा केवल मां ही जानती है, बस बच्चों को इसका एहसास होना अति आवश्यक है. यदि कार्य के कारण बच्चे व्यस्त हैं तो उससे ज्यादा वक्त अपने परिवार अपनी मां को दीजिए. दूर रहकर प्रेम की डोर को बांधे रखिए, तभी अपनी मां की पीड़ा को आप समझ पाएंगे! उनका प्रेम समझ पाएंगे. बस याद रखिए "सब पराये हो जाए, पर मां पराई कभी ना होए"!

*****

वृक्ष लगाए

रचनाकार- श्रीमती अनिता गौर

आओ प्यारे वृक्ष लगाए,
धरती को हम स्वर्ग बनाए.
पथिको को विश्राम दिलाए,
मीठे -मीठे फल हम खाए.

धर्म ,कर्म ,नेकी की खातिर,
पुरखों ने संतान बनाए.
प्राणों की रक्षा करने को ,
आओ प्यारे वृक्ष लगाए.

राजाओं ने महल बनाकर,
बाग -बगीचे लगवाए.
माली ने उसे सींच -सींच कर
सुंदर सुंदर फूल सजाए.

आग उगलती इस धरती पर,

थोड़ी सी ठंडक दे जाए.

परिंदो को ,नीड़ मिल जाए,

आओ प्यारे वृक्ष लगाए.

*****

मैं खोजने बैठी हूँ

रचनाकार- पूजा गुप्ता, उत्तर प्रदेश

मैं आज खोजने बैठी हूँ बचपन को
शाम के आगोश में आँखे बंद करके.
आराम के कुछ पलों में एकांत में,
मैं खोजने चली अल्हड़पन ढूढ़ने.

कितनी कठिनाइयां है जीवन में,
ना जाने कितनी परेशानियों के बीच.
समय की धारा में बहती हुई यादें मेरी,
दर्द समेट कर उसे ही भूलने चली हूँ.

वो छुपा छुपी के खेल में सब को ढूंढना,
वो मिट्टी पर छोटे छोटे घर बनाना.
उसी जगह पर बैठ कर मै ढूढ़ रही हूँ,
अपनी खोई हुई बचपन की मीठी यादें.

पिटुक, कंचे, टायरों को गोल गोल घुमाना,
राहों में पड़े हुए पैसे मिलने पर खुश होना.
गली में दौड़ लगाना,खुले नल से पानी पीना,
मम्मी पापा का प्यार तो कभी डांट लगाना.

बत्ती का जाना आना सब का शोर मचाना,
नुक्कड़ की बत्ती की रोशनी में रात को पढ़ना.
विद्यालय की सड़को पर फिर निकली हूँ मैं,
खोजने अपने बाल्यकाल की छाया को.

बारिश में भीगते हुए विद्यालय में जाना,
काली बरसाती में अपने बस्ते को बचाना.
किताबें भीगने पर उसे छत पर सुखाना,
मैं खोजने चली हूँ अपने फटे काले जूते.

मैं आई हूँ आज उन गलियों में खोजने,
अपनी सहेलियों के वो पुराने सुंदर घर.
उनके घर पर उनके परिजनों का गले लगना,
फिर घण्टों बैठ कर हँसी ठिठोली करना.

शाम को बुजुर्गों की टोली, वो उनकी चौपाल,
वो मंदिरों की घंटी की आवाज सुनने बैठी हूँ.
वो दिवाली पर रंग बिरंगे मिट्टी के खिलौने,
वो सहेलियों संग बिताये लम्हों को खोजने.

ना गली भरी अब ना वो खेलने वाले बच्चें,
अब नहीं मिलते वो संगी साथी सच्चें.
मैं खोजने चली हूँ वो गुल्ली और डंडे,
वो कॉमिक्स की दुकानों के अस्तित्व.

वो एकजुट परिवारों की एकता खोजने,
साथ बैठ कर टीवी देखते वो कुटुंब.
वो बहन की छोटी खींचना बार बार,
और इल्ज़ाम किसी और पर लगाना.

वो खुली छत एक चारपाई पर सोना,
सब के साथ मिल कर अंताक्षरी खेलना.
तारों के झुंड की आकृति बनाना उन्हें गिनना,
शाम के आगोश में मैं खोजने चली बचपन को.

फुर्सत के रविवार को रामायण देखना,
वो मोगली का चड्डी पहन कर फूल खिलना.
चंद्रकांता, शक्तिमान, अलिफ लैला की दास्ताँ,
मैं खोज रही हूँ पुराना टीवी टेलीरामा.

*****

रुकना मना हैं

रचनाकार- नंदिनी राजपूत, कोरबा

इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में रुकना मना है दोस्तों.
सुबह उठकर जब योग व्यायाम करते हैं,
बच्चों के लिए नाश्ता बनाना है यह ध्यान में रखते हैं.
गरमा -गरम नाश्ता जब मुंह में जाता है,
फटाफट स्कूल जाना है यह याद आता है.

इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में रुकना मना है दोस्तों.
स्कूल प्रार्थना में अगर थोड़ा लेट हो जाता है,
कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक का मन आत्मग्लानि से भर जाता है.
10:00 बजे से लेकर 4:00 बजे तक जब बच्चों को पढ़ाते हैं,
खुद के चेहरे पर आत्म संतुष्टि का झलक देख पाते हैं.

इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में रुकना मना है दोस्तों.
शाम होते ही जिम्मेदारियों का बोझ सताता है.
पेंडिंग कामों को पूरा करना है, यह सोच मन दुखित हो जाता है
दिन भर के काम से जब बेचारा शरीर थक जाता है.

रात का डिनर बनाना बाकी है,यह फिर याद आता है.

इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में रुकना मना है दोस्तों

जिंदगी में सफलता पाने के लिए थकना मना हैं दोस्तों

*****

सप्ताह

रचनाकार- प्रीति श्रीवास

सोमवार को नानी आई
मंगलवार को बनी मिठाई
बुधवार को सबने खाई
गुरुवार को मौज उड़ाई
शुक्रवार नानी चली गई
शनिवार को रोना आई
मम्मी ने जब कुल्फी दिलाई
रविवार को हंसना आई
सप्ताह के सात दिन भाई
सबने मिलकर ताली बजाई.

*****

जैविक घड़ी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

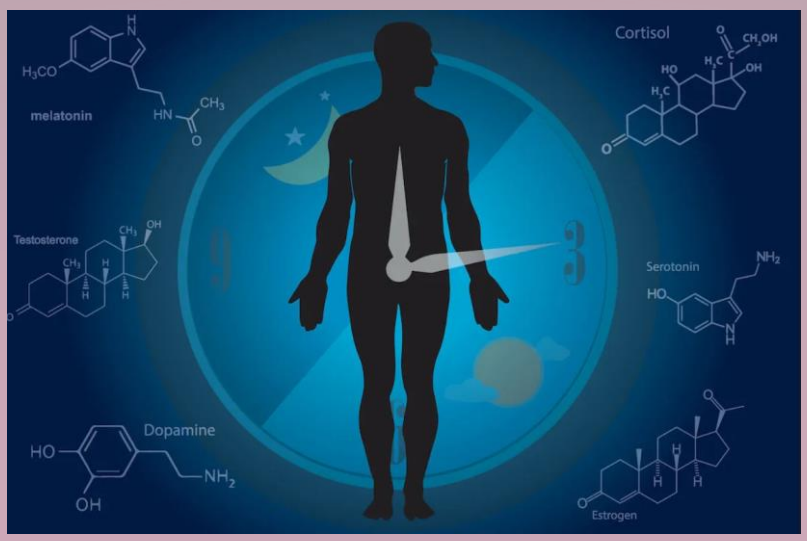

मन - मस्तिष्क में स्वसंचालित
आओ! जैविक घड़ी को जाने.

मस्तिष्क के केंद्र के पास ही
हाइपोथैलसम में है स्थित,
तंत्रिका तंत्र - कोशिकाओं से
बीस हजार न्यूरान से निर्मित,

श्वास - रक्तचाप प्रणाली को भी
अवचेतन गतिविधि पहिचाने.

मनुष्य मात्र न केवल प्राणी
जिसमें जैविक घड़ी प्रणाली,
स्तनधारी पक्षी, सरीसृप
मछली में भी 'घड़ी' निराली,

पौधे, कवक, बैक्टीरियों में
जैविक घड़ी की रचना माने.

चक्र जागने - सोने का हो
या शरीर का ताप नियंत्रण,
रक्तचाप का बढ़ना - घटना
इसी से हो नियमित अभिमंत्रण,

स्वास्थ्य को सदा प्रभावित करते
मस्तिष्क के संकेत सुहाने.

पर्यावरणीय प्रकाश - तिमिर से
अंतःस्रावी तंत्र समन्वित,
हार्मोन सक्रिय हो जाते
निश्चित मात्रा - समय पर निश्चित,

चयापचय क्रिया के साथ ही
कुछ बदलाव भी लगते आने.
आओ! जैविक घड़ी को जाने.

*****

जल ही अमृत है, जल ही औषधि है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों से विश्व का हर देश त्रस्त है, क्योंकि इन कुदरती त्रासदियों को रोक पाने की तकनीकी का ईजाद अभी तक नहीं किया जा सका है. इन प्राकृतिक त्रासदियों के मूल रूप से जवाबदार भी हम मानव ही हैं, क्योंकि हमने सृष्टि के प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुँचाकर नष्ट करने का काम हमने ही किया है. इसलिए इन संसाधनों को बचाने के लिए उपाय भी हमें ही करने होंगे ताकि आगे चलकर त्रासदी की विभीषिका से बचा जा सके. 1 से 5 नवंबर 2022 तक ग्रेटर नोएडा यूपी में सातवाँ पाँच दिवसीय भारतीय जल सप्ताह 2022 सफलतापूर्वक आयोजित किया गया जिसमें जल संसाधनों के संरक्षण और उनके एकीकृत उपयोग के प्रयासों के प्रति जागरूक किया गया, जिसमें वैश्विक स्तर के निर्णय निर्धारकों शोधकर्ताओं उद्यमियों राजनीतिज्ञों द्वारा मंथन किया गया और उनकी राय जानी गई. इसकी थीम सतत विकास और समानता के लिए जल सुरक्षा थी जिसकी दुनिया के जल विशेषज्ञों योजनाकारों हितधारकों को एक मंच पर लाया गया जिसमें डेनमार्क सिंगापुर फिनलैंड शामिल हुए अनेक संगोष्ठीयों, पैनल चर्चाएँ, प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिसका दूरगामी सकारात्मक परिणाम जल संरक्षण और सुरक्षा हमें देखने को मिलेगी. जल सप्ताह 2022 के 5 नवंबर 2022 को समापन पर माननीय उपराष्ट्रपति के संबोधन को देखें तो उन्होंने कहा कि यह समारोह संकल्प की शुरुआत है. दुनिया भर के लोगों का यहाँ आना, इस विषय पर चर्चा-चिंतन करना और समाधान का रास्ता दिखाना बड़ी उपलब्धि है. जल हमारी प्राचीन संस्कृति से जुड़ा हुआ है. ऋग्वेद में व्याख्या की गई है कि जल ही अमृत है, जल ही औषधि है. सुरक्षित पेयजल तक पहुँच न केवल जीवन के लिए आवश्यक है बल्कि इसका सीधा असर लोगों के स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर पड़ता है. जल जीवन मिशन की सफलता के लिए हमें क्वालिटी, क्वांटिटी, और कम्युनिटी पर फोकस करना होगा.कार्यक्रम के आयोजक जल शक्ति मंत्री ने कहा कि जल संरक्षण में जो कुछ हमने हासिल किया है, वह सबके लिए है. हम सब साथ में सोच विचार करें ताकि सभी का जीवन सुगम हो. पानी की चुनौती हम सबके समक्ष है. भारत जैसे अनेक

देश विकास की दौड़ में हैं, जिनके लिए यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है. जल सप्ताह-2022 के दौरान जल के भंडारण और सबको समान रूप से जलप्रदाय को लेकर मंथन किया गया है. हमारे उपयोग में किस प्रकार का दृष्टिकोण होना चाहिए, यह महत्वपूर्ण है. भारत में जल व स्वच्छता के मामले में पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम हो रहा है और देश एक रोल मॉडल के रूप में उभर रहा हैं. पीएम के नेतृत्व में गति व समयबद्धता के साथ लक्ष्य पूर्ति के लिए तत्परता से काम किया गया है.

हम भारत जल सप्ताह के उद्घाटन समारोह में माननीया राष्ट्रपति के संबोधन को देखें तो उन्होंने कहा,कि बढ़ती आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना आने वाले वर्षों में एक बड़ी चुनौती होगी. पानी का मुद्दा बहुआयामी और जटिल है, जिसके लिए सभी हितधारकों को प्रयास करने चाहिए. हम सभी जानते हैं कि पानी सीमित है और केवल इसका उचित उपयोग और पुन उपयोग ही इस संसाधन को लंबे समय तक बनाए रख सकता है. इसलिए, हम सभी को इस संसाधन का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करने का प्रयास करना चाहिए. उन्होंने लोगों से इसके दुरुपयोग के बारे में जागरूक होने और दूसरों को जल संरक्षण के बारे में जागरूक करने का भी आग्रह किया. उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस 7 वें जल सप्ताह के दौरान विचार-मंथन के परिणाम इस पृथ्वी और मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्तकरेंगे. उन्होंने आम लोगों, किसानों, उद्योगपतियों और विशेषकर बच्चों से जल संरक्षण को अपनी नैतिकता का हिस्सा बनाने की अपील की. उन्होंने कहा कि इसी तरह हम आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर और सुरक्षित कल का तोहफा दे पाएंगे. उन्होंने कहा कि पानी का मुद्दा न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है.यह मुद्दा राष्ट्रीयसुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है क्योंकि उपलब्ध मीठे पानी की विशाल मात्रा दो या दो से अधिक देशों के बीच फैली हुई है. इसलिए, यह संयुक्त जल संसाधन एक ऐसा मुद्दा है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है. उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 7 वें भारत जल सप्ताह में डेनमार्क, फिनलैंड, जर्मनी, इज़राइल और यूरोपीय संघ भाग लिया हैं. उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस मंच पर विचारों और प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान से सभी लाभान्वित होंगे. उन्होंने कहा कि जल के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है. भारतीय सभ्यता में जल जीवन में ही नहीं जीवन के बाद की यात्रा में भी महत्वपूर्ण है. इसलिए सभी जल स्रोतों को पवित्र माना जाता है. लेकिन फिलहाल स्थिति पर नजर डालें तो यह चिंताजनक लगती है. बढ़ती आबादी के कारण हमारी नदियों और जलाशयों की हालत बिगड़ रही है, गाँव के तालाब सूख रहे हैं और कई स्थानीय नदियाँ विलुप्त हो गई हैं. कृषि और उद्योगों में पानी का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है. पृथ्वी पर पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है, मौसम का मिजाज बदल रहा है और बेमौसम अत्यधिक वर्षा आम बात हो गई है. ऐसे में जल प्रबंधन पर चर्चा करना बहुत ही सराहनीय कदम है. पानी कृषि के लिए भी एक प्रमुख संसाधन है. एक अनुमान के अनुसार हमारे देश में लगभग 80 प्रतिशत जल संसाधन का उपयोग कृषि कार्यों के लिए किया जाता है. इसलिए जल संरक्षण के लिए सिंचाई में पानी का उचित उपयोग और प्रबंधन बहुत जरूरी है. इस क्षेत्र में पीएम कृषि सिंचाई योजना एक प्रमुख पहल है. देश में सिंचित क्षेत्र को बढ़ाने के लिए यह राष्ट्रव्यापी योजना लागू की जा रही है. जल संरक्षण लक्ष्यों के अनुरूप, इस योजना में प्रति बूंद अधिक फसल सुनिश्चित करने के लिए सटीक-सिंचाई और जल बचत प्रौद्योगिकियों को अपनाने कीभी परिकल्पना की गई है.

*****

पश्चात्ताप

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

इक दूसरे को देख कर, पीछे उसी के भागते.
आगे रहे उनसे सदा, लिप्सा भरे वे जागते.
राहे बुरे भी क्यों न हो, चलना कभी ना छोड़ते.
रोके अगर मनमीत जी, मुँह को उसी से मोड़ते.

नीचा दिखाते दूसरों, को क्या जमाना आ गया.
ऊँचा बढ़े रुतबा यहाँ, छल-द्वेष मन में छा गया.
ना मोह पैसों का रहे, चलते रहे निक बाट को.
जीवन नदी को तैर कर, पा जाय मानव घाट को.

सोचे नहीं समझे नहीं, बनती जवानी शेर ज्यों.
कटिभाग बूढ़े डोलते, होते वहीं है ढेर क्यों.
साथी छूटे सच्चे सभी, खिसकी धरा पैरों तले.
साँसे चले अंतिम सफर, माथा धरे दुइ कर मले.

*****

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

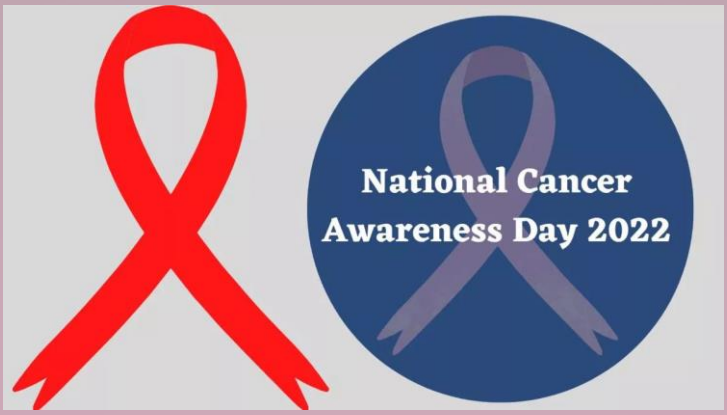

ख़ुद जागें औरों को जगाएँ
देर न अब पल भर की लगाएँ
फैलाकर जागरूकता गली गली हम
विश्व को आओ कैंसर मुक्त बनाएँ

आजकल की भागदौड़ भरे और संघर्षपूर्ण जीवन में शायद ही कोई मनुष्य ऐसा होगा जिसे किसी बात का तनाव न हो. दूसरे शब्दों में कहा जाए तो चिंता और तनाव हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं, जिनसे लंबे समय तक बच पाना हम में से किसी के लिए भी संभव नहीं है. मनुष्य के शरीर के भीतर क्या कुछ घटित हो रहा होता है,एक सामान्य इंसान को इसकी बहुत जल्दी जानकारी नहीं होती है. कोई परेशानी होने की अवस्था में ही हम चिकित्सक के पास जाते हैं और आवश्यक टेस्ट करवाते हैं. उसके बाद ही हमें मालूम पड़ता है कि हमारे शरीर के किस हिस्से में क्या समस्या है और समस्या का पता चलने पर हम उसके उपचार में लग जाते हैं.

परंतु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमें अपने शरीर के अंदर होने वाली समस्याओं का काफी देर से पता चलता है. हमें एहसास ही नहीं होता कि हमें कोई समस्या है भी और जब तक हमें उस समस्या के बारे में आभास होना शुरू होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है. आप सभी ने अपने जीवन में कभी न कभी डॉक्टर्स को यह कहते अवश्य सुना होगा कि अगर आप कुछ समय पहले आए होते तो आपकी यह समस्या इतना गंभीर रूप नहीं लेती और समय पर इसका इलाज भी किया जा सकता था, परंतु अब आपके पास समय बहुत कम है, आप तुरंत अपना उपचार शुरू कीजिए ताकि आपको अमुक समस्या से होने वाली पीड़ा कम से कम सहन करनी पड़े.

कुछ साल पहले तक जिन बीमारियों के नाम हम कभी कभार सुनते थे, वे बीमारियाँ आजकल बहुत सामान्य हो गई हैं और लोग उन बीमारियों की चपेट में शीघ्रता से आने लगे हैं.

वजह चाहे जो भी हो परंतु समय पर निदान और इलाज न मिल पाने के कारण समस्या बढ़ जाती है और तीर कमान से निकलने के बाद वापस नहीं आता अर्थात उस बीमारी के सामने हम स्वयं को असहाय महसूस करते हैं और अपने घुटने टेक देते हैं,जो कि सही नहीं है,क्योंकि

गिरते हैं शहसवार ही मैदान-ए-जंग में
वो तिफ़्ल क्या गिरेंगे जो घुटनों के बल चलें

अर्थात किसी भी समस्या के सामने घुटने टेकने से पहले प्रयास करना आवश्यक है. अपना शत प्रतिशत देने के बाद ही हम खुद को यह कह कर कि हमारे प्रयासों में कोई कमी नहीं थी फिर भी हमें सफलता नहीं मिली, संतुष्टि दे सकते हैं.

इसी प्रकार की गंभीर बीमारियों में एक कैंसर भी है जिसका नाम आजकल छोटे बच्चों को भी मालूम है क्योंकि कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. परंतु यह जानकारी किस स्तर की है यह कह पाना मुश्किल होगा क्योंकि आज के आधुनिक युग में भी कैंसर जैसी बीमारियों के प्रति लोगों में अंधविश्वास है मिथक हैं और गलत धारणाएँ हैं जिनके चलते यह बीमारी गंभीर रूप धारण कर लेती है और मरीज का समय पर इलाज नहीं हो पाता जिसके घातक परिणाम भी सामने आते हैं. परंतु कहा गया है कि

फिर पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत.

जी हाँ दोस्तों,कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों को भी अक्सर लोग मजाक में लेते हैं और सही जानकारी के अभाव में समय पर इलाज नहीं करवा पाते और कैंसर पूरे शरीर में अपना कब्जा कर लेता है जिसके पश्चात उसका इलाज कर पाना डॉक्टर्स के लिए लगभग नामुमकिन हो जाता है और कैंसर के मरीज को अपने जीवन की आहुति देनी पड़ती है.

विश्व भर में कैंसर से होने वाली मौतों का विश्लेषण किया जाए तो उनमें से अधिकतर केस वह सामने आते हैं जिनमें मरीजों और उनके परिवारों को कैंसर से संबंधित अधकचरा ज्ञान था अथवा ज्ञान था ही नहीं. कैंसर एक ऐसी बीमारी है जो किसी भी आयु या वर्ग के लोगों को अपनी चपेट में ले सकती है. कैंसर कई प्रकार का हो सकता है ,जैसे ,फेफड़ों का कैंसर, आंत का कैंसर, मुंह का कैंसर, गले का कैंसर, लीवर का कैंसर, प्रोस्टेट का कैंसर ,ब्रेस्ट कैंसर,यूटरस कैंसर, सर्विकल कैंसर आदि. इनमें से कुछ कैंसर तो ऐसे हैं जिनके बारे में शुरुआती समय में मरीज को पता ही नहीं चल पाता है क्योंकि लक्षण काफी समय बाद दिखाई देने शुरू होते हैं और जिस के निदान के पश्चात ही डॉक्टर्स उस कैंसर की स्टेज के बारे में मरीज और उसके परिजनों को जानकारी देते हैं.

इन सब कारणों को देखते हुए ही प्रतिवर्ष 4 फरवरी को जहाँ पूरे विश्व में वर्ल्ड कैंसर डे मनाया जाता है जिसका उद्देश्य समुदाय के लोगों में कैंसर बीमारी के प्रति जागरूकता पैदा करना और उसके इलाज हेतु प्रेरित करना है ताकि असमय होने वाली मौतों में कमी आए. प्रत्येक वर्ष 4 फरवरी को यूनियन फॉर इंटरनेशनल कैंसर कंट्रोल (यूआईसीसी) के नेतृत्व में मनाया जाने वाला विश्व कैंसर दिवस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है ताकि विश्व भर के लोगों को कैंसर जैसी बीमारी के बारे में सही जानकारी प्राप्त हो सके और इसकी रोकथाम और उपचार हेतु लोगों के ज्ञान में

वृद्धि हो सके,वहीं भारत में राष्ट्रीय स्तर पर कैंसर अवेयरनेस डे के रूप में यह दिवस प्रतिवर्ष 7 नवंबर को मनाया जाता है.

तो दोस्तों, 7 नवंबर को राष्ट्रीय कैंसर अवेयरनेस डे के इस अवसर पर क्यों न हम सब सामूहिक रूप से यह संकल्प लें कि आज से,बल्कि अभी से हम कैंसर और इसके जैसी अन्य अनेक खतरनाक बीमारियों के विषय में सही सटीक और पूरी जानकारी पूरे विश्व में फैलाएँगे और उनकी रोकथाम के लिए भरसक प्रयत्न भी करेंगे तथा निदान होने पर मरीज के उपचार के लिए भी आगे आएंगे.दोस्तों ,आपकी , हम सबकी इस छोटी सी पहल से पूरे समाज को कैंसर जैसी घातक बीमारियों से काफी हद तक बचाया जा सकता है और एक स्वस्थ समाज की,एक स्वस्थ राष्ट्र की,एक स्वस्थ समृद्ध विश्व की कल्पना को मिलकर साकार किया जा सकता है क्योंकि

जागरूक होगा जब विश्व हमारा
तब ही स्वस्थ रहेगा यह विश्व हमारा

*****

बाल दिवस

रचनाकार- निहारिका झा, खैरागढ़

माह नवम्बर 14 को है
चाचा नेहरू जी का जन्मदिन
बच्चे मना रहे हैं उत्सव
बाल दिवसयह बड़ा ही पावन
शालाओं में गहमा गहमी
बच्चों में है भरी उमंग
लगा हुआ है बाल मेला
हर बच्चा अभिव्यक्ति करता
कोई बना है जादूगर तो
कोई रूप धरे टीचर का
कोई नए खेल खिलाता
कोई सजाए स्टॉल निराले
किसम किसम की चीजें बेचें
जैसे हों कुशल व्यवसायी।

जीवन के रूपों को जीते
बच्चे ये कितने हैं प्यारे
"बाल मेला"इनको अवसर दे
जीवन के सपने गुनने का
चाचा नेहरू के ये दुलारे
बच्चे लगते कितने प्यारे।
बच्चे लगते कितने प्यारे।। "

*****

मैना और मोर

रचनाकार- कु.अश्वनी साहू, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

बहुत पहले की बात है. एक जंगल में घमंडी मोर रहता था. वह अपनी खूबसूरती का तारीफ करते रहता था, लेकिन उस जंगल के सभी पक्षी मैना की तारीफ करते थे. इस बात से मोर को बहुत जलन होता था. एक दिन मोर ने कहा- 'मैं इतना खूबसूरत हूं, लेकिन तुम पक्षी लोग मैना की ही तारीफ करते हो. मैना मुझसे ज्यादा खूबसूरत नहीं है, फिर भी तुम लोग उसकी ही तारीफ करते हो?' यह बात सुनकर मैना को बहुत दुःख होता है. मैना एक सभा बुलाती है. सभा बुलाकर सबसे कहती है- 'तुम सभी पक्षी मेरी तारीफ करना छोड़ दो. जब तुम लोग मेरी तारीफ करते हो तो, मुझे बहुत बुरा लगता है. आज के बाद तुम सभी लोग मोर का ही तारीफ करना.' उस दिन के बाद से सभी पक्षी मोर का तारीफ करने लगे.

*****

हैप्पी क्रिसमस डे

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

सांताक्लॉज आया घर है.
खुशियाँ संग में लाया घर है.

जीवन में जब उदासी छाई,
यीशु को तब पाया घर है,
हैप्पी क्रिसमस डे है आया-
हर्ष उमंग छाया घर है.

प्रभु का है आशीष हम पर,
चलता जीवन उसके दम पर,
उसकी हम पर नज़रें करम है-
आफ़तों का न साया घर है.

रंग बिरंगे कपड़े पहनें,

चकरी, अनार,रस्सीबम फोड़े,
शिकवे भूल गले मिल जाए-
जामुन,रबड़ी, कलाकंद खाए.

टॉफी, तोहफे हमको मिले हैं,
फूल से चेहरे सबके खिले हैं,
नाचे,गाए खुशियाँ बांटे-
दूर करें यूँ शिकवे गिले है.

*****

प्यासी हिरणी

रचनाकार- कु.अश्वनी साहू, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

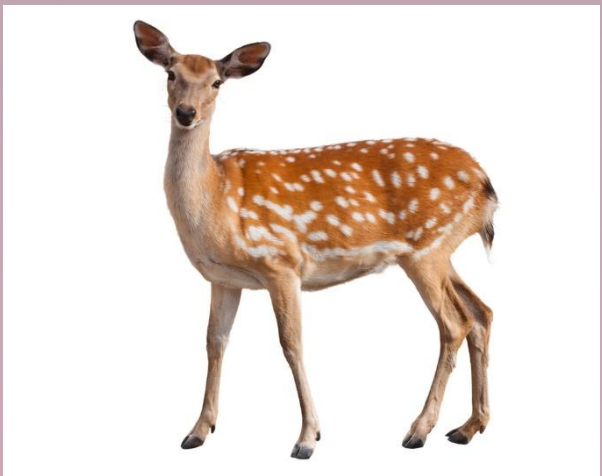

एक जंगल था. उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे. वह जंगल बहुत घना था. उस जंगल में हिरण और हिरणी रहते थे. एक दिन हिरणी को बहुत जोर से प्यास लगी. हिरण ने कहा- 'हम दोनों पानी पीने के लिए नदी किनारे चलते हैं.' उन लोगों को पता नहीं था कि उस नदी में एक मगरमच्छ रहता है. दोनों नदी में पानी पीने के लिए चले गए. जब हिरणी नदी में पानी पी रही थी, तभी मगरमच्छ आया और उस हिरणी को खा गया. हिरण फूट-फूट कर रोने लगा.

*****

ठंड-ठंड ठंडी लगी

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

ठंड-ठंड है ठंडी लगती
ऊनी वस्त्र से झटपट भगती.
पेड़ भी ठंड से काँपे हैं
पंछी इधर-उधर भागे हैं.

नहाने का मन नहीं करता
गर्म जल से हौसला बढ़ता.
ठंड बहुत स्कूल कैसे जाएँ
सूझे न क्या बहाना बनाएँ.

शीत से काँपे जब तन मेरा
साइकिल का करूँ इक फेरा.
कुछ भी खाए सभी हज़म है
देखें किसमें कितना दम है.

ठंड का इंतज़ाम करते हैं
अलाव के पास बैठते हैं.
जितना पहनो लगता कम है
ठंडी इतनी कि आँख नम है.

*****

सूरज

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

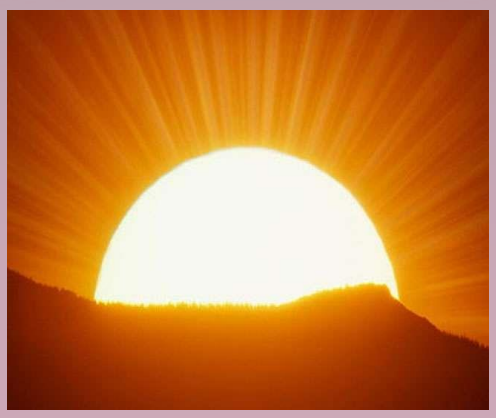

कभी न थकता सूरज
दूर रहे हमसे तम
खुद है जलता सूरज .
पास न आना सूरज
दूर-दूर बतियाना
धूप सा गुनगुनाना
किरणों से नहलाना .
सबके दुःख हरते हो
अपनी कब कहते हो
थोड़ा सा सुस्ता लो
चलते ही रहते हो .
तुमसे सीखा हमने
चलना ही जीवन है
चले जो अंगारों पे
खिलता वह यौवन है .

*****

झिलमिल-झिलमिल तारें

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

चम-चम चमके नभ में तारें
टिम-टिम दिखते जग में तारें
और लगे अनार से छूटे
नभ में बिखरें अद्भुत तारें
तम को हरते झिलमिल तारें
रोशन करते दुनिया तारें
रात भले ही शामल होती
उजास भरते जग में तारें .
दूर-दूर लगते हैं तारें
पर रहते हैं हिलमिल तारें
हाथ बढ़ाकर मुट्ठी भर लूँ
दूर नहीं है मंज़िल तारें .
चाँदी जैसें चमके तारें
आओ धरा पर इन्हें उतारे
किस्मत अपनी खुद चमका लें
उगा हथेली पे चाँद सितारें .

*****

नल

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

नल से आता कंचन पानी
निखर उठती है ज़िंदगानी
पानी है ठंडा-ठंडा पर
नहाने की अंशु ने ठानी.
व्यर्थ न फेंकों मेहुल पानी
बात सबको हमें समझानी
कीमत जल की सब समझो अब
कहती थी यह मेरी नानी.
जिस दिन आता नल में पानी
गगरी सगरी भर-भर जानी
उदास चेहरे खिल-खिल जाते
बरतन-बरतन पानी-पानी.

*****

जादुई पतंग

रचनाकार- कु.अश्वनी साहू, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक गांव था. उस गांव का नाम समेनपुर था. उस गांव में एक बहुत बड़ा अमीर परिवार रहता था. उस परिवार में एक लड़की थी. वह लड़की बहुत सुंदर थी. उस परिवार में एक मुखिया था. मुखिया बहुत लालची था. उसी गांव में एक गरीब परिवार रहता था. गरीब परिवार के लोग लालची नहीं थे. एक दिन गरीब परिवार के सभी लोग गांव जा रहे थे. गरीब परिवार का एक बच्चा ने देखा कि एक पतंग टूट कर उसके पास आ रही है. उस बच्चा का नाम जतिन था. जतिन ने कहा- 'मां वह देखो एक पतंग हमारे पास आ रही है.' पतंग उसके पास आकर गिर गयी. जब जतिन ने हाथ से उठाकर देखा तो पतंग से आवाज आयी- 'जतिन तुम लोग बहुत अच्छे हो. तुम लोग लालच नहीं करते हो.' जतिन और उसके माता-पिता ने पूछा आप कौन हो? पतंग ने कहा- 'मैं एक जादुई पतंग हूं. तुम लोग मुझे अपने घर ले जाओ. मैं तुम्हारे गरीबी को दूर कर दूंगा.' पतंग, उनकी सभी मनोकामना को पूरी करने लगी. गरीब परिवार के लोग सबका मदद करने लगे. गरीब परिवार के उन्नति को देखकर पड़ोसी लोग बहुत जलने लगे. पड़ोसियों ने कहा- 'चलो आज छुप कर देखते हैं? ये लोग एकाएक धनवान कैसे हो गए?' पड़ोसियों को पता चल गया कि उनकी मदद जादुई पतंग करता है. पड़ोसियों ने कहा- 'हम लोग रात को जाकर पतंग को चुराकर ले आएंगे.' पतंग जादुई था, इसलिए वे लोग उसे छू भी नहीं पाए. पतंग को छूने पर सभी पड़ोसियों को बिजली की झटका लगी. पड़ोसियों ने पतंग से कहा- 'हमें माफ कर दो! हमारे मन में लालच आ गया था.' जादुई पतंग ने सभी पड़ोसियों को माफ कर दिया.

*****

सीख

रचनाकार- सोमेश देवांगन, कबीरधाम

दिखता सब को सूरज की गर्मी,
पर वह खुद अंदर से जलता है.
पानी को भी जब प्यास लगे,
सूखे भागों के कानों में कहता है.
पत्थर की मूरत अब पूजें कौन,
कौन छीनी की मार को समझता है.
बहते आँसू भी तब रोने लगते,
उन आँसू की पीड़ा कोई कहता है.
यहाँ बंजर धरती भी खूब हँसती,
जब उपजाऊ छाती पे हल चलता है.
पर की पीड़ा कौन किससे कहे,
रिश्तें तो बस मतलब से रहता है.
भेष बदलकर अब द्वेष निकालते,
अपना बना के वही तो कुचलता है.

*****

धन्य हो गुरुनानक देव जी

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", शिवरिनारायण

दिन आया है कार्तिक पूर्णिमा
आया है पावन यह सुअवसर.
रज कण-कण प्रकाशित होगा
जब नानक जी होंगे अवतरण.

सन्त श्री गुरुनानक देव जी
सिक्खों के प्रथम गुरु कहलाए.
ज्ञान-भक्ति का संदेश देकर
सतनाम के मर्म को समझाए.

वाहे गुरु में ईस्वर की मूरत को
अपने ह्रदय-आत्मा में बसाए.
तन को ही एक मंदिर बनाकर
ध्यान नित-नित उसी में लगाये.

सत्संगति और ईस्वर भजन
तीर्थाटन में अपना जीवन बिताए.

सद्गुरु-वाणी का उपदेश देकर
भक्तों को भक्ति का राह दिखाए.

आपने धर्म का प्रचार किया
और तीन यात्रा चक्र पूरे किए.
रूढ़ियों और कुसंस्कारों को
दूर कर सत का सन्देश फैलाए.

धन्य हो आप गुरुनानक देव जी
सदमार्ग-मुक्ति का राह दिखाए.
धन्य है आपके विचार-वाणी
जिसने जीवन को धन्य बनाए.

*****

हाथी और भालू

रचनाकार- राधेश्याम साहू, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक जंगल में एक हाथी रहता था. हाथी का दोस्त भालू था. एक दिन हाथी और भालू दोनों जंगल घूमने के लिए गए. दोनों दोस्त बहुत मस्ती करते थे. दोनों दोस्त घर जाते समय रास्ता भूल गए और दूसरे जंगल में चले गए. दोनों दोस्त के माता-पिता उनको खोजने लगे. हाथी और भालू एक स्थान पर बैठे थे. उसी स्थान पर एक हिरण आया और कहा-'तुम लोग कहां रहते हो? किस जंगल से आए हो?' दोनों दोस्त ने कहा- 'हम लोग घूमते-घूमते रास्ता भटक गए हैं. कृपया हमको रास्ता बताइए.' हिरण दोनों दोस्त को रास्ता दिखाता है. उनको जंगल से बाहर ले आता है. दोनों दोस्त अपने-अपने घर चले जाते हैं.

*****

टूनी और गुनगुन चिड़िया

रचनाकार- कु.अश्वनी साहू, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक जंगल में टूनी नाम की एक चिड़िया रहती थी. वह अपने पति के साथ रहती थी. वह रोज जंगल में दाना ढूंढने जाती थी. एक दिन उसे एक गुनगुन नाम की चिड़िया नीचे घायल पड़ी हुई दिखाई दी. टूनी उसे अपने घर ले आती है और उसका ध्यान रखती है. जब गुनगुन ठीक हो जाती है तब टूनी उससे पूछती है कि तुम इतनी घायल कैसे हुई? तब गुनगुन कहती है- 'मैं दाना ढूंढने जा रही थी, तब एक शिकारी ने जाल बिछाया था. मैं उसके जाल में फंस गई. शिकारी के पास धनुष-बाण था. उसने मेरे ऊपर बाण चला दिया. बाण चलाने के कारण मैं घायल हो गई. जाल का कुछ भाग खुला होने के कारण मैं वहां से भाग निकली. मैं दर्द से तड़प रही थी, तभी तुमने आकर मुझे बचा लिया. इसके लिए आपको धन्यवाद! देती हूं.' इतना कहकर गुनगुन चिड़िया उड़ जाती है.

*****

बाल-दिवस

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", धमतरी

बाल दिवस की पूर्व संध्या पर प्रधानपाठक ने ये सूचना प्रेषित किया कि सारे बच्चे सभा हाल में उपस्थित हो जाएं.

अचानक घण्टी बजती है और कुछ ही पल में सभी बच्चे सभा हाल में इकट्ठा हो जाते हैं.

सभा हाल में खूब शोरगुल होती है, तभी अचानक अपने स्टॉफ के साथ प्रधानपाठक का पदार्पण होता है. प्रधानपाठक को देखकर सभी बच्चे शांत हो जाते हैं.और बच्चे सावधान की मुद्रा में खड़े होकर अपने प्रधानपाठक को शिष्टाचार करते हैं.

तभी प्रधानपाठक ने अपने हाथों में इशारा करते हुए बैठने का निर्देश देते हैं.सभी यथास्थान में बैठ जाते हैं.

जैसे ही वातावरण में नीरवता आती है तभी प्रधानपाठक जी खड़े होते हैं और कुछ जरूरी सूचना प्रसारित करते हैं वे कहने लगे-

दिनांक 14 नवम्बर को बाल-दिवस" के शुभ अवसर पर स्कूल में "बाल-दिवस" का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया जाएगा,जिसमें चाचा नेहरू जी के जीवन चरित्र,और प्रेरक प्रसंगों को मंचन किया जाएगा.

यदि कोई बालक-बालिका इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं,ओ अपना नाम लिखा सकते हैं."

तभी अचानक जोरों की कोलाहल शुरू हो जाती है.बच्चे उत्साहित हो जाते हैं.और चिल्लाने लगते हैं-

सर जी मेरा नाम

सर मेरा नाम

कोई कहता है-

मैं भी नाटक में भाग लेना चाहता हूँ.

सर मेरा नाम लिख दीजिए.

सोनू...मोनू....रानू....सानू...!!इस तरह

से बच्चों ने नाम गिनाना शुरू कर दिया.

तभी प्रधानपाठक ने टेबल को पीटते हुए शांति बनाए रखने का हिदायत देते हैं.फिर सभा हाल में शांति छा जाती है.

ठीक ऐसे समय पर प्रधानपाठक की नजर सबसे पीछे बैठे मोहन पर पड़ती है.मोहन चुपचाप सिर झुकाए बैठा हुआ है,किसी से बात नही कर रहा है,और न ही वह "बाल- दिवस" के कार्यक्रम से उत्साहित है.जबकि वह बालक बहुत होनहार था,इस तरह के कार्यक्रम में चढ़-बढ़ कर हिस्सा लेता था.पर इस बार वह बहुत उदास है.

उसकी इस उदासीनता को समझते हुए

मास्टर जी ने पूछा-

क्यो ?क्या हुआ मोहन???

तुम इतने उदास क्यो बैठे हो??

और तुम "बाल-दिवस" के कार्यक्रम में भाग क्यो नही ले रहे??

तभी वह मोहन अपने आप को सम्हाले हुए कहता है-

मास्टर जी हम नेहरू जी के जन्म दिवस को बाल-दिवस" के रूप में मनाते हैं,पर उस नेहरू जी से मिल नही पाते.कितना अच्छा होता यदि हम उनसे मिल पाते."

मास्टर जी को मानो झटका लग गया. मास्टर जी गहरी सोच में पड़ गए.

तभी मोहन कहता है-

मास्टर जी क्या हम नेहरू चाचा से मिल सकते हैं?

तब मास्टर जी कहते हैं-

हाँ....हाँ..!!!

क्यो नही!!

मोहन खुश होकर उछल जाता है.

और कहता है-

क्या सच कह रहे हो मास्टर जी!!

हाँ सच कह रहा हूँ!

मास्टर जी ने कहा.

और फिर मास्टर जी अपने स्टॉफ में गए और वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बाल- दिवस के दिन अपने सहयोगी मास्टर जी को गुब्बारे वाला,फल वाला बनने के लिए कहा.और स्वयं चाचा नेहरू बनने की बात स्वीकारी. सभी ने हामी भर दी.

उसके बाद वह बाल दिवस का शुभ दिन भी आया,सभा हाल खचाखच भरा हुआ है.

मोहन सहित सभी बच्चों को चाचा नेहरू के आगमन की प्रतीक्षा थी उनसे मिलना चाहते हैं,और मिल के "बाल-दिवस" में अपना- अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते हैं.

तभी ठीक इसी समय मंच के एक कोने से किसी की आवाज आती है-

गुब्बारे ले लो गुब्बारे!!!

इसी प्रकार-

फल ले लो फल !!सेव,केला,अंगूर,!!

और फिर ऐसे ही समय मे मंच के किसी कोने से चाचा नेहरू का आगमन होता है जो अचकन टोपी लाल गुलाब धारण किये हुए हैं, जो बिल्कुल हुबहू नेहरू जी लग रहे है.

सभी बच्चे चाचा जी!!चाचा जी!!जोर जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया.

तभी वह नेहरू जी कहते हैं:-

लो बच्चों मैं चाचा नेहरू आ गया हूँ!!

मोहन मेरे पास आ जाओ,तुम मुझसे मिलना चाहते थे न!!"

मोहन और सभी बच्चे अचरज में पड़ जाते हैं, और चाचा नेहरू से बिना देरी किए मिलने दौड़ पड़ते हैं.नेहरू जी सभी बच्चों को हृदय से लगा लेते हैं, और पास से गुजर रहे गुब्बारे वाले से गुब्बारा,और फल वाले से फल बांटकर बच्चों को प्रसन्न कर देते हैं.

तभी जिज्ञासावश मोहन पूछता है क्या आप सचमुच में चाचा नेहरू हो??

तब मास्टर जी ने सारा माजरा कह सुनाया

भले ही उनका शरीर नही है लेकिन उनके आदर्श उनके सिद्धान्त,उनका बच्चों के प्रति प्यार आज भी हमारे दिलों-दिमाग पर जिंदा है.मैं नेहरू के रूप में तुम्हारे मास्टर जी हूँ.

तुम उस दिन बहुत उदास थे तुम्हारी उदासी को दूर करने और "बाल-दिवस" को यादगार

बनाने के लिए हमने नेहरू जी का वेश धारण किया, सहयोगी मास्टर साथी,फल वाला और गुब्बारे वाला बने,और हम सभी मंच में धीरे-धीरे आगमन किए, जिसको देखकर तुम सभी बच्चे प्रसन्न हो गए.

इतना सुनकर मोहन और अन्य सभी बच्चे

अपने प्रधानपाठक को चाचा नेहरू और अन्य मास्टर जी को फल गुब्बारे वाला है जानकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं,और फुले नही समाते है.आज उनकी उदासी और भ्रम दूर हो गई.आज उन लोगों ने नेहरू चाचा का साक्षात दर्शन जो कर लिया था.

*****

जलपरी और जादूगरनी

रचनाकार- कु.अनामिका दिवाकर, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक बहुत बड़ा समुद्र था. उस समुद्र के नीचे एक जलपरी रहती थी. जलपरी बहुत सुंदर थी, लेकिन उस समुद्र में कुछ और जलपरियां रहती थी. वे उस जलपरी से बहुत घृणा करती थी. उस सुंदर जलपरी का नाम मोहिनी था. उसे कोई देखता तो देखते ही रह जाता था. बेचारी मोहिनी के सखी-सहेली जलपरियां उसे पसंद नहीं करती थी. समुद्र में बहुत सारे छोटी और बड़ी मछलियां थी. मछलियां, मोहिनी को बहुत पसंद करती थी. मोहनी भी मछलियों से बहुत प्यार करती थी. मोहिनी को उसके परिवार के लोग मारना चाहते थे. उस समुद्र में एक जादूगरनी जलपरी रहती थी. वह जादूगरनी बहुत गंदी थी. एक दिन मोहनी अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी, तभी एक मछली आयी और उसने मोहिनी पर हमला की. वो एक बहुत बड़ी मछली थी, लेकिन मोहिनी ने अपने आप को बचा लिया. मोहिनी ने देखा कि एक बड़ी मछली के पैर में चोट लगी है. मोहिनी ने बड़ी मछली को बड़े प्यार से बुलाया और उसके चोट को ठीक किया. मोहनी ने उससे पूछा कि यह चोट कैसे लगी? बड़ी मछली ने बतायी कि जादूगरनी और कई जलपरियों ने उसके ऊपर तीर से हमला किया था. यह बात सुनकर मोहिनी अधिक क्रोधित हुई. मोहिनी ने कही-'अब मैं उस जादूगरनी को नहीं छोड़ूंगी'. मोहिनी, जादूगरनी के पास गई. मोहिनी और जादूगरनी के बीच लड़ाई होने लगी. मोहिनी से लड़ने के लिए कई जलपरियां आयी. मोहिनी को पता नहीं था कि उसके पास बचपन से जादुई शक्तियां थी. जादूगरनी और जलपरियां मोहिनी से लड़ रही थी. जादूगरनी की सब शक्तियां खत्म होने के कारण वह भाग गई. जलपरियां भी थक हार कर शांत हो गयी. सभी जलपरियों ने मोहिनी से क्षमा मांगी. अंत में सभी लोग अच्छे से रहने लगे.

*****

मै पढ़ूंगा लिखूंगा

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", शिवरिनारायण

मै पढ़ूंगा लिखूंगा, मै ज्ञानवान बनूंगा
मै पढ़-लिख कर संस्कारवान बनूंगा.

मै गुरुओं के संसर्ग-शरण मे जाऊंगा
मै शाला जाऊंगा,विद्या प्राप्त करूंगा.

मै ज्ञान-विज्ञान के रहस्यों को जानूंगा
मै जीवन उद्देश्यों को पूर्ण कर पाऊंगा.

मै तन-मन से छात्र धर्म को निभाऊंगा
मै गुरुओं को अपना आदर्श बनाऊंगा.

मै अर्जुन के एकाग्रता धर्म निभाऊंगा
मै गुरु वाणी को गीता उपदेश मानूंगा.
मै गुरु-ज्ञान को मन मे धारण करूंगा
मै सद्ज्ञान से जीवन उज्ज्वल करूंगा.

*****

चूँ-चूँ करती चिड़ियाँ आईं

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", शिवरिनारायण

चूँ-चूँ करती चिड़ियाँ आईं
चहक-चहक के गीत सुनाईं.
फुर्र-फुर्र करती चिड़ियाँ आईं
चुग-चुग करके दाना खायीं.
फुदक-फुदक के चिड़ियाँ आईं
डाल-डाल पर नाच दिखाईं.
उड़-उड़कर करके चिड़ियाँ आईं
बाग़-बगीचों में रौनकता छाई.
झुण्ड-झुण्ड में चिड़ियाँ आईं
फुल-कलियों मे खुशियाँ छाई.

*****

दोस्त केकड़ा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

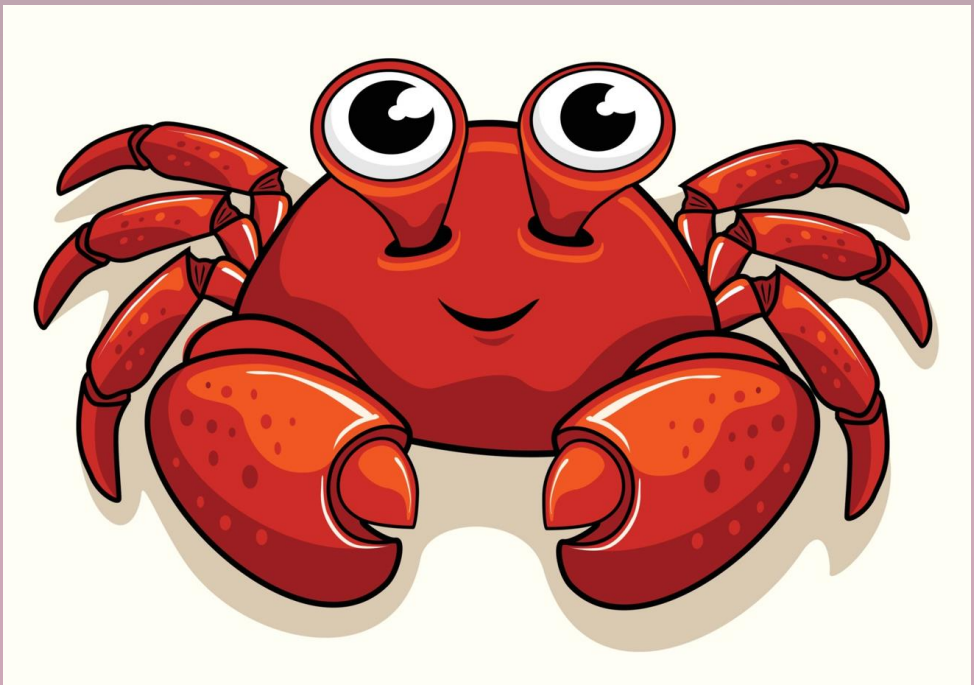

एक छोटे से तालाब में एक मछली,अपने परिवार के साथ रहती थी.

उसके एक पुत्र को तालाब के ही एक केकडे से दोस्ती हो गई.उसके मां को पता चल गया, कि उसके बेटे की दोस्ती केकडे से है, तो वह नाराज हो गई.मां अपने बेटे को डांटने लगी"तुम मछली होकर,केकड़ा से दोस्ती क्यो कर रहे हो,केकड़ा तुम्हे नुकसान पहुंचा सकता है?"

"नहीं मम्मी,सभी केकड़े एक जैसे नहीं होते,मेरा दोस्त केकड़ा बहुत अच्छे व्यवहार का है."उसके बेटे ने कहा. तो पर भी तुम बड़ी सावधानी से उनसे मिला करो."मम्मी ने कहा."

"तुम कुछ भी करो,पर याद रखना,वो हमारे घर तक न आये."मम्मी अपने बेटे को चेतावनी के स्वर में बोली. मम्मी के डांटने पर भी उसका बेटा दोस्ती जारी रखा. कुछ दिनों के बाद ही,एक मछुआरा, उस तालाब में जाली फैला दिया.मछली का पूरा परिवार उसके जाल में फंस गया.तभी उनके बेटे ने बड़ी जोर की आवाज से अपने दोस्त केकड़ा को याद किया.आवाज को पहचान कर वह दोस्त केकड़ा वहां आ गया और अपने नुकीले दांतों से जाल को काँटकर सभी मछली को आजाद कर दिया. केकडे के इस सहयोग से मछली खुश हो गई और अपने पुत्र और केकडे को हृदय से लगा लिया."

*****

हम तो छोटे-छोटे बच्चे हैं

रचनाकार- कु.अनामिका दिवाकर, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

हम तो छोटे-छोटे बच्चे हैं
नन्हे, मुन्हे अच्छे हैं
दिल के भी तो सच्चे हैं
हम तो दिल के कच्चे हैं
लेकिन हम अच्छे बच्चे हैं
सच्ची-सच्ची बातें करते हम
हम तो छोटे-छोटे बच्चे हैं
नन्हे, मुन्हें अच्छे हैं
दिल के भी तो सच्चे हैं

*****

सपनों की उड़ान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

मोहन पी.एस.सी. की तैयारी करने गांव से शहर आया. उसने सबसे पहले रूम किराया ढूंढा और कोचिंग क्लास का पता लगाया. किराया और कोचिंग क्लास के फीस के लिए उसके पास पैसा नहीं था. मोहन बहुत गरीब परिवार से था. वह दिनभर काम करता और शाम को कोचिंग क्लास में पढ़ने के लिए जाता था. पी.एस.सी. की सिलेबस बहुत ज्यादा था, इसलिए उसे एक वर्ष समझने में लगा. उस वर्ष वह परीक्षा नहीं निकाल पाया. दूसरे वर्ष में पांच प्रतिशत के लिए चूक गया. तीसरे वर्ष आउट आफ सिलेबस प्रश्न पूछने के कारण नहीं निकाल पाया. चौथे वर्ष सभी प्रश्नों को हल करके आ गया जिसके कारण निगेटिव मार्क में बहुत सारा गलत हो गया. पांचवें वर्ष में प्रतिशत अधिक चला गया जिसके कारण फिर नहीं निकाल पाया. मोहन बहुत उदास और परेशान रहने लगा. एक दिन कोचिंग क्लास में एक अतिथि आया. उसने कहा- 'यदि तुम सफल नहीं हो पा रहे हो तो, पढ़ने का तरीका बदलो, रास्ते नहीं. मंजिल तुम्हें अवश्य मिलेगी.' मोहन,अतिथि के प्रेरणाप्रद बातों से बहुत प्रभावित हुआ. अब वह कोचिंग क्लास से, यूट्यूब के माध्यम से, गूगल के माध्यम से और स्वाध्याय के माध्यम से पढ़ाई करने लगा. मोहन ने तन्मयता से पढ़ाई की. प्री परीक्षा और मेंस परीक्षा में पास हो गया. वह इंटरव्यू दिलाकर गांव लौट आया. एक दिन वह खेत में काम कर रहा था, तभी उसका दोस्त आया और कहा- 'तुम डिप्टी कलेक्टर बन गए हो. तुम्हारे वर्षों के सपनें सकार हो गए हैं.' मोहन अपने दोस्त की बात को सुनकर खुशी से रोने लगा. वह तुरंत जाकर पदभार ग्रहण किया और सुखी पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा. मोहन ने आखिर अपने सपनों की उड़ान भर ही लिया.

*****

प्रतिज्ञा की प्रेरणा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

एक गांव में आलोक नाम का लड़का रहता था. वह पढ़ने के लिए प्रतिदिन स्कूल जाता था. स्कूल से आने के बाद गृह कार्य नहीं करता था, घर में बस्ता रखकर खेलने के लिए चला जाता था. आलोक अपने दोस्तों के साथ स्थानीय खेल जैसे- बाटी, भौंरा, ताश, लुका-छुपी, गुल्ली-डंडा, तैराकी आदि खेलता था. उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था, इसलिए उसे परीक्षा में कम नंबर मिलता था. एक दिन की बात है, उसके पड़ोसी के घर में एक बुढ़िया और एक लड़की मेहमान बन कर आयी. उस लड़की का नाम प्रतिज्ञा था. प्रतिज्ञा आंगन में बैठी थी. आलोक, प्रतिज्ञा को देखते ही उसके पास चला गया और कहा- 'तुम किस गांव से आयी हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम किस कक्षा में पढ़ती हो?' प्रतिज्ञा ने कही- 'मैं सोनपुर गांव की रहने वाली हूं. मेरा नाम प्रतिज्ञा है. इस वर्ष मैं कक्षा दसवीं में पढ़ूंगी. तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?' आलोक ने शरमाते हुए कहा- 'मैं दसवीं में पिछले साल अनुत्तीर्ण हो गया था, फिर से इस वर्ष दसवीं पढ़ूंगा.' प्रतिज्ञा ने कही- 'आलोक, तुम पढ़ाई करते नहीं हो इसलिए अनुत्तीर्ण हो गए हो. तुम खेल खेलने में अधिक ध्यान देते हो. इस वर्ष प्रतिदिन छः से आठ घंटे पढ़ाई करना. मैं भी इतने ही घंटे पढ़ाई करती हूं. तुम जरूर उत्तीर्ण हो जाओगे. दसवीं और बारहवीं कक्षा में तुम अच्छा प्रतिशत लाओगे तो, तुम्हें नौकरी मिलेगी.' प्रतिज्ञा की बात को सुनकर आलोक प्रेरित एवं उत्साहित हुआ. कुछ दिनों के बाद प्रतिज्ञा अपने घर चली गयी. आलोक अब प्रतिदिन तन्मयता से पढ़ाई करने लगा. उसने कक्षा दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया.

*****

मूर्ख बातूनी कछुआ

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर

एक तालाब में एक कछुआ रहता था. उसी तालाब में दो हंस भी तैरने आया करते थे. हंस बहुत हंसमुख और मिलनसार स्वभाव के थे. इसलिए कछुए और हंस में दोस्ती होते देर नहीं लगी. कुछ ही दिनों में वे बहुत अच्छे दोस्त बन गए. हंसों को कछुए का धीरे-धीरे चलना और उसका भोलापन बहुत अच्छा लगता था. हंस बहुत बुद्धिमान भी थे. वे कछुए को अनोखी बातें बताते,ऋषि-मुनियों की कहानियां सुनाते,हंस दूर-दूर तक घूमकर आते थे, इसलिए उन्हें सारी दुनिया की बहुत-सी बातें पता होती थी. दूसरी जगहों की अनोखी बातें वो कछुए को बताते, कछुआ मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता बाकी तो सब ठीक था, पर कछुए को बीच में टोका-टाकी करने की बहुत आदत थी, अपने सज्जन स्वभाव के कारण हंस उसकी इस आदत का बुरा नहीं मानते थे,गुज़रते व़क्त के साथ उन तीनों की दोस्ती और गहरी होती गई.

एक बार भीषण सूखा पड़ा. बरसात के मौसम में भी एक बूंद पानी नहीं बरसा,इससे तालाब का पानी सूखने लगा प्राणी मरने लगे, मछलियां तो तड़प-तड़पकर मर गईं. तालाब का पानी और तेज़ी से सूखने लगा, एक समय ऐसा भी आया कि तालाब में पानी की बजाय सिर्फ कीचड़ रह गया कछुआ बहुत संकट में पड़ गया, उसके लिए जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा हो गया. वहीं पड़ा रहता तो कछुए का अंत निश्चित था.हंस अपने मित्र पर आए संकट को दूर करने का उपाय सोचने लगे, वे अपने मित्र कछुए को ढाढ़स बंधाने का प्रयास करते और हिम्मत न हारने की सलाह देते, हंस केवल झूठा दिलासा नहीं दे रहे थे वे दूर-दूर तक उड़कर समस्या का हल ढूढ़ते एक दिन लौटकर हंसों ने कहा, "मित्र, यहां से पचास कोस दूर एक झील है. उसमें काफ़ी पानी हैं तुम वहां मज़े से रहोगे." कछुआ रोनी आवाज़ में बोला, "पचास कोस? इतनी दूर जाने में मुझे महीनों लग जाएंगे. तब तक तो मैं मर जाऊंगा." कछुए की बात भी ठीक थी हंसों ने अक्ल लगाई और एक तरीक़ा सोच निकाला.

वे एक लकड़ी उठाकर लाए और बोले, "मित्र, हम दोनों अपनी चोंच में इस लकडी के सिरे पकड़कर एक साथ उड़ेंगे. तुम इस लकड़ी को बीच में से मुंह से थामे रहना. इस प्रकार हम उस झील तक तुम्हें पहुंचा देंगे. उसके बाद तुम्हें कोई चिन्ता नहीं रहेगी."

उन्होंने चेतावनी दी "पर याद रखना, उड़ान के दौरान अपना मुंह न खोलना. वरना गिर पड़ोगे." कछुए ने हामी में सिर हिलाया. बस, लकड़ी पकड़कर हंस उड़ चले,उनके बीच में लकड़ी मुंह में दाबे कछुआ. वे एक कस्बे के ऊपर से उड़ रहे थे कि नीचे खड़े लोगों ने आकाश में अदभुत नज़ारा देखा सब एक-दूसरे को ऊपर आकाश का दृश्य दिखाने लगे लोग दौड़-दौड़कर अपने छज्जों पर निकल आए कुछ अपने मकानों की छतों की ओर दौड़े, बच्चे, बूढ़े, औरतें व जवान सब ऊपर देखने लगे ख़ूब शोर मचा कछुए की नज़र नीचे उन लोगों पर पड़ी. उसे आश्चर्य हुआ कि उन्हें इतने लोग देख रहे हैं, वह अपने मित्रों की चेतावनी भूल गया और चिल्लाया "देखो, कितने लोग हमें देख रहे है!" मुंह खोलते ही वह नीचे गिर पड़ा. नीचे उसकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं लगा. सीख- बेमौके मुंह खोलना बहुत महंगा पड़ता है.

*****

मेरी बिटिया रानी

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

मेरी बिटिया रानी बड़ी सयानी
मेरी बिटिया रानी बड़ी सयानी.
है परियों की वह शहजादी
मेरी बिटिया रानी बड़ी सयानी
मेरी बिटिया रानी बड़ी सियानी
घर में नखरे वे बहुत दिखाती
कहना किसी का ना मानती वह
कुछ कहो तो यूं रूठ जाती
मेरी बिटिया रानी बड़ी सियानी
तरह-तरह की करती अठखेलियां
कभी हंसाती, कभी रुलाती
करती नटखट वह शैतानी

मेरी बिटिया रानी बड़ी सयानी

मुझ पर अब हुक्म चलाती

अपना फैसला स्वयं वह अब करती

मेरी बिटिया रानी बड़ी सयानी

है परियों की वह शहजादी

कभी सजती संवरती और

कभी बनती मैडम तो

कभी बनती मम्मी सियानी

पापा की परी बनाकर हुक्म चलाती

मेरी बिटिया रानी बड़ी सियानी

है वह परियों की शहजादी

*****

नन्हे मुन्ने मेरे बच्चे

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

नन्हे मुन्ने मेरे बच्चे हरदम हंसते रहते
सुमन सा मुखड़ा उनका
हरदम मुस्कुराते रहते
मुस्कान देख उनका मन बहल जाता है
रोज वह पढ़ने आते
नए-नए तरीका उन्हें भाते
कहीं चुटकुला ,कहीं कहानियां
कहीं नाटक, कहीं गीत उन्हें सुनाते
तरह -तरह के खेल खिलौने से
हरदम करके उन्हें सिखाते
तरह-तरह के बनाते कबाड़ से जुगाड़
समान बच्चे उसे मस्ती के साथ करते,
पढ़ते और हंसते गाते सीखते
रोज है स्कूल आना उनको
तरह -तरह के खेल मुझे दिखाना है उनको

न दिखाऊं तो वे पीछे पड़े रहते
रोज एक नए तरकीब से पढ़ना लिखना सीखते
मेरे नन्हे मुन्ने बच्चे हरदम हंसते रहते
खुलकर वे बातें करते एक से बढ़ कर एक
अपने अपने घर की सभी कहानी सुनाते
अगर मै न जाऊं स्कूल एक दिन
वे राह देखते रहते और पूछते
नन्हे मुन्ने मेरे बच्चे
मेरे नन्हे मुन्ने बच्चे

*****

राजदुलारी हिंदी घनाक्षरी

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय

जग में है बोली जाती, मन सदा यह भाती,
राजदुलारी को हम,करें सभी प्यार हैं.

काम सब यह करे,सृजन में जान भरे,
हिंदी बिना सूना लगे,सारा ये संसार है.

संस्कार हृदय भरे,द्वेश दंभ सब परे,
रखे सम भाव यह, हिंदी ही आधार है.

हिंदी की है धूम मची, यह रग-रग रची,
हिंद देश शान यह, महिमा अपार है.

देश की पहचान है,बोले यह जहान है,
होता बड़ा गर्व जहाँ,खुशियाँ शुमार है.

*****

अगर जलेबी होती सीधी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

गोलमगोल जलेबी भाती,
मीठी -मीठी महक उड़ाती.

कड़क जलेबी स्वाद कुरकुरा,
सबके मन को खूब लुभाती.

पीकर मीठा-मीठा शीरा,
कड़क जलेबी स्वाद बढ़ाती.

बड़े सवेरे पोहे के संग,
प्लेटों की वो शान बढ़ाती.

अगर जलेबी होती सीधी,
नहीं किसी के मन को भाती.

उसे देख के सब खुश होते,
जब वो गोल रूप में आती.

*****

नाम कमाओ

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

सूरज जैसे बनो परिश्रमी,
साहस के नवगीत सुनाओ.

चन्दा-सी बाँटो शीतलता,
सारे जग को मीत बनाओ.

आसमान से बनो विशाल,
सारे जग में तुम छा जाओ.

धरती जैसे बनो उर्वरा,
दूजों खातिर जान लुटाओ.

सागर जैसे बनो साहसी,
जीवन में नवपुष्प खिलाओ.

प्रगति पथ पर चलके मितवा,
सारे जग में नाम कमाओ.

*****

मक्खी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

घर-घर में छा जाती मक्खी,
सबको बहुत सताती मक्खी.

अगर मिठाई खुल्ला देखे,
झट दूषित कर जाती मक्खी.

देख गन्दगी खुश हो जाती,
देख सफाई जाती मक्खी.

बरखा के आने पर भाई,
अपनी फौज बढ़ाती मक्खी.

गुड़ का लालच जब वो करती,
गुड़ में ही फँस जाती मक्खी.

गोलू दिन भर उसे मारता,
देख उसे उड़ जाती मक्खी.

होती चंचल चपल सयानी,
खतरों से घबराती मक्खी.

*****

तितली रानी

रचनाकार- विनय बंसल, आगरा

तितली रानी, तितली रानी,
करती तुम अपनी मनमानी.
रंग-बिरंगी प्यारी-प्यारी,
पुष्पों से तुम करती यारी.

कभी मचलती फिर इठलाती,
उड़ के जाती, फिर आ जाती.
बच्चे चाहें तुम्हें पकड़ना,
लेकिन पकड़ में तुम ना आती.

*****

बंदर

रचनाकार- विनय बंसल, आगरा

एक था बंदर ज्योतिष ज्ञानी,
भावी बात बताता था.
मृग हाथी भालू चीते को,
ज्योतिष से फुसलाता था.

उल्टा-सीधा भविष्य बताता,
जो जी आए कहता था.
खूब जियोगे, स्वस्थ रहोगे,
यह कहकर वो ठगता था.

*****

दो मित्र

रचनाकार- साक्षी साहू, कक्षा 7, कन्या शाला पांडुका, गरियाबंद

एक गाँव में दो दोस्त रहा करते थे, गोलू और चिंटू. दोनों एक दूसरे के पक्के दोस्त थे. गोलू शांत स्वभाव का था और चिंटू घमंडी लड़का. एक दिन दोनों में लड़ाई हो गई. चिंटू ने गोलू को बहुत मारा और गोलू दुखी होकर घर चला गया. कई दिनों तक एक दूसरे एक साथ बात नहीं किए. एक दिन गोलू का टिफ़िन गिर गया, गोलू रो पड़ा और चिंटू से थोड़ा टिफ़िन मांगने लगा. तभी चिंटू ने कहा, " मैं अपनी टिफ़िन किसी से नहीं बाँटता !", और गोलू को धक्का दे दिया. गोलू भूखा रह गया. हफ्ते गुज़र गए, एक दिन चिंटू का पेन घूम गया, उसने गोलू से पेन माँगा. गोलू ने बिलकुल उसी तरह कहा जैसे चिंटू ने कहा था की मैं किसी से टिफ़िन नहीं बाँटता. गोलू ने चिंटू को पेन नहीं दिया. तब चिंटू को एहसास हुआ, बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए और उसे अपने किये पर पछतावा हुआ.

सीख : इस कहानी से यही सीख मिलती है की एक दूसरे के प्रति मदद की भावना रखनी चाहिए और मिल-जुलकर रहना चाहिए.

*****

मयूर और मुर्गी

रचनाकार- कु. रीना साहू, कक्षा चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक जंगल में मयूर और मुर्गी रहते थे. मुर्गी, मयूर से बहुत जलती थी. एक दिन की बात है, मुर्गी मन ही मन सोच रही थी कि मैं बहुत सुंदर हूं. मयूर को सभी लोग पसंद करते थे. एक दिन अचानक एक मयूर मर जाता है. उसको मरते हुए मुर्गी देख लेती है. मरे हुए मयूर के खाल को मुर्गी पहन लेती है. मुर्गी, मयूरों के झुंड के बीच चली जाती है. एक दिन बहुत जोर की बारिश हुई. सभी मयूर मुग्ध होकर नाचने लगे. घमंडी मुर्गी भी पंख फैलाकर नाचने लगी. बारिश और हवा एक साथ तेजी से आयी. घमंडी मुर्गी का खाल उड़ गया. सभी मयूर उसको पहचान गए कि यह तो मुर्गी है. मयूरों ने मुर्गी को अपने झुंड से भगा दिया.

*****

प्रभा के बालदिवस

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

प्रभा अउ शालू दूनोंझन सहेली रिहिसे. सँघरा खेलय-कूदय. पर दूनोंझन स्कूल नइ जावत रहैं. सबले बड़का समस्या की वो मन देवार जाति मा पैदा होय रिहिसे. तेखर कारण पढ़ई-लिखई ले बनेच दुरिहा रहैं. प्रभा ला पढ़े-लिखे के अब्बड़ सउँख रहै. दूसर लइका मन ला स्कूल जावत देखय बेग, कॉपी-किताब,रंगीन ड्रेस त "अगास म उड़े अस लागय. काश ! महूँ स्कूल जातेंव. ओखर जाति मा शिक्षा ला जादा महत्व नइ देवत रिहिसे.

प्रभा ह अपन माँ ल अब्बड़ जिद्द करे - "माँ महूँ स्कूल जाहूँ न वो.... दूसर ल देखथों त मोरो मन करथे. प्रभा के माँ प्रभा ला चुप करा दे - "काय करबे स्कूल जा के ?" हमर जाति मा पढ़ई-लिखई नइ करे; अउ टूरी मन तो अउ कुछू नइ कर सकँय. चुपचाप बोरी धर अउ जा कबाड़ी; कचरा ला बिन के लाबे, बेचबो तभे तो खाबो का ? कोन सा अफसर बनबे पढ़-लिख के ?"

प्रभा चुपकन भीतरी मा चल दिस.

प्रभा - शालू ला अब्बड़ बोलय कि शालू चल न हमन घलो स्कूल जाबो. बढ़िया खेल-कूद अउ गाना सिखबो. शालू मना कर दे- "मोला सुउंँख नइ हे. तहू झन जा."

प्रभा ला थोर-बहुत हिंदी बोले ला आ जावत रिहिसे. स्कूल के लइका मन ल बोलत देखे त वहू कोशिश करे. अचानक एक दिन बिहनिया ले प्रभा स्कूल जाय के ठान लिस. आज मैं दाखिला करवा के रहूँ. वोहा हिम्मत कर के "अंधियार म तीर चलाये" के सोचिस.

गुरुजी- "मोला पढ़ने का अब्बड़ सउँख है. लेकिन माँ-बाबू मन झन पढ़ कहते हैं. उहाँ के लइका मन ओखर हिंदी ला सुन के अब्बड़ मजाक उड़ावय. गुरुजी ह कुछ सोच-विचार कर के बोलिस कि ठीक हे कल ले आ जाबे.

प्रभा के खुशी के ठिकाना नइ रहै. प्रभा दउड़त शालू करा गिस अउ बताइस गुरुजी ह कल ले स्कूल बुलाये हे शालू. तहू जाबे का? शालू मुँह बनात बोलिस - "नहीं मोला नइ जाना हे. प्रभा ठीक हे ! तोर मन!" काहत घर चल दिस.

दूसर दिन प्रभा बोरी ल धरिस अउ चुपचाप घर ले निकल गे. घर वाले मन सोचिस के काम म जावत हे. शालू ल घर वाले मन ल बताये बर मना कर दे राहै.

प्रभा मन लगा के पढ़ाई-लिखाई करय. गुरुजी घलो खुश रहै.ओखर देवार जाति के कारण ओला बहुत सारा परेशानी के भी सामना करना पड़ै. तभो ले प्रभा हार नइ मानय.

कुछ दिन बाद स्कूल मा बाल दिवस मनाये बर सूचना दे गिस. प्रभा ये सब नइ जानत रिहिसे की ये होथे का ? ओहर गुरु जी ले पूछिस- "गुरुजी बाल दिवस का होथे. ये दिन लइका मन बाल कटवाथे का ?" गुरुजी हाँस दिस. अउ बताइस- "हमर स्वतंत्र भारत देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के जन्मदिन आय; अउ नेहरू जी ह लइका मन ला अब्बड़ मया-दुलार करै, तेखर सेती ये दिन स्कूल मन म बाल दिवस मनाथे अउ लइका मन ला चॉकलेट बाँटथे. हमर स्कूल म ये दिन जेन लइका पहला आय हे तेन ला इनाम घलो देबो. गीत, कविता, भाषण अउ सांस्कृतिक कार्यक्रम घलो होही.

प्रभा के मन मा चले लगिस कि मैं भी कुछ बोलहूँ.

शालू ला बाल दिवस के बारे म बताइस त शालू के कान म जूँ तको नइ रेंगिस.

बालदिवस म खेल-कूद, भाषण के सूचना गाँव भर फइलगे. जम्मो लइका के दाई-ददा मन स्कूल जाय बर तइयार होगे. दूसर दिन बालदिवस के आयोजन होइस त प्रभा के दाई-ददा घलो गे राहय अउ ओखर समाज वाले मन तको गेय राहैं. प्रभा के दाई के नजर प्रभा ऊपर परिस त ओखर बाबू ला कहिथे देखव तो वो हमर प्रभा हरै लगत हे ड्रेस पहिरे हे त चिन्हात घलो नइ हे. प्रभा के ददा के घुस्सा तरवा मा चढ़ गे. ये टूरी के अतेक हिम्मत के बिन बताये स्कूल आवत हे, आज तो घर म घुसे ल नइ दों. ओखर दाई घलो घुस्सा करे लगिस.

स्कूल म खेल-कूद अउ भाषण प्रतियोगिता होइसे. सब मा प्रभा भाग ले राहे. अउ जीतत भी रिहिसे. प्रभा अपन कक्षा मा पहिला आये रिहिसे, तेकर ईनाम के घोषणा उहाँ के बड़े गुरुजी करिस. जब नाम बताइसे त लोगन के पाँव तरी के जमीन खिसक गे. काबर की प्रभा पहला आये रिहिसे. जोरदार ताली बजाइस. सब के सब.गुरुजी बताइस कि आज दुनिया म कोनों ल अशिक्षित नहीं रहना चाहिए. निरंतर प्रयास करना चाहिए. प्रभा के पढ़ई म लगन अउ मेहनत ल देख के मँय आगे पढ़ाये के सोचे हँव. येखर माँ-बाबू जी अउ पूरा देवार समाज ले निवेदन हे कि आप अपन समाज ल शिक्षित करव अउ एक दिन प्रभा ये काम ल पूरा करही. भाषण ल सुन के प्रभा के दाई-ददा अउ पूरा देवार समाज के आँखी म आँसू आगे. समझ म आइस की हमन गलत रेहेन. हमर लइका तो हीरा निकलगे. अउ बहुत खुश हो के ओला गला लगा लिस. सबझन ताली बजाइन. ये सब ल देख के शालू ला अब्बड़ पछतावा होवत रिहिसे कि काश ! महूँ प्रभा के बात मान लेतेव त आज ओखर संग मा खड़े रहितेंव.

*****

शरद ऋतु

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

बीत गई है बरसा ऋतु,
शरद ऋतु अब आई है.
सुबह शाम शीत बरसाने,
ठंड ने पैठ जमाई है.

कोहरा और धुंध बरसते,
शरद् ऋतु के मौसम में.
गरम वस्तुएं, गरम कपड़े,
खूब भाते इस मौसम में.

सुबह-सवेरे तकते रहते,
कब आयेगी धूप सुहानी.

अलाव जलाकर बच्चे सारे,
दादा जी से सुनते कहानी.

रेनकोट और छतरी की,
हो गई अब तो बिदाई.
स्वेटर,कंबल,मफलर,टोपी,
इन सबकी है बारी आई.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

आगे-आगे चंदा,पीछे-पीछे हम.
अब हमको नहीं है, अंधेरे का गम.

चंदा मामा बिल्कुल मेरे आसपास है.
मेरे पूरे राह पर, प्रकाश ही प्रकाश है.

आगे-पीछे होकर रास्ता दिखाता है.
बदली में भले कुछ पल छुप जाता है.

प्रकाश तब राह पर हो जाता है कम.
पर हमको नहीं है, अब अंधेरे का ग़म.

*****

विपरीत परिस्थितियाँ अक्सर हमें नई दिशा की ओर धकेलती हैं

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

अगर हमें कठिन परिस्थितियों से गुजरनी पड़ती है तो सबसे तो पहले हमें उस समय अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए और हमें किसी भी कार्य को हिम्मत से काम लेना चाहिए, अगर आप कोई भी कार्य को धैर्य के साथ करते हैं तो वह कार्य हमेशा सफल होता है चाहे वह कितनी भी कठिनाई क्यों ना हो धैर्य और हिम्मत से किसी भी कार्य को किया जा सकता है कठिन से भी कठिन परिस्थितियों को भी हराया जा सकता है इसीलिए अगर आप किसी भी समस्या परिस्थिति में जूझ रहे हो तो हमें अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए हमें उन परिस्थितियों का मिलकर सामना करना चाहिए, लोगों के असली रंग-असली दोस्त की सतह को देखने में सक्षम है, यद्यपि प्रतिकूल परिस्थितियां दर्दनाक और कठिन हो सकती हैं, उन्हें भेष में आशीर्वाद के रूप में देखा और समझा जा सकता है, चाहे वह कितना भी स्वतंत्र क्यों न हो, आपको लोगों की आवश्यकता होगी और अक्सर सबसे प्रतिकूल समय में किसी के सच्चे दोस्त सामने आएंगे,

प्रतिकूलता को एक प्रतिकूल भाग्य, घटना या भाग्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है; दुर्भाग्य, विपत्ति या संकट द्वारा चिह्नित एक स्थिति, यह अवश्यंभावी है कि हमारे जीवनकाल में, हम विपरीत परिस्थितियों और परिस्थितियों से गुजरेंगे, और इन परिस्थितियों को अनुग्रह और गरिमा के साथ गले लगाना सीखना हमारी व्यक्तिगत यात्राओं के लिए फायदेमंद हो सकता है, चरित्र की समृद्ध जड़ें तब विकसित की जा सकती हैं जब जीवन में आने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों को गले लगाना सीखता है, जब कोई यह पूछना सीखता है कि उनके दुर्भाग्य से कौन से सबक प्राप्त किए जा सकते हैं और हर प्रतिकूलता का एक अलग और अनूठा सबक होता है जिसे केवल तभी सीखा जा सकता है जब विपत्ति को गले लगाया जाए,

अगर हमें कठिन परिस्थितियों से गुजरनी पड़ती है तो सबसे तो पहले हमें उस समय अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए और हमें किसी भी कार्य को हिम्मत से काम लेना चाहिए, अगर आप कोई भी कार्य को धैर्य के साथ करते हैं तो वह कार्य हमेशा सफल होता है चाहे वह कितनी भी कठिनाई क्यों ना हो धैर्य और हिम्मत से किसी भी कार्य को किया जा सकता है कठिन से भी कठिन परिस्थितियों को भी हराया जा सकता है इसीलिए अगर आप किसी भी समस्या परिस्थिति में जूझ रहे हो तो हमें अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए हमें उन परिस्थितियों का मिलकर सामना करना चाहिए, लोगों के असली रंग-असली दोस्त की सतह को देखने में सक्षम है, यद्यपि प्रतिकूल परिस्थितियां दर्दनाक और कठिन हो सकती हैं, उन्हें भेष में आशीर्वाद के रूप में देखा और समझा जा सकता है, चाहे वह कितना भी स्वतंत्र क्यों न हो, आपको लोगों की आवश्यकता होगी और अक्सर सबसे प्रतिकूल समय में किसी के सच्चे दोस्त सामने आएंगे,

जब विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, तो व्यक्ति इस बात से अवगत होता है कि उसके बारे में बैठने और रोने से ज्यादा समाधान नहीं होगा, परिस्थितियों के लिए एक उपाय की तलाश करना रचनात्मक हो जाता है, जीवन में कैसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़े, बिल्कुल न घबराएं, उन परिस्थितियों को चुनौती समझकर निरंतर आगे बढ़ते रहें, समस्याएं सुलझाने का प्रयास करें, धीरे-धीरे परिस्थितियां अनुकूल हो जाएंगी, जो लोग चुनौतियों का सामना करते हैं, वही जीवन में सफल होकर समाज के समक्ष लीडर बनकर सामने आते हैं,

प्रतिकूलता अच्छे भाग्य से बेहतर शिक्षक है, सबसे बड़ी विपत्ति के तहत, अपने लिए और दूसरों के लिए - अच्छा करने की सबसे बड़ी क्षमता मौजूद है, विपरीत परिस्थितियाँ अक्सर हमें नई दिशा की ओर धकेलती हैं, विपत्ति का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह हमें हमारी शालीनता से हिला देती है, यह हमारे सामने बड़ी चुनौतियां लाता है और सिखाता है कि उनसे कैसे निपटना है, यह एक 'वेक-अप कॉल' देता है, तो, हर प्रतिकूलता एक अवसर है न कि अभिशाप या सजा, प्रतिकूलता तेज हवा की तरह है, यह हम सब से आंसू बहाता है, लेकिन जो चीजें फाड़ी नहीं जा सकतीं, हम खुद को वैसे ही देखते हैं जैसे हम वास्तव में हैं, महान लोग विपत्ति को एक अवसर के रूप में देखते हैं, और वे जानते हैं कि वे कुछ सीख सकते हैं, वे कठिनाई का पीछा करते हैं और इसे ठीक करने के लिए अंतहीन काम करते हैं, वे हार नहीं मानते हैं और वे अपने और दूसरों के लिए कठिन समय में सबसे बड़ी क्षमता पैदा करते हैं,

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी जी ने उदाहरण पेश किया, उन्होंने गिरफ्तारी का साहस किया और कई बार भूख से मर गए, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोगों का मनोबल न गिरे और उन्हें तब भी प्रेरित रखा जाए जब अंग्रेज असंतोष और विरोध करने वाले लोगों को बेरहमी से दबा रहे थे, यह नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन की सफलता की कुंजी थी, उन्होंने न केवल विपरीत परिस्थितियों का सामना किया, बल्कि इस समय में उनके कार्य भारत के संघर्ष के क्षणों को परिभाषित कर रहे थे, आज हम जिस स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं, उसका श्रेय प्रतिकूल परिस्थितियों में उसके कार्यों को दिया जा सकता है,

महान लोग विपत्ति को एक अवसर के रूप में देखते हैं, और वे जानते हैं कि वे कुछ सीख सकते हैं, वे कठिनाई का पीछा करते हैं और इसे ठीक करने के लिए अंतहीन काम करते हैं, वे हार नहीं मानते हैं और वे अपने और दूसरों के लिए कठिन समय में सबसे बड़ी क्षमता पैदा करते हैं, जो लोग परिस्थितियों के आगे हार मानकर झुक जाते हैं, वे

जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, कुछ ही दिनों में वे गुमनामी में खो जाते हैं, कोई उन्हें याद नहीं करता, सफल होना हो तो हर मुसीबत का डटकर सामना करो, खूब मेहनत करो, बार-बार असफल होने के बावजूद अपना कर्म करते रहो, एक दिन अवश्य मुकाम हासिल होगा, उन्होंने सचिन तेंदुलकर, अमिताभ बच्चन, धीरूभाई अम्बानी जैसी शख्सियतों का उदाहरण देते हुए कहा कि ये लोग परिस्थितियों से विचलित होने के बजाय उनका सामना करते हुए आगे बढ़े और अपने-अपने क्षेत्र में सफल रहे, यदि हार मानकर बैठ जाते तो कोई उन्हें जानता भी नहीं,

कोई भी व्यक्ति विपत्ति का सामना किए बिना जीवन से नहीं गुजरता; यह जीवन का एक अभिन्न अंग है, विपत्ति को हमारे लिए शिक्षक बनने दो, यह चरित्र का निर्माण करेगा और हमारे दृढ़ संकल्प की परीक्षा लेगा, लेकिन, अंत में, यह एक को मजबूत बना देगा, हमें उन कठिनाइयों से सीखने के लिए समय निकालना सुनिश्चित करना चाहिए जो जीवन हमारे रास्ते भेजना सुनिश्चित करती हैं, अन्यथा, विफलता हमें आगे बढ़ने और इसका उपयोग हमें उच्च आयामों तक ले जाने के बजाय परिभाषित करेगी, डर और आत्म-संदेह के कारण के बजाय इसे एक अवसर के रूप में लें,

*****

मेरी माँ

रचनाकार- कु.विद्या साहू, कक्षा - 5वीं, शा. प्रा. शाला सिल्ली, जिला मुंगेली

आज मेरी माँ मेरे पास नहीं है,
पर लगता है आसपास यहीं है.

सबसे प्यारी माता थी,
मेरी भाग्यविधाता थी.

माँ की ममता अनमोल,
नहीं कोई इसका तोल.

माँ की बातें हमेशा मानो,
भला करेगी इतना जानो.

*****

लालच के फल

रचनाकार- भोलाराम सिन्हा गुरुजी डाभा, धमतरी

एक गाँव मा एक झन मरार डोकरा अउ मरारिन डोकरी रिहिस.दुनो झन बखरी मा साग-भाजी बोंय अउ बेंचे.मरार डोकरा ह रोज बखरी ल राखे बर जाय. इन्द्र भगवान के घोड़ा ह डोकरा के बखरी मा रात के बारा बजे रोज आय अउ साग-भाजी ल चर देय.

मरार डोकरा अपन डोकरी ल बताथे - काकर गरवा ह आथे वो अउ बखरी ल चर के चल देथे.

मेहर पार नइ पावौ.

डोकरी कथे-डोकरा तैंहर आज दिन भर अउ रात भर बखरी मा रबे.डोकरा हव काहत बखरी मा चल देथे.रात के बारा बजे इन्द्र के घोड़ा आइस अउ चरे लागिस,डोकरा उनिस न गुनिस अउ वोकर पुछी ल रब ले धरिस.घोड़ा उड़ावत डोकरा ल इन्द्र लोक ले जथे.

इन्द्र लोक मा बइठे डोकरा ल सैनिक मन पूछथे -ए डोकरा इहां ते काबर आय हस?तब डोकरा कथे-जा तोर मालिक ल बता देबे अन्नी लेय बिना मेहर इहां ले नइ जावव,काबर कि तोर मालिक के घोड़ा हर मोर बखरी ल चर देय हे.

सैनिक,इन्द्र भगवान ल जाके सब बात ल बताथे अउ कथे मृत्यु लोक ले एक झन डोकरा आय हे तेहर अन्नी लेय बिना नइ जावव काहत हे.इन्द्र भगवान कथे -अरे सैनिक, डोकरा ल एक काठा हीरा मोती देके घोड़ा ल पहुंचाय बर भेज दे.

घोड़ा डोकरा ल मृत्यु लोक पहुंचा के चल देथे.डोकरी ह डोकरा के रद्दा देखत रथे,ओतकी बेरा डोकरा घर पहुंचथे,अउ अपन खोली के कोनहा मा काठा के हीरा मोती ल रख देथे.

हीरा मोती चमके लागिस.मरार डोकरा,डोकरी नइ जानै कि येहर हीरा -मोती आय.डोकरी कथे -ए तो चमकत हाबे डोकरा.

डोकरी कथे-जा दू ठन ल धर ले अउ साहूकार के दूकान मा दे देबे कहूं खाये पीये के समान दे दिही ते.साहूकार के दुकान मा डोकरा जाथे अउ देखाथे.साहूकार देख के जिन डारथे कि ये तो हीरा -मोती आय.साहूकार झट ले डोकरा ल पूछथे -काय-काय लागही ग.डोकरा खुश हो के खाय पीये के समान ल मांग डारथे.सामान ल धरके डोकरा ह घर मा आथे अउ डोकरी ल बताथे.डोकरी सुनके खुश हो जथे.अइसने -अइसने दिन बीतत गीस.

एक दिन साहूकार डोकरा ल पुछथे- कस ग तेहा येला कहां पाय हस?

डोकरा ह सब बात ल बता दिस,त साहूकार कथे महूं जातेंव जी तोर संग.डोकरा कथे चल न भइ मोला का हे.

साहूकार ह अपन घरवाली ल बताथे कि मे हा डोकरा संग जावत हंव,एक काठा हीरा -मोती हमरो घर आ जही.साहूकारिन कथे-साहूकार महूं तूंहर संग जातेंव ते दू काठा आ जतिस.ये सब बात ल सुनके साहूकार के बेटा कथे- महूं जातेंव ग तीन काठा आ जही.ओकर बहू कथे-महूं जाहूं तुंहर मन संग,चार काठा आ जही.हमन मंडल हो जबो,पूरा गाँव ल बिसा डारबो.चारो झन डोकरा संग गइन.डोकरा कथे ठीक अधरतिया के बेरा घोड़ा ह आथे,मेहा आही तंह ले रब ले घोड़ा के पुछी ल धरहूं अउ साहूकार मोर गोड़ ल धरबे,तोर गोड़ ल तोर घरवाली धरही,तोर घरवाली के गोड़ ल तोर बेटा धरही,वोकर गोड़ ल तोर बहू धरही.अइसे तइसे करत रात के बारा बजिस अउ घोड़ा आइस तंह ले रब ले डोकरा ह पुछी ल धरिस.येती साहूकार,वोकर घरवाली,वोकर बेटा,वोकर बहू सब एक दूसर के गोड़ ल धरिन.अब घोड़ा ह उड़ाय लगिस साहूकार पुछथे,- तोला देय रिहिस ते काठा कतका बड़ रिहिस डोकरा ?

डोकरा साहूकार के बात ल सुन के कथे-अतका बड़ रिहिस साहूकार कहिके घोड़ा के पुछी ल छोंड़ परिस.सबों के सबों भड़भड़ ले भुइंया मा गिरिस.डोकरा ह साहूकार के उपर लदागे अउ सब झन खाल्हे मा चपकागे.साहूकार के संग वोकर घरवाली,बेटा,बहू सबों झन मर जथे,डोकरा भर बांच जथे.

येकरे सेती केहे गेय हे,फोकट के चीज बस के लालच नइ करना चाही.जादा लालच करई ह जिव के काल होथे.

दार भात चुरगे मोर कहिनी पुरगे

*****

साक्षरता दर बढ़ाएं हम

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

यह देखकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति होती है कि जिस प्रकार समस्त विश्व में अनेक प्रकार के दिवस मनाए जाने का प्रचलन है ,उसी प्रकार शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय को भी राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी ही तन्मयता के साथ मनाया जाता है. सच कहूं तो हर्ष से अधिक मुझे गर्व की अनुभूति होती है यह देखकर कि शिक्षा को देश के महत्वपूर्ण मुद्दों में गिना जाने लगा है ,शिक्षा को लेकर लोगों के मन में जागरूकता उत्पन्न होने लगी है ,उन्हें समझ आने लगा है कि शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय है.शिक्षा की महत्ता क्या होती है, इसे न केवल लोग अब समझ रहे हैं, अपितु शिक्षा के महत्व को अपनाने भी लगे हैं और अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए आगे भी आने लगे हैं. समाज की परवाह न करते हुए वर्तमान में सभी अभिभावक और माता-पिता हर संभव प्रयास करने लगे हैं कि उनके बच्चे शिक्षा जैसे मूलभूत अधिकार से वंचित न रहने पाएं और पढ़ लिख कर वे भी अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर बनें.

और उनका यह सोचना शत प्रतिशत सही भी है, क्योंकि आज के समय में शिक्षा से अछूता रहने का सीधा-साधा मतलब यही है कि जिस समाज में हम रह रहे हैं वह समाज पिछड़ा समाज है एवं अभी भी हम अल्प विकसित देशों की श्रेणी में गिने जाते हैं. यदि हम सचमुच चाहते हैं कि हमारा देश विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आने लगे, तो हमें पूरे राष्ट्र को शिक्षित करना होगा, 100% साक्षरता दर लाने के लिए जी जान से जुड़ना होगा.साथ ही, न केवल अपने बच्चों को अपितु ,अपने आसपास के सभी विद्यालय जाने योग्य बच्चों का विद्यालय ले जाकर दाखिला कराना होगा और उनकी पढ़ाई लिखाई की जिम्मेदारी भी उठानी होगी.

देश का प्रत्येक जन शिक्षित हो, शिक्षा प्राप्त करने की सभी को समान अवसर प्राप्त हों,इसी बात को मद्देनजर रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ष 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस बड़ी ही धूमधाम से पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है.राष्ट्रीय शिक्षा दिवस भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के शिक्षा में योगदान की याद में उनकी जयंती पर अर्थात 11 नवंबर को प्रति वर्ष मनाया जाता है.

इस दिवस को मनाए जाने के पीछे सरकार का ,हम सब का,समूचे भारत का केवल और केवल यही मंतव्य है कि हमारा देश शिक्षित राष्ट्र के साथ साथ स्वस्थ एवम समर्थ राष्ट्र बने. सरकार के साथ-साथ आइए आज हम भी शपथ लेते हैं कि देसी एक्सर्ता दूर करेंगे और जन-जन में शिक्षा के प्रति चेतना भरेंगे.

शिक्षा दिवस मनाएं हम,

साक्षरता दर को बढ़ाएं हम.

देश का कोई भी व्यक्ति शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहने पाए, इसके लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रावधान किए गए हैं. शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सुविधाएं समस्त राष्ट्र वासियों को बिना किसी भेदभाव के दी जा रही हैं,ताकि पूरा राष्ट्र निर्बाध रूप से शिक्षा प्राप्त कर सके और आगे बढ़ सके.

शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता पैदा करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की रैलियों का समय-समय पर आयोजन किया जाता है, विभिन्न प्रकार के शैक्षिक भ्रमण एवं शैक्षणिक सेमिनार और गोष्ठियां भी आयोजित की जाती हैं. इन सब का सिर्फ एक ही उद्देश्य है और वह यह कि देश के सभी बच्चे शिक्षा ग्रहण कर सके और शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार से अछूते न रहने पाएं.

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस प्रतिवर्ष 11 नवंबर को देशभर के सभी सरकारी एवम गैर सरकारी विद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों में पूरे जोश के साथ मनाया जाता है और साथ ही साथ यह संकल्प भी लिया जाता है कि भविष्य में कोई भी जन अशिक्षित नहीं रहेगा और शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे क्रांतिकारी परिवर्तनों को भारतीय सरकार भी अपने विद्यालयों में अपनाएगी और शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरी के लिए प्रतिबद्धता दर्शाएगी,क्योंकि.

पढ़ेगा भारत,तभी तो आगे बढ़ेगा भारत.

*****

बया का घोंसला

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

मई जून का महिना था.सूरज मानो भीषण आग उगल रहा था.घर के सभी लोग दोपहर में विश्राम कर रहे थे.सोनू और पिंकी की आंखों में नींद नहीं थी, तभी सोनू दबे पांव धीरे से बाहर चला गया और उसके पीछे पीछे नन्ही सी पिंकी भी भागती हुई चली गयी.वे दोनों आम के बगीचे में चले गए तो सोनू को बबूल की पतली शाख पर झूलता हुआ एक घोंसला दिखाई दिया.

सोनू-(खुशी से चिल्लाते हुये)"पिंकी वो देखो कितना प्यारा घोंसला है."

पिंकी-"हाँभैया !कितना सुंदर घोंसला है!मुझे वो घोंसला ला दो ना.मुझे अभी चाहिए."(जिद करते हुये)

सोनू उस टहनी को झुका कर घोंसला निकाल लिया.अब वे दोनों उछलते कूदते घर वापस आ गये.

सोनू ने ड्राइंग रूम के एक कोने में घोंसले को लटका दिया.

घर के सभी सदस्य उनकी चहल-कदमी सुनकर जाग गये.

दादाजी-"ये क्या किया तुमने सोनू."(डाँटते हुये)

सोनू-"जी दादा जी!पिंकी बहुत जिद कर रही थी.मुझे घोंसला चाहिये बोलकर रो रही थी."

दादा जी-"देखो बच्चों !बया चिड़िया कितनी लगन और महीन कारीगरी से इस घोंसले का निर्माण की है किंतु सोनू तुमने उसकी गृहस्थी बसने से पहले ही उजाड़ दी."

सोनू(रोनी सूरत बना कर)"अब मैं क्या करुँ दादाजी! जी-बेटा तुम इसे जहाँ से लाये हो वहीं रख कर आ जाओ.चलो मैं भी चलता हूँ."

दादा जी बच्चों के साथ आम के बगीचे में जाते हैं.

वे बबूल की उसी शाख पर उस घोंसले को लगा देते हैं.

थोड़ी देर वे चिड़िया के आने की प्रतीक्षा करने लगे परंतु कोई परिणाम नहीं निकला. चिड़िया नहीं आयी.वह तो किसी दूसरे पेड़ पर घोंसला बनाने के लिये तिनका लाने के लिये उड़ कर चली गयी थी.

सोनू-(रोनी सूरत बनाकर)!दादा जी! बया के घोंसले को तो मैंने बर्बाद कर दिया."

दादाजी-"बेटा बया चिड़िया तो बहादुर चिड़िया है.वो जीवन की कठिन परिस्थितियों को देख कर कभी हार नहीं मानती है. वह तो डट कर उनका सामना करती है.देखो वो चोंच में तिनका लेकर पेड़ की शाख में नया घोंसला बनाने का प्रयास कर रही है."

*****

बाल-कहानी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरिनारायण

बाल दिवस की पूर्व संध्या पर प्रधानपाठक ने ये सूचना प्रेषित किया कि सारे बच्चे सभा हाल में उपस्थित हो जाएं.

अचानक घण्टी बजती है और कुछ ही पल में सभी बच्चे सभा हाल में इकट्ठा हो जाते हैं.

सभा हाल में खूब शोरगुल होती है, तभी अचानक अपने स्टॉफ के साथ प्रधानपाठक का पदार्पण होता है. प्रधानपाठक को देखकर बच्चों को मानो पाला मार जाता हैं, सभी शांत हो जाते हैं.और बच्चे सावधान की मुद्रा में खड़े होकर अपने प्रधानपाठक को शिष्टाचार करते हैं.

तभी प्रधानपाठक ने अपने हाथों में इशारा करते हुए बैठने का निर्देश देते हैं.सभी यथास्थान में बैठ जाते हैं.

जैसे ही वातावरण में नीरवता आती है तभी प्रधानपाठक जी खड़े होते हैं और कुछ जरूरी सूचना प्रसारित करते हैं

ओ कहने लगे-

दिनांक 14 नवम्बर को बाल-दिवस" के शुभ अवसर पर स्कूल में "बाल-दिवस" का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया जाएगा,जिसमें चाचा नेहरू जी के जीवन चरित्र,और प्रेरक प्रसंगों को मंचन किया जाएगा.

यदि कोई बालक-बालिका इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं,ओ अपना नाम लिखा सकते हैं."

तभी अचानक जोरों की कोलाहल शुरू हो जाती है.बच्चे उत्साहित हो जाते हैं.और चिल्लाने लगते हैं-

सर जी मेरा नाम

सर मेरा नाम

कोई कहता है-

मैं भी नाटक में भाग लेना चाहता हूँ.

सर मेरा नाम लिख दीजिए.

सोनू...मोनू....रानू....सानू...!!इस तरह

से बच्चों ने नाम गिनाना शुरू कर दिया.

तभी प्रधानपाठक ने टेबल पर थपौडी पीटते हुए शांति बनाए रखने का हिदायत देते हैं.फिर सभा हाल में शांति छा जाती है.

ठीक ऐसे समय पर प्रधानपाठक की नजर सबसे पीछे बैठे मोहन पर पड़ती है.मोहन चुपचाप सिर झुकाए बैठा हुआ है,किसी से बात नही कर रहा है,और न ही वह "बाल- दिवस" के कार्यक्रम से उत्साहित है.जबकि वह बालक बहुत होनहार था,इस तरह के कार्यक्रम में चढ़-बढ़ कर हिस्सा लेता था.पर इस बार वह बहुत उदास है.

उसकी इस उदासीनता को समझते हुए

मास्टर जी ने पूछा-

क्यो ?क्या हुआ मोहन???

तुम इतने उदास क्यो बैठे हो??

और तुम "बाल-दिवस" के कार्यक्रम में भाग क्यो नही ले रहे??

तभी वह मोहन अपने आप को सम्हाले हुए कहता है-

मास्टर जी हम नेहरू जी के जन्म दिवस को बाल-दिवस" के रूप में मनाते हैं,पर उस नेहरू जी से एकाकार नही हो पाते,हम उनसे मिल नही पाते.कितना अच्छा होता यदि हम उनसे मिल पाते."

मास्टर जी को मानो झटका लग गया. मास्टर जी गहरी सोंच में पड़ गए.

तभी मोहन कहता है-

मास्टर जी क्या हम नेहरू चाचा से मिल सकते हैं?

तब मास्टर जी कहते हैं-

हाँ....हाँ..!!!

क्यो नही!!

मोहन खुश होकर उछल जाता है.

और कहता है-

क्या सच कह रहे हो मास्टर जी!!

हाँ सच कह रहा हूँ!

मास्टर जी ने कहा.

और फिर मास्टर जी अपने स्टॉफ में गए और वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बाल- दिवस के दिन अपने सहयोगी मास्टर जी को गुब्बारे वाला,फल वाला बनने के लिए कहा.और स्वयं चाचा नेहरू बनने की बात स्वीकारी. सभी ने हामी भर दी.

उसके बाद वह बाल दिवस का शुभ दिन भी आया,सभाहाल खचाखच भरा हुआ है.

मोहन सहित सभी बच्चों को चाचा नेहरू के आगमन की प्रतीक्षा थी उनसे मिलना चाहते हैं,और मिल के "बाल-दिवस" में अपना- अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते हैं.

तभी ठीक इसी समय मंच के एक कोने से किसी की आवाज आती है-

गुब्बारे ले लो गुब्बारे!!!

इसी प्रकार-

फल ले लो फल !!सेव,केला,अंगूर,!!

और फिर ऐसे ही समय मे मंच के किसी कोने से चाचा नेहरू का आगमन होता है जो अचकन टोपी लाल गुलाब धारण किये हुए हैं, जो बिल्कुल हुबहू नेहरू जी लग रहें है.

सभी बच्चे चाचा जी!!चाचा जी!!जोर जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया.

तभी वह नेहरू जी कहते हैं:-

लो बच्चों मैं चाचा नेहरू आ गया हूँ!!

मोहन मेरे पास आ जाओ,तुम मुझसे मिलना चाहते थे न!!"

मोहन और सभी बच्चे अचरज में पड़ जाते हैं, और चाचा नेहरू से बिना देरी किए मिलने दौड़ पड़ते हैं.नेहरू जी सभी बच्चों को हृदय से लगा लेते हैं, और पास से गुजर रहे गुब्बारे वाले से गुब्बारा,और फल वाले से फल बांटकर बच्चों को प्रसन्न कर देते हैं.

तभी जिज्ञासावश मोहन पूछता है क्या आप सचमुच में चाचा नेहरू हो??

तब मास्टर जी ने सारा माजरा कह सुनाया

भले ही उनका शरीर नही है लेकिन उनके आदर्श उनके सिद्धान्त,उनका बच्चों के प्रति प्यार आज भी हमारे दिलों-दिमाग पर जिंदा है.मैं नेहरू के रूप में तुम्हारे मास्टर जी हूँ.

तुम उस दिन बहुत उदास थे तुम्हारी उदासी को दूर करने और "बाल-दिवस" को यादगार

बनाने के लिए हमने नेहरू जी का वेश धारण किया, सहयोगी मास्टर साथी,फल वाला और गुब्बारे वाला बना,और हम सभी मंच में धीरे-धीरे आगमन किए, जिसको देखकर तुम सभी बच्चे प्रसन्न हो गए.

इतना सुनकर मोहन और अन्य सभी बच्चे

अपने प्रधानपाठक को चाचा नेहरू और अन्य मास्टर जी को फल गुब्बारे वाला है जानकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं,और फुले नही समाते है.आज उनकी उदासी और भ्रम दूर हो गई.आज उन लोगों ने नेहरू चाचा का साक्षात दर्शन जो कर लिया था.

*****

देने की खुशी

रचनाकार- खोमेश कुमार साहू

मैं बस में चढ़ गया, अंदर भीड़ देखकर मैं परेशान हो गया, बैठने की जगह नहीं थी, तभी, एक व्यक्ति ने अपनी सीट खाली कर दी, खाली सीट के बगल में खड़ा आदमी वहाँ बैठ सकता था, लेकिन इसके बजाय उसने मुझे सीट की पेशकश की,

अगले पड़ाव पर फिर वही काम हुआ, उसने अपनी सीट दूसरे को दे दी, पूरी यात्रा के दौरान 4 बार ऐसा हुआ, वह आदमी एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह लग रहा था, दिन भर काम करने के बाद घर लौट रहा था...

आखिरी पड़ाव पर जब हम सभी उतर गए, मैंने उससे बात की,

हर बार खाली सीट मिलने पर आप किसी अन्य व्यक्ति को अपनी सीट दे रहे थे?

"मैंने बहुत अध्ययन नहीं किया है और न ही मुझे बहुत सी बातें पता हैं, मेरे पास ना तो बहुत पैसा नहीं है, इसलिए मेरे पास किसी को देने के लिए बहुत कुछ नहीं है, इसीलिए मैं यह रोज़ करता हूँ, यह एक ऐसी चीज़ है जो मैं कर सकता हूँ, आसानी से कर सकता हूं, मैंने अपनी सीट आपको दे दी और आपने धन्यवाद कहा, इससे मुझे संतोष हुआ कि मैंने किसी के लिए कुछ किया है,"

मैं इसे दैनिक तौर पर करता हूं और महसूस करता हूं कि मैं किसी तरह से अपना योगदान दे रहा हूं, मैं हर दिन घर में ताज़ा और खुश होकर आता हूं कि मैंने किसी को कुछ दिया, "

मैं अवाक था, दैनिक आधार पर किसी के लिए कुछ करने की चाहत ही अंतिम उपहार है,

इस अजनबी ने मुझे बहुत बड़ी बात सिखाया-

भीतर से अमीर बनना कितना आसान है!

*****

बालदिवस

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

कितना सुंदर देश हमारा,
बालदिवस लगता है प्यारा.

झोली भर खुशियाँ है आती,
अरु फिर सब का मन बहलाती.

जन्म दिवस हर साल मनाते,
उनकी यादों में खो जाते.

पुष्प गुच्छ से जेब सजाते.
सर पर टोपी सभी लगाते.

भोर समय उठ जाते बच्चे,
तन-मन से होते हैं सच्चे.

कितने सारे स्वप्न सजाते,
इक-इक कर साकार बनाते.

चाचा जी की बांटे शिक्षा,
सत्य मार्ग चलने की दीक्षा.

भारत को साकार बनाये,
नये तराने मिलकर गाये.

*****

विश्व दयालुता दिवस

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत आदि अनादि काल से ही भारत एक दयालुता मेहर मेहरबानी परोपकारी पारदर्शिता हितकारी इत्यादि अनेक अद्वितीय मानवीय सिद्धांतों के भावों वाला देश रहा है, जहां आध्यात्मिकता हर भारतीय के डीएनए में समाया हुआ है. इसलिए हम कह सकते हैं कि न केवल हर भारतीय के दिल में दयालुता का भाव गहराइयों तक समाया हुआ है, बल्कि भारत माता की मिट्टी में ही दयालुता के बीजों का भंडार है, जो इस धरती पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में दयालुता रूपी बीज के रूप में बो जाता है जो मानवीय आयु के बढ़ने के साथ-साथ यह दयालुता रूपी वृक्ष भी बड़ा होते जाते अपनी जड़ें मजबूत करते जाता है. हालांकि इसके कुछ अपवाद भी हैं हो सकते हैं. चूंकि 13 नवंबर 2022 को हम विश्व दयालुता दिवस मना रहे हैं, इसलिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मैं उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से हम चर्चा करेंगे आओ दयालुता का भाव अपनाने का संकल्प करें.

हम दयालुता देखें तो, हर साल 13 नवंबर को विश्व दयालुता दिवस मनाया जाता है. इस दिन का मुख्य फोकस प्रत्येक व्यक्ति को सबसे महत्वपूर्ण और अद्वितीय मानव सिद्धांतों में से एक दयालुता को प्रतिबिंबित करने और

उसके अनुसरण का अवसर प्रदान करना है. यह दिन दयालुता के छोटे कार्यों को बढ़ावा देने और फिर लोगों को एक साथ लाने में भी मदद करता है.इसी तरह, दयालुता दिवस पर सभी को एक समान घोषणा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. अपने स्थानीय समुदाय को किताबें, भोजन या कपड़े दान करना जश्न मनाने का एक शानदार तरीका है. यह एकता का दिन है, हालाँकि यह आंदोलन आधिकारिक तौर पर किसी राजनीतिक या धार्मिक आंदोलन से संबद्ध नहीं है, लेकिन अब 28 से अधिक राष्ट्र विश्व दयालुता दिवस में भाग लेते हैं. आंदोलन उम्मीद कर रहा है कि निकट भविष्य में किसी समय संयुक्त राष्ट्र द्वारा आधिकारिक अवकाश बनने के लिए दिन चुना जाएगा. इस दिन का एकमात्र उद्देश्य सकारात्मक शक्ति और दयालुता के सामान्य धागे पर ध्यान केंद्रित करने वाले समुदाय में अच्छे कार्यों को उजागर करना है जो हमें बांधता है. यह सीखने, सिखाने और दूसरों के साथ अपनी दया साझा करने का दिन है. दयालुता को मोटे तौर पर एक परोपकारी और मददगार कार्रवाई के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो स्पष्ट इनाम की उम्मीद के बिना किसी या स्पष्ट दंड से बचने के लिए दूसरे की मदद करने की इच्छा से प्रेरित है बिल्कुल निस्वार्थ है. आज सभी एक कठिन युद्ध लड़ रहे है, सबके प्रति दयावान बनें यह सन्देश याद रखे.प्लैटो द्वारा दिया ये सन्देश हमें याद दिलाता है कि सभी अपने जीवन में किसी चुनौती का सामना कर रहे हैं और यह कि अपने गुस्से और झगड़ों में उलझ कर इस बात को भुला देना बहुत आसान है. ऐसा कोई काम करने से पहलेजिसका किसी व्यक्ति पर नकारात्मक प्रभाव होगा, खुद से एक आसान सवाल करे:क्या यह दयापूर्ण है?. यदि हम इसका सकारात्मक उत्तर नहीं दे पा रहे, तो यह हमको हमारे कृत्य और दृष्टिकोण को तुरंत बदलने की चेतावनी है.

हम दयालु बनने के कुछ तरीकों देखें तो, विनम्र बने: यद्यपि विनम्र होना स्वयं में दयालुता का संकेत नहीं है, पर सच्ची विनम्रता हमारा उन लोगों के प्रति सम्मान दिखाती है जिनसे हम बात कर रहे है. विनम्रता लोगों का ध्यान आकर्षित करने और अपनी बात रखने का एक दयापूर्ण तरीका है. आभारी बनें: वे लोग जो सच में दयालु हैं वे आसानी से आभार व्यक्त कर पाते हैं. वे किसी भी चीज़ को हलके में नहीं लेते और हमेशा मदद करने की लिए लोगों को धन्यवाद देते हैं. वे जानते हैं कि धन्यवाद कैसे कहें और हमारा मतलब भी वो ही हो, वे धन्यवाद पत्र लिखते है, और वे यह मानने में सहज होते हैं कि उनकी मदद की गयी है. वे लोग जो आभारी रहते हैं, वे लोगों को सिर्फ अपना दिन खुशनुमा बनाने के लिए भी धन्यवाद कहतें है, बजाय किसी विशेष काम को पूरा करने के लिए धन्यवाद करना. यदि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति अधिक आभार मानने की आदत बना लेते है, तो हम देखेंगे कि हमारी दयालु होने की क्षमता बढ़ गई है. ज्यादा मुस्कुराइए: मुस्कुराना दयालुता का एक साधारण कृत्य है जिसका स्वयं में बड़ा महत्व है. अजनबियों, या अपने दोस्तों या परिचितों की तरफ देख कर मुस्कुराने की आदत बनाइये. यद्यपि हमको अपने चेहरे पे मुस्कुराहट चिपका कर नहीं घूमना है, किसी की ओर देखकर मुस्कुराने से वह भी हमारी तरफ देखकर मुस्कुराएगा, और उनके दिल में थोड़ी ख़ुशी भी भर देगा. इस प्रकिया में हमारी दयालुता का विकास होगा.

हम मूक जानवरों पर दयालुता को देखें तो, जानवरों और जीवंत संसार से प्रेम करें: जानवरों से प्रेम और पालतू जानवरों की देखभाल दयालुता का क्रियान्वयन है. अन्य प्रजातियों की देख वाल करने के लिए कोई हमको मजबूर नहीं करता, विशेषकर आज के दिनों और युग में जब मानव प्रभुत्व के इतने शक्तिशाली साधन उपलब्ध है. और फिर, भी जानवरों को उनके ही रूप में प्यार करना और उनके प्रति आदरभाव रखना स्वयं में गहन दया का प्रदर्शन

है. ये भी, कि उस संसार के प्रति दयावान होना जो हमारा पालन करके हमें बनाये रखता है, समझदारी है. हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उन्ही तत्वों में जहर न फैलाएं जो हमारे स्वस्थ जीवन को सुनिश्चित करते हैं.

हम दयालुता प्रकट करने की अनेक राहों को देखें तो, किसी अंधे व्यक्ति को रास्ता पार करने में सहायता करें. किसी बुरे वक़्त से गुजर रहे मित्र के लिए खाना बनाए. किसी वृद्धाश्रम जाएं और किसी ऐसे वृद्ध के साथ पत्ते खेल कर एक घंटे के आसपास का समय बिताये जिससे मिलने बहुत लोग न आते हो. अपनी चीजों का दान करें: अपनी कुछ चीजों का दान करना दयालु बनने का एक और तरीका है. अपनी पुरानी चीजों को फेंकने या उन्हें किसी कबाड़ी को सस्ते में बेचने के बजाय, गैर जरूरती चीजों को किसी अच्छे कारण के लिए दान करें. अगर हमारे पास कपडे, किताबें, या अन्य घरेलु सामान अच्छी अवस्था में है, तो उन्हें जमा करके रखने या फेंक देने की बजाय दान करने की आदत बनाना, अपनी दया को दूसरों तक पहुचने का एक बहुत अच्छा तरीका है. अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखे; अगर हम बहुत गुस्से में है तो ऐसे सब्द मत बोले जिससे किसी को ठेस पहुंचे और बाद में हमको भी बुरा लगे. शांत और शीतल बने रहे. अगर किसी का कुछ गिर जाता है, तो उनके लिए उसे उठा दें. या हम साथ में उठा देने का प्रस्ताव भी रख सकते है, चाहे कितनी छोटी या बड़ी चीज़ हो! कुछ चॉकलेट्स और बादाम आदि के पैकेट्स सुपरमार्केट से खरीद कर किसी बेघर व्यक्ति को हम दें सकते हैं. हम गरीब या बेघर व्यक्ति के प्रति दयालु बने, और उन्हें खाना या पैसे दें. अगर कोई वरिष्ठ नागरिक हमारे रास्ते में चल रहा है, तो जल्दी में उन्हें धक्का न दें. या तो माफ़ कीजिये कहे और हम उन्हें उनके गंतव्य तक पहुँचने में सहायता भी कर सकते है. यदि कोई अजनबी हमारी ओर देख कर मुस्कुराता है, हिचकिचाएं नहीं और मुस्कुरा कर जवाब दें; यह दया की एक मुद्रा है. हम जिसके साथ है उससे पूछे, आप कैसे हैं?,प्रतिक्रिया को ध्यान से सुनें और उसके बारे में पूछें. दयालुता में परवाह और सहानुभूति सम्मिलित होते है, और हर कोई सुना जाना चाहता है. दया का कृत्य एक से दूसरे व्यक्ति के साथ बढ़ता जाता है. इसलिए बिना किसी बदले की चाह इसे आगे बढ़ा दें. वैसे भी ये हम तक वापस आएगा. दयालु होना हमको यथार्थवादी और अधिक सकारात्मक भी रखेगा.

ऐसे किसी व्यक्ति का भारी सूटकेस उठाने में मदद करे जो उसे उठा न पा रहा हो. हम सभी को पसंद नहीं कर सकते और ये सामान्य बात है; दुनिया के सबसे अच्छे लोग भी नाराज होतें हैं! इसके बाद भी विनम्र बने रहे.

साथियों दयालुता मुफ्त है, इसलिए रोज सबके साथ इसे बाटें.जब हमको पता लगे कि हमारा मित्र छुट्टियों पर जा रहा है, तो उसके पालतू जानवार की देखभाल करने का प्रस्ताव रखें. अगर हम जानते है कि हमारा पड़ोसी बीमार है, तो किराने बाजार जाते समय उनसे पूछ ले अगर उन्हें कुछ किराने की जरूरत हो.

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व दयालुता दिवस 13 नवंबर 2022 पर विशेष है. आओ दयालुता का भाव अपनाने का संकल्प करें. प्रत्येक व्यक्ति को अद्वितीय मानव सिद्धांतों में से एक दयालुता को प्रतिबिंबित कर अनुसरण करना मानवीय जीवन को सफल बनाने का सटीक मंत्र है.

*****

मुन्ना एक कहानी लिख

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली

मुन्ना एक कहानी लिख,
बचपन की शैतानी लिख.
डरना, शर्माना, हकलाना,
थोड़ी सी नादानी लिख.
तितली के संग हवा हवाई,
चिड़िया का मैदा पानी लिख.
कभी शिकायत, कभी शरारत,
आइसक्रीम दीवानी लिख.
माँ की ममतामयी लोरियाँ,
बापू डाट जुबानी लिख.
दादा-दादी, नाना-नानी,
सबकी मेहरबानी लिख.

सोनपरी के रंग-बिरंगे,
सपने सुरमेदानी लिख.
खाया-पिया खेला मनभर,
बचपन उम्दा लासानी लिख.
चिंता करे जो अगले पल की,
मुन्नी ज़रा सयानी लिख.
पीना गट-गट पानी लिख,
मुन्ना एक कहानी लिख.

*****

बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है?

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

आज के भारतीय परिपेक्ष्य में जब रिश्तों के बदलते समीकरण, एक-दूसरे के प्रति गिरते हुए मूल्य, एक-दूसरे के लिए सम्मान की कमी, हिंसा और किशोर बलात्कार जैसे अपराध चरम पर हैं, ऐसे में सोचने का तरीका बताना, बच्चों के मन में धारणा अनिवार्य हो गया है. यह प्यार, सहानुभूति, देखभाल, कृतज्ञता और नैतिकता के बुनियादी मानवीय मूल्यों के साथ उनके समग्र व्यक्तित्व का पोषण करेगा. वे केवल अपने बारे में नहीं बल्कि दूसरों के बारे में भी सोचेंगे. निश्चित रूप से समाज के प्रति उनका निस्वार्थ रवैया होगा जो इस समाज में एक व्यक्ति को रहने लायक बनाने के लिए मदद करता है.

बाल दिवस आने ही वाला है, यह अपने बचपन की सुखद यादें लाता है. रद्दी किताबों, रंगों और शिल्प से लेकर कहानी की किताबें पढ़ना और सहपाठियों और दोस्तों के साथ उसी पर चर्चा करना. या शायद खेल के मैदान पर शाम को दोस्तों के साथ एक या दो खेल खेलना और स्कूल में पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए होमवर्क और पढ़ाई पूरी करने के लिए लौटना. लेकिन अब ये चीजें काफी बदल गई हैं. बच्चों के लिए स्कूल, ट्यूशन, अतिरिक्त कक्षाओं से लेकर व्यस्त कार्यक्रम है और हाथ में मोबाइल जीवन में सरल चीजों के साथ उनकी मासूमियत को पूरी तरह से दूर कर रहा है.

आज के बच्चे भावी पीढ़ी बनने जा रहे हैं इसलिए उन्हें पढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए. मार्गरेट मीड द्वारा प्रसिद्ध कहावत "बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है" को नवोन्मेषी दिमाग वाले बच्चों को बनाने के लिए अभ्यास में लाने की आवश्यकता है. शिक्षकों, शिक्षकों और माता-पिता को बच्चों को अपने लिए सोचने, उनकी रुचियों का पालन करने और उनकी जिज्ञासाओं को प्रेरित करने वाले विचारों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा.

बेंजामिन ग्रीन कहते हैं, "सबसे बड़ा अत्याचार हमारे बच्चों को एक ऐसी प्रणाली में शामिल करना है जो उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को महत्व नहीं देता है और न ही उनकी अद्वितीय क्षमताओं को प्रोत्साहित करता है." अब

जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित है, वह चाहती है कि बच्चे उस तरह से सोचें जैसे दूसरे सोचते हैं और शिक्षा को और अधिक औद्योगीकृत बनाते हैं. यह केवल उन रोबोटों के मामले में काम करेगा जिन्हें की जाने वाली क्रियाओं के बारे में प्रोग्राम किया गया है. बच्चों की अनूठी प्रतिभाओं को सामने लाने के लिए सबसे पहले इसे बदलना होगा. बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को महत्व देना होगा और उनकी अद्वितीय क्षमताओं को प्रोत्साहित करना होगा.

एक बच्चे को अपने दम पर सीखना, भूलना और फिर से सीखना सिखाया जाना चाहिए. अवधारणा को याद करने और उसे उजागर करने से बच्चों की सोचने की क्षमता नष्ट हो जाएगी, बल्कि अवधारणा को समझने और सार्थक सामग्री का निर्माण करने से उनकी सोचने की क्षमता में वृद्धि होगी. तार्किक सोच, आलोचनात्मक सोच और तर्क ऐसे कौशल हैं जिन्हें बच्चों में कम उम्र में ही विकसित करने की आवश्यकता है. बच्चों को उनकी ताकत और कमजोरियों का एहसास कराना माता-पिता और शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले महत्वपूर्ण कदमों में से एक है. बच्चों की जिज्ञासा को जगाना और उन्हें विभिन्न आयामों से स्वयं सोचने में सक्षम बनाना. इससे वे अपने जीवन में किसी भी स्थिति का सामना करने और संभालने में सक्षम होंगे.

बच्चों का दिमाग नवजात हवा की तरह ताजा होता है. उनके दिमाग में रखी गई कोई भी बात लंबे समय तक चलने वाले ज्ञान का विषय बन जाती है. एक ज्ञान जो समृद्ध होने के लिए आगे की खोज करता है. इस तरह की दी गई सामग्री या विश्वासों के उपयोग से या हम कह सकते हैं कि मूल्यों और गुणों के किसी भी रूप से हम उन्हें गलत और सही के बीच अंतर करने में सक्षम बनाते हैं. यहां पर महत्व आता है. बचपन के दौरान बच्चों का समाजीकरण. यह समाजीकरण किसी भी सामाजिक एजेंसी जैसे परिवार, स्कूल आदि द्वारा हो सकता है.

बच्चे के दिमाग की खाली जगह में "क्या" भरने के बजाय "कैसे" और "क्यों" को प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है, क्योंकि उनके भविष्य के जीवन में किसी भी प्रकार के कार्य के बारे में तर्कसंगत विचार और ईमानदार दृष्टिकोण देना बहुत महत्वपूर्ण है. उन्हें अपनी गलतियों को सुधारने और दूसरों को भी सुधारने में सक्षम करेगा. उदाहरण के लिए एक बच्चा नैतिक मूल्यों की कविता का अच्छी तरह से पाठ कर सकता है लेकिन उन मूल्यों को अपने जीवन में कैसे लागू करना उसके लिए एक कठिन काम होगा. अपने पूरे जीवन भर नहीं सीखते.

आज के भारतीय परिपेक्ष्य में जब रिश्तों के बदलते समीकरण, एक-दूसरे के प्रति गिरते हुए मूल्य, एक-दूसरे के लिए सम्मान की कमी, हिंसा और किशोर बलात्कार जैसे अपराध चरम पर हैं, ऐसे में सोचने का तरीका बताना, बच्चों के मन में धारणा अनिवार्य हो गया है. यह प्यार, सहानुभूति, देखभाल, कृतज्ञता और नैतिकता के बुनियादी मानवीय मूल्यों के साथ उनके समग्र व्यक्तित्व का पोषण करेगा. वे केवल अपने बारे में नहीं बल्कि दूसरों के बारे में भी सोचेंगे. निश्चित रूप से समाज के प्रति उनका निस्वार्थ रवैया होगा जो इस समाज में एक व्यक्ति को रहने लायक बनाने के लिए मदद करता है .

बच्चे के पालन-पोषण की प्रथाओं का उसके बाद के जीवन में बच्चे के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण पर बहुत प्रभाव पड़ता है क्योंकि एक नवजात बच्चा एक कोरा पृष्ठ है जो धीरे-धीरे परिवार, समाज, स्कूल के साथ अनुभव और समाजीकरण से सीखता है. लोकतांत्रिक बच्चे के पालन-पोषण पर जोर देता है जहां बच्चे को तथ्यों, अनुमानों के आधार पर अपनी राय बनाने की स्वतंत्रता दी जाती है, और अपने माता-पिता, समाज के विश्वासों, विचारों, दृष्टिकोणों पर

मजबूर नहीं किया जाता है. उसे अपने स्वयं के विचारों को चुनने, अपने स्वयं के लक्ष्यों को तय करने, महत्व के मामलों पर अपनी स्थिति विकसित करने की स्वतंत्रता दी गई है. इस तरह से एक बच्चे को प्रोत्साहित करने से वह अपनी परम क्षमता तक पहुँचने में सक्षम होगा, कार्रवाई का सर्वोत्तम तरीका तय करेगा, अपनी वैयक्तिकता को खोजने और एक अद्वितीय व्यक्तित्व विकसित करने में सक्षम होगा.

दूसरी ओर, यदि इस स्वतंत्रता को दबा दिया जाता है और वह केवल वही सीखता है जो माता-पिता, शिक्षक आदि द्वारा सिखाया जाता है, तो वह एक निष्क्रिय सदस्य बन जाएगा. वह उन्हीं मान्यताओं, अंधविश्वासों, प्रतिगामी सोच को प्राप्त करेगा और उनमें से किसी की भी वर्तमान समाज या उसके जीवन में प्रासंगिकता पर सवाल नहीं उठाएगा. हो सकता है, वह अपने बच्चों को भी वही अलोकतांत्रिक मूल्य सौंपे और इस प्रकार निर्विवाद रवैये का एक चक्र विकसित होगा जो निश्चित रूप से समाज की प्रगति और विकास में बाधा बनेगा. ऐसा समाज अव्यवहारिक हठधर्मिता, प्रतिगामी सोच से ग्रस्त होगा. इस प्रकार, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि बच्चों को यथासंभव विचार की स्वतंत्रता दी जाए, ताकि वे प्रगतिशील व्यक्ति बन सकें और समाज में अच्छा योगदान दे सकें.

*****

सीला बिनबो

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

शीतहा सीला बिनबो,
चलो उत्ता-धुर्रा.
मिंज के ले लेबो,
गरम-गरम मुर्रा.
बस्ता मा लेके,
स्कूल हम जाबो.
संग संगवारी संग,
मिल बांट के खाबो.

*****

पुस्तकें

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

पुस्तकें गुरु हैं,
मस्तिष्क खोलती हैं.

जिज्ञासा मिटाती हैं,
तनाव को घटाती हैं.

नीरसता में वे,
मधुरस घोलती हैं.

दादी हैं, नानी हैं,
युग की कहानी हैं.

पास जाओ सादर,
सप्रेम बोलती हैं.

दर्पण दिखाती हैं,
कौशल सिखाती हैं.

शंकाएँ दूर कर,
मन को टटोलती हैं.

*****

बन कर चटनी जी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

लाल, पका टमाटर जी.
छोटा, हरा मटर जी.
मिरची, धनिया से मिल कर.
खेले-कूदे हँस-हँस कर.
बन कर दोनों चटनी जी.
चले दिल्ली कटनी जी.

*****

खरगोश और बंदर

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

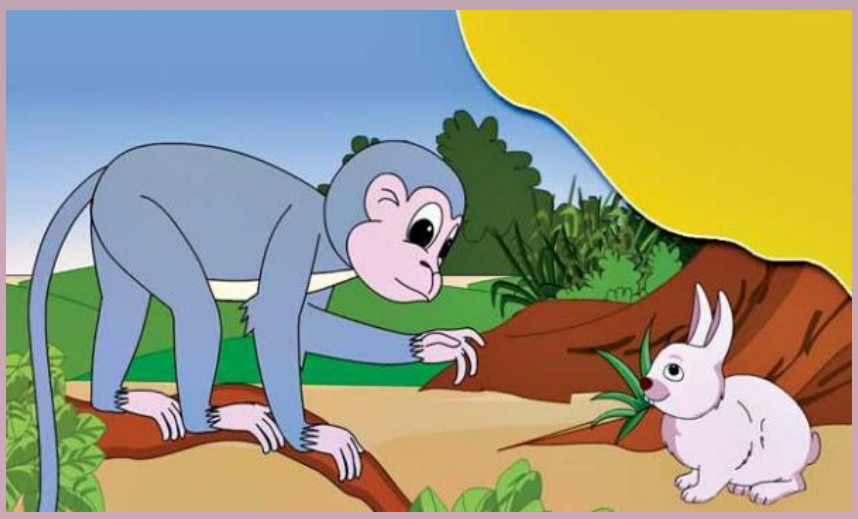

सफेद स्वेटर पहना खरगोश.
टीला पर वह बैठा खामोश.
बंदर एक आया उसके पास.
लग रहा था वह बड़ा उदास.
दिया खरगोश ने उसे स्वेटर.
खुश हुआ बहुत उसे पहनकर.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

अनोखी दौड़

एक गाँव के पास बहुत बड़ा तालाब था.जिसमें बहुत से जीव जंतु रहते थे.उस तालाब का राजा मगरमच्छ था.जिसके निर्देशन में वहाँ का कार्य चलता था. वहाँ एक कछुआ रहता था.जो बहुत ही सरल स्वभाव का था. कुछ दिन पश्चात नए मेहमान के रूप में उसी तालाब में दो हंस भी तैरने आया करते थे. हंस बहुत हसमुख और मिलनसार स्वभाव के थे. इसलिए कछुए और हंस में दोस्ती होते देर नहीं लगी. कुछ ही दिनों में वे बहुत अच्छे दोस्त बन गए. और दोनों हंस भी उसी तालाब में रहने लग गए.हंसों को कछुए का धीरे-धीरे चलना और उसका भोलापन बहुत अच्छा लगता था. हंस बहुत बुद्धिमान भी थे. वे कछुए को अनोखी बातें बताते. ऋषि-मुनियों की कहानियाँ सुनाते. हंस दूर-दूर तक घूमकर आते थे, इसलिए उन्हें सारी दुनिया की बहुत-सी बातें पता होती थी. दूसरी जगहों की अनोखी बातें वो कछुए को बताते. कछुआ मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता. गुज़रते व़क्त के साथ उन तीनों की दोस्ती और गहरी होती गई. वे तीनों अपना कार्य मिलजुल कर करते थे. उन लोगों को किसी दूसरे की आवश्यकता महसूस नहीं होती थी.

उनकी गहरी दोस्ती को देखकर राजा मगरमच्छ के मंत्रियों को ईर्ष्या (जलन) होने लगी. उन्होंने राजा के पास पहुँचकर दोनों हंस एवं कछुआ के बारे में चुगली(बुराई) करने लग गए,उन्होंने कहा-"राजा साहब, यह हंस और कछुआ आपके आदेश का पालन नहीं करते,मुझे लगता है कि वह षड्यंत्र कर आपको राजा के पद से हटाकर, स्वयं राजा

बनकर शासन करना चाहता है.मंत्रियों की बातों को सुनकर राजा मगरमच्छ बिना सोच, परख के उनकी बातों में आ गया और उनके साथ मिलकर उनकी दोस्ती को तोड़ने के लिए उपाय सोचा.

कुछ समय बाद राजा साहब ने एक सभा आयोजित किया गया.जिसमें तालाब में रहने वाले सभी जीव जंतु इस बैठक में शामिल हुए. राजा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा -"साथियों, बहुत दिनों से हमारे बीच कुछ कार्यक्रम नहीं हुआ है. हम चाहते हैं कि हमारे बीच में ऐसी कार्यक्रम हो.जिसे देखकर दुनिया हमें शाबाशी दे. इस कारण हम सब साथी मिलकर निर्णय लिए है कि हमारे बीच में एक 'अनोखी दौड़' का प्रतियोगिता होगा.जिसमें दोनों हंस और कछुआ भाग लेंगे.हमें देखना है कि हंस और कछुआ में ज्यादा कौन बुद्धिमान है.वे अपनी बुद्धि का प्रयोग करके कौन आगे बढ़ सकता है.शर्त है कि इस दौड़ में जो प्रथम स्थान प्राप्त होगा,वह तालाब में रहेगा तथा उसे हमारी सभा में महामंत्री का पद दिया जाएगा.जो पीछे होगा अर्थात दूसरा या तीसरा आएगा उसे इस तालाब से भागना पड़ेगा.राजा मगरमच्छ की बातों को सुनकर दोनों हंस और कछुआ समझ जाते हैं कि राजा हमारे दोस्ती को तोड़ने के लिए यह प्लान किया गया है. नहीं चाहते हुए भी हम लोगों को राजा के आदेश का पालन करना पड़ेगा.

राजा के आदेशानुसार दोनों हंस और कछुआ अनोखी दौड़ में भाग लेने के लिए मैदान में उपस्थित होते हैं राजा द्वारा निर्देश दिया जाता है कि जैसे ही दौड़ प्रारंभ होने की सीटी बजेगी तभी आपको इस तालाब का तीन चक्कर लगाकर वापस पुन:इसी स्थान पर आना होगा.आप दोनों स्वतंत्र है कि आकाश में उड़कर या पानी में तैरते हुए तालाब की तीन चक्कर पूरा करना है.जो पहले आएगा वह इस प्रतियोगिता का विजेता होगा.हारे हुए खिलाड़ी को इस तालाब से बाहर जाना होगा.

कुछ छड़ पश्चात सिटी बजती है, दौड़ प्रारंभ होता है. कछुआ तो पहले से ही अपने मन में हार स्वीकार कर लेता है.लेकिन दोनों हंस बुद्धिमान थे वे दोनों अपने दोस्त कछुआ को खोना नहीं चाहते थे. उन्होंने अपने बुद्धि का प्रयोग करते हुए एक तरीका सोच निकाला. पास में ही पड़ी हुई छड़ी उठाकर लाए और बोले,"मित्र, हम दोनों अपनी चोंच में इस लकड़ी के सिरे पकड़कर एक साथ उड़ेंगे.तुम इस लकड़ी को बीच में से मुंह से थामे रहना अर्थात मुंह में दबाकर रखना.इस प्रकार हम तीनों एक साथ तालाब का चक्कर लगाएंगे."

खरगोश और कछुआ की रोमांचकारी उड़ान शुरू हो गई.पलक झपकते ही आकाश में उड़ने लग गए. कछुए के लिए तो यह जैसे किसी स्वप्न के समान था.वह पूरी जिंदगी भर तालाब के अंदर ही अपना जीवन यापन किया था.आज वह आकाश में उड़ते हुए तालाब का नजारा देखकर वह बहुत खुश था. इधर तीनों को एक साथ उड़ते देखकर तालाब के जीव जंतु एवं राजा मगरमच्छ अचंभित हो जाते हैं. उन लोग कभी सोचा ही नहीं था कि दोनों हंस और कछुआ एक साथ उड़ेगा. उन तीनों ने एक साथ तालाब का तीन चक्कर लगाकर वापस मैदान में आता है. सभी जीव जंतु ताली बजाकर उनका स्वागत करते हैं.राजा अपने द्वारा किए हुए कार्य पर शर्मिंदा होते हैं और उसके बुद्धिमानी को देख कर हंस को कहता है -"आप तीनों एक साथ मैदान में पहुंचे हैं इस कारण तीनों विजेता है आप तीनों को पुरस्कार स्वरूप इस तालाब का महामंत्री बनाता हूँ." सभी जीव जंतु, बुद्धिमान हंस एवं चतुर कछुआ को महामंत्री के रूप में पाकर सभी खुश होते हैं.

बच्चों बुजुर्गों ने कहा है कि -"एकता में बल है"जिस प्रकार से दोनों हंस और कछुए ने अपनी बुद्धिमानी से एक होकर धैर्य पूर्वक परेशानियों का सामना कर सफलता प्राप्त किए.इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में कोई समस्या या परेशानी आए तो उसे सोच समझकर कार्य करना चाहिए. जो भी राजा के मंत्री की तरह किसी का अहित करता है, उसका परिणाम पद से वंचित होकर भुगतना पड़ता है।

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 डों			2 ग				3		4 कु
					5	6 चा			
7	8 ल					9			
			10	11 व					
12 टु				ई		13 री		14 ई	
		15 ह							
	16			17 ने			18		19 म
20 अ		21 स					22		
					23 भु				
		24				25 ता			

बाएँ से दाएँ

1. माँ बमलेश्वरी माता का प्रसिद्ध पहाड़ 3. बिरहोर जन जाति की बोली 7. कल 9. चौकीदार, रखवाला 10. नवेला 12. लड़की 13. रूठने वाले 15. हताश 17. नवरात्रि 20. ऐसे ही 22. सफ़ेद कद्दू 23. बड़ा छेद, दीवाल का बड़ा छेद 24. खट्टा सब्जी 25. परंपरागत नाटक, नृत्य

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 जु	ड़	2 हा		3 ब	त	4 र	की	5 री	
ना		व		रा		ही		स	
	6 ल	य	7 को	र	8 ही		9 बो	हा	य
10 घुं	च		क		11 त	ख	री		
	12 कु	सु	वा		वा		13 स	14 र	हा
	र			15 अ		16 आ		व	
17 गो	हा	18 र		19 म	ड़	वा	20 रा	नी	
ठ		हा		र			21 म	या	22 रु
23 का	24 बा		25 द	ई	हा	न			ग
26 र	ई	हा		या			27 को	क	ड़ा

ऊपर से नीचे

1. तुरई प्रजाति का एक फल 2. गाँव मे ब्याही हुई 4. रेतीला 5. सामूहिक 8. झूठ 11. वैसे ही 12. लड़का 14. गिल्ली 16. माता, मुख्य 18. सब्जी 19. रिश्तेदारी 20. थका हुआ 21. साल